RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 नवम्बर 2023
डाक प्रेषण तिथि : 29 नवम्बर-01 दिसम्बर 2023
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 61 अंक : 16
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 64
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2021-23
Office Posted At R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

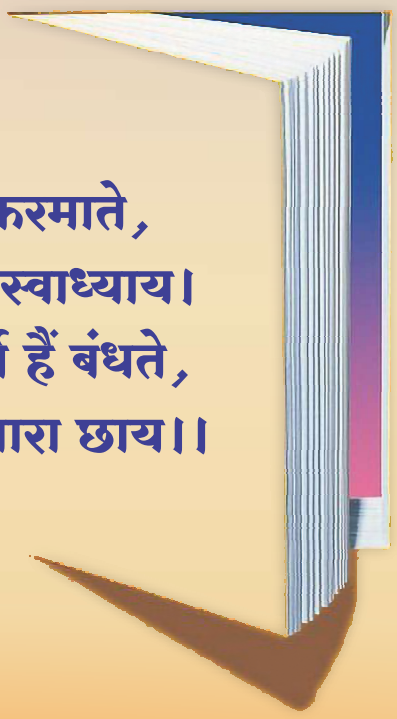

परमागम गुरुवर फरमाते,
स्व का अध्ययन ही स्वाध्याय।
इससे दूर हों तो कर्म हैं बंधते,
धर्म जीवन पर अंधियारा छाय।।

संघ शिखर सदस्य

श्री शान्तिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

श्री रिद्धकरण जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचन्दलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 105289

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128972

स्व. श्री मूलचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचन्द जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचन्द जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपाणी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलियाकलां
MID No. : 128966

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

श्री मोतीलालजी मुणोत
जलगाँव
MID No. 106053

स्व.श्रीमती तारादेवी सुराणा
गंगाशहर
MID No. 116416

श्री राजमलजी चौरड़िया
जयपुर
MID No. 127158

श्री ललितकुमारजी लोढ़ा
मदुरान्तकम्
MID No. 172830

श्री निर्मलकुमारजी भूरा
करीमगंज
MID No. 147618

श्री राजकुमारजी बच्छावत
नेपाल
MID No. 195443

स्व.श्री केशरीमलजी देशलहरा
दुर्ग
MID No. 142535

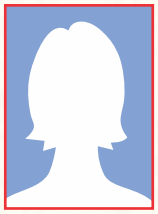
स्व. श्रीमती सुभद्रादेवी पगारिया
सूरत

श्री राजीवजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160544

श्री पुखराजजी मुकिम
जयपुर
MID No. 182624

श्री खूबचन्दजी पारख
राजनांदगाँव
MID No. 141590

श्री विनयजी अब्भाणी
चित्तौड़गढ़
MID No. 107376

श्री शांतिलालजी डागा
कोलकाता
MID No. 188697

श्री प्रकाशचंदजी सूर्या
उज्जैन
MID No. 160559

श्री उत्तमचंदजी रांका
जयपुर
MID No. 111353

श्री रावतमलजी संचेती
गंगाशहर
MID No. 123813

श्री सोहनलालजी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. 135732

श्री अनिलजी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. 127002

श्री जयचंदलालजी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. 114715

श्री शांतिलालजी बच्छावत
सूरत
MID No. 194606

श्री राजमलजी पंवार
कानवन
MID No. 113094

चतुर्थ चरण

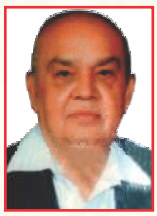
श्री प्रकाशजी कांकरिया
इन्दौर
MID No. 194512

स्व. श्रीमती सरोजदेवी
सुराणा–बेरला
MID No. 195647

श्रीमती कमला उत्तमजी कोठारी
बेंगलुरु
MID No. 112429

श्री बसंतलालजी कटारिया
रायपुर
MID No. 137280

श्री विजयकुमारजी टंच
बदनावर
MID No. 113207

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण * श्री अनिल कुमार जी गोलछा- सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमलादेवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुम्बई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी-उदयपुर * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्री प्रेमचंद जी व्होरा- बदनावर * श्री कमल जी बैद-मुम्बई * श्री सोहनलाल जी रांका-ब्यावर

द्वितीय चरण * श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री पूनमचंद जी भूरा-भीलवाड़ा * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इन्द्राबाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्रीमती ज्ञानकँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भण्डारी-जावरा * श्री दिलीप जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल-कलंगपुर * श्री कँवरलाल जी देशलहरा-गुण्डरदेही * श्रीमती मनोरमादेवी बैद-रायपुर * श्रीमती सुन्दरबाई कोटड़िया-कोण्डागाँव * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री विजय कुमार जी गोलछा (कमलादेवी गोलछा)-बीकानेर

प्रथम चरण * स्व. श्रीमती सूरजादेवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री भागचन्द जी सिंघी-जोधपुर * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी

।। जय गुरू नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरू राम ।।

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

कार्यसमिति बैठक

6-7 जनवरी 2024 (शनिवार-रविवार) बीकानेर (राज.)

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, सह संयोजक, संयोजन मण्डल सदस्य, आंचलिक प्रभारी, कार्यसमिति सदस्यगण एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्षा, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजिका, सह संयोजिका, कार्यसमिति सदस्या एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

आमंत्रित : शीर्ष पदाधिकारी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, प्रवृत्ति संयोजक, कार्यसमिति सदस्यगण, स्थानीय शाखा प्रमुख, लीड मेंबर एवं विशेष आमंत्रित सदस्य

7 जनवरी 2024 (रविवार)

बीकानेर-मारवाड़ अंचल के समस्त क्षेत्रीय संघों के अध्यक्ष/मंत्री, क्षेत्रों के प्रतिनिधि एवं महत्तम महोत्सव प्रमुखों व प्रभारियों का क्षेत्रीय सम्मेलन

* महत्तम महोत्सव कार्यक्रम भी इसी दिन सम्पन्न होगा।

-* निवेदक *-

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

।। जय महावीर ।।

।। जय गुरु नाना ।।

।। जय गुरु राम ।।

लक्ष्य
घर
घर
प्रतिक्रमण
हर
घर
प्रतिक्रमण

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

(महत्तम महोत्सव - मेरा महोत्सव)

कर्मों का शमन – करें शुद्ध प्रतिक्रमण

प्रथम चरण -
15 अक्टूबर - 30 नवंबर

द्वितीय चरण -
01 दिसंबर - 15 जनवरी

तृतीय चरण -
16 जनवरी - 28 फरवरी

महिला समिति
पुनः लेकर
आई है
आपके
लिए
प्रतिक्रमण
के
तीन चरण

Helpline No. : 7974447902

||जय गुरु नाना||
||जय महावीर||
राम चमकते भानु समाना
||जय गुरु राम||
DEVOTE FOR SANGH
1 राष्ट्र संघ कार्य स्वरूप
सत्र 22-24
खिलते ज्ञान पुष्प-9
An Online Quiz Contest
समय
रात्रि 8:30 से 9:00 बजे तक
इस प्रतियोगिता में बहुत सारे आकर्षक पुरस्कार आपका इंतजार कर रहे हैं।
विषय
आरोह
10 दिसम्बर 2023
आरोह
"महत्तम महोत्सव-मेरा महोत्सव"
*प्रतियोगिता की विषय सामग्री शीघ्र ही आपके समक्ष प्रस्तुत की जाएगी।
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ
(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

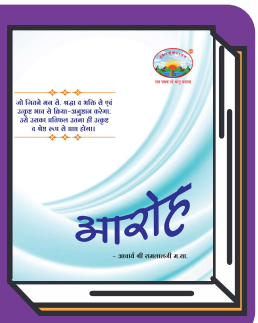

:: अनुक्रमणिका ::

रुक्मिणी विवाह	:	08
'मेरा' से 'मैं' में आ जाना ही स्वाध्याय	:	13
श्रमणोपासक हेडलाइंस	:	16
धम्म सद्धा चालीसा	:	17
गुरुचरण विहार	:	19
विविध समाचार	:	33
भक्ति रस : स्वाध्याय से आत्मिक लाभ	:	41
विविध भेंट मार्फत	:	42
विनम्र श्रद्धांजलि	:	51
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति	:	52
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ	:	57

सुविचार

सत्संगत

सत्य का जो संग होता, सत्संग वही होता।
मुनि संग शुक सीखे, करना सत्कार है।।
देखो सत्संग द्वारा, बदला जीवन सारा।
अर्जुन प्रदेशी नृप, सुलस कुमार है।।
सुलभ अमरपुर, अलभ्य है सत्संग।
सत्संग विवेक का, अटल आधार है।।
वीर कहे गौतम से, त्रिलोक तोयधि माहीं।
डूबते को सत्संग-नैया सुखकार है।।

साभार- वीर कहे गौतम से

चिन्तन

मन संकीर्ण न हो

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

साधु जीवन में चलने वालों को बहुत सावधान रहना चाहिए। यदि किसी के द्वारा उनका अपमान भी हो गया हो, अविनय हो गया हो तो उसे जग जाहिर नहीं करना चाहिए। उसे स्वयं के कर्मों का उदय मानना चाहिए अथवा परीषह उपस्थित हुआ जानकर सहन करना चाहिए। अमुक क्षेत्र के श्रावक ऐसे हैं, वे संतों को मान नहीं देते। किसी एक ही सम्प्रदाय के साधुओं को मान देते हैं। वे गोचरी पानी भी दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं को नहीं बहराते आदि। ऐसी भाषा से लगता है वह साधु अन्तर में दु:खी हो गया है। साधु जीवन में दु:ख का क्या काम? कोई गोचरी बहरावे या न बहरावे उसकी मर्जी। कोई मान दे या न दे उसकी मर्जी। भगवान महावीर शकडाल पुत्र के घर पधारे। उस समय शकडाल पुत्र ने मान-सम्मान नहीं दिया। भगवान महावीर उससे खिन्न नहीं हुए। उन्होंने अपना पुरुषार्थ किया। एक समय आया जब वह भगवान का अन्तेवासी श्रावक बन गया। कोई कैसा ही व्यवहार करे, साधु की मस्ती मंद नहीं पड़नी चाहिए। वह अपनी आत्म-मस्ती में रहे। किसी के द्वारा किया गया कोई भी व्यवहार ढोकर नहीं चले अन्यथा वह उस भार से दबता जाएगा। सबसे उत्तम बात तो यह होगी कि उसके मन में उससे कोई विचार ही पैदा न हो। वह उस व्यवहार को अपने से जोड़े ही नहीं। उसे लगे ही नहीं कि कुछ हुआ है। वह अपने चित्त को वैसा ही बनाए रखे। कदाचित् कभी मन के किसी कोने में वह व्यवहार आ जाए तो उसे वहाँ जमने न दे। यदि एक बार किसी बात को जमाना शुरू कर दिया तो पता नहीं कितनी बातें वहाँ घर कर जाएगी। जैसे रूम में ज्यादा सामान भर दें तो उसमें स्थान संकीर्ण हो जाएगा। वैसे ही मन में ज्यादा बातें जमने लगेंगी तो वह भी संकीर्ण हो जाएगा। उस स्थिति में उसमें दिव्य विचार कैसे पैदा हो पाएँगे? अर्थात् नहीं हो पाएँगे। इसलिए मन में ऐसी वैसी बातों को जमायें नहीं बल्कि मन को स्वस्थ रखा जाए। मन स्वस्थ रहेगा तो साधना को पुष्ट करने का अवसर प्राप्त होगा। साधना में रस पाएगा। परिणाम स्वरूप जिस उद्देश्य से साधना का पथ स्वीकार किया गया वह सफल हो पाएगा।

फाल्गुन कृष्ण 14, मंगलवार, 08.03.2016

साभार- आरोह

रुक्मिणी विवाह

रुक्मिणी की प्रतिज्ञा

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

29-30 अक्टूबर 2023 अंक से आगे....

[redacted] कृष्ण के लिए पटरानी की खोज में नारद जी इधर-उधर भ्रमण करने लगे, परन्तु उनकी दृष्टि में कोई ऐसी कन्या नहीं आई, जो कृष्ण की पटरानी बनने योग्य हो। भ्रमण करते हुए वे विदर्भ देश में आए। वहाँ के कृषकों की कन्याओं को देखकर नारद जी विचारने लगे कि इस देश की कन्याएँ सुंदर होती हैं। यदि यहाँ के राजा के कोई सुंदर कुँवारी कन्या हो तो मेरा भ्रमण सफल हो जाए। पता करने पर नारद जी को मालूम हो गया कि यहाँ के राजा भीम की कन्या रुक्मिणी अप्रतिम सुंदरी है। उन्हें रुक्मिणी के विवाह विषयक भीम और रुक्म का मतभेद भी मालूम हो गया। वे कुण्डिनपुर में राजा भीम के यहाँ आए। भीम ने नारद जी को नमस्कार करके उन्हें योग्य आसन पर बिठाया। नारद जी भीम से कुशलता पूछ रहे थे कि इतने में ही वहाँ रुक्म भी आ गया। नारद जी ने रुक्म को देखकर यह तो समझ लिया कि यह भीम का पुत्र रुक्म है, परन्तु आगे बात चलाने के उद्देश्य से उन्होंने रुक्म की ओर संकेत करते हुए भीम से पूछा– 'राजन् ! ये राजकुमार हैं?'

भीम– हाँ महाराज! सब आपकी कृपा का प्रताप है।

नारद जी– ये अकेले ही हैं या इनके और भाई-बहिन भी हैं?

भीम– इसके अलावा चार पुत्र और एक कन्या है। बस ये छः सन्तानें हैं।

नारद जी– प्रसन्नता की बात है। कन्या का विवाह तो हो गया होगा?

भीम– नहीं महाराज! अब तक तो विवाह नहीं हुआ, कुँवारी ही है।

नारद जी और भीम की बातचीत सुनकर रुक्म ने विचार किया कि ये बाबा जी कहीं बहिन के विवाह का कोई तीसरा प्रस्ताव देकर इस विषय को अधिक न बढ़ा दें। इसलिए इनकी बातचीत यहीं समाप्त कर देनी चाहिए। इस प्रकार विचार कर **रुक्म** ने नारद जी से कहा– 'बहिन के विवाह का टीका तो चढ़ाया जा चुका है और अमुक तिथि को विवाह भी हो जाएगा।'

रुक्म की बात सुनकर नारद जी उसका उद्देश्य समझ गए और मन ही मन कहने लगे कि 'बच्चा, तुम नारदलीला नहीं जानते। इसी से नारद को भुलावा दे रहे हो।' उन्होंने रुक्म से कहा– 'हाँ, विवाह तय हो चुका है। किसके साथ तय हुआ है?'

रुक्म– चन्देरीराज महाराज शिशुपाल के साथ।

नारद जी– शिशुपाल हैं भी प्रतापी राजा।

नारदजी ने प्रकट में तो रुक्म से यों कहा, परन्तु अपने मन में कहने लगे कि 'मूर्ख! पिता और रुक्मिणी की इच्छा के विरुद्ध तूने यह विवाह ठहराया तो है, परन्तु नारद के भी हथकण्डे देख। तेरे मन की मन में ही नहीं रख दी और तुझे रुक्मिणी तथा पिता की इच्छा को पददलित

करने का फल नहीं भुगताया तो मैं नारद ही क्या?'

नारद जी ने भीम से कहा- अच्छा राजन्! जाऊँ, जरा रनवास में भी दर्शन दे आऊँ।

भीम- हाँ महाराज! पधारिए, यह तो बड़ी प्रसन्नता की बात है। नारद भीम से विदा लेकर रनवास में आए। राजा भीम की एक बहिन थी, जो उन दिनों भीम के यहाँ ही रह रही थी। वह ही समय-समय पर रुक्मिणी को कृष्ण की प्रशंसा सुनाया करती थी। उसके द्वारा कृष्ण की प्रशंसा सुनने से ही रुक्मिणी के हृदय में कृष्ण के प्रति प्रेमांकुर फूटा था। शिशुपाल के साथ विवाह ठहरने के कारण रुक्मिणी की जो मानसिक व्यथा थी, उसे भी वह जानती थी। उसने सुना कि नारद जी राजसभा में आए हैं। वहाँ इस प्रकार की बातें हुईं और अब वे रनवास में आ रहे हैं। यह सुनकर भीम की बहिन ने यह विचार किया कि नारद जी से रुक्मिणी के संबंध में सबके सन्मुख बात नहीं हो सकेगी और यदि की भी तो दुष्ट रुक्म क्रुद्ध हो जाएगा। इसलिए नारद जी के साथ एकान्त में ही बातचीत करनी चाहिए। इस प्रकार विचार कर उसने रुक्मिणी को एकान्त स्थान में बिठा दिया और फिर रुक्मिणी को दर्शन देने के बहाने वह नारद जी को भी उसी स्थान पर ले गई।

रुक्मिणी ने नारद जी को प्रणाम किया। रुक्मिणी को देखकर नारद जी अपने मन में कहने लगे कि यह कन्या कृष्ण की पटरानी बनने योग्य है। मैं इतने दिनों से ऐसी ही कन्या की खोज में था। उन्होंने रुक्मिणी से उसके प्रणाम के उत्तर में कहा- 'हे कृष्णवल्लभे! तुम चिरंजीवी होओ।'

नारद जी से कृष्ण का नाम सुनकर रुक्मिणी के हृदय में कृष्णप्रेम की लहर दौड़ गई। उसका मन उसी प्रकार प्रसन्न हो उठा, जिस प्रकार मेघध्वनि को सुनकर मयूर प्रसन्न होता है। वह विचार करने लगी कि मेरा विवाह तो शिशुपाल के साथ ठहरा है, फिर ये ज्ञानी ऋषि 'कृष्णवल्लभा' कहकर आशीर्वाद कैसे दे रहे हैं? क्या ये भूल रहे हैं? बाबा नारद भूलने वाले तो नहीं, इसलिए इस आशीर्वाद में अवश्य ही कोई रहस्य है। क्या रहस्य है यह तो इनसे फिर कभी पूछूँगी। पहले इनका पूरा परिचय तो जान लूँ। जिनकी वल्लभा कहकर इन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया है उनकी प्रशंसा और शिशुपाल की निंदा मैंने समान रूप से सुनी है। इस कारण किसी एक बात पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता। इन ऋषि का तो किसी से कुछ स्वार्थ नहीं, इसलिए ये सच्ची बात ही कहेंगे।

इस प्रकार विचार कर **रुक्मिणी** अपनी बुआ से कहने लगी- 'बुआ! इन ऋषि ने मुझे जिनकी वल्लभा कहकर आशीर्वाद दिया है, वे श्रीकृष्ण **किस देश के किस नगर में रहते हैं? वे किस वंश के हैं? उनकी अवस्था कितनी हैं? उनका रूप-सौन्दर्य कैसा है? वे कैसी ऋद्धि के स्वामी हैं? उनका परिवार कैसा है? उनके माता-पिता कौन हैं? उनके भाई कौन हैं? उनकी बहिन कौन हैं और उनका बल-विक्रम कैसा है?**'

बुआ से रुक्मिणी के प्रश्न सुनकर नारद जी विचारने लगे कि रुक्मिणी केवल सुंदरी ही नहीं है, अपितु बुद्धिमति भी है। पति के विषय में जो बातें जाननी आवश्यक है उनसे ये भली प्रकार परिचित है।

रुक्मिणी की **बुआ** नारद जी से कहने लगी- 'महाराज! रुक्मिणी के प्रश्नों का विस्तृत उत्तर दीजिए। आपने रुक्मिणी को कृष्णवल्लभा तो कह दिया, परन्तु कृष्ण संबंधी बातों से जब तक रुक्मिणी पूरी तरह परिचित नहीं हो जाए, तब तक इसके हृदय को सन्तोष कैसे हो सकता है? इसलिए आप रुक्मिणी के प्रश्नों का समाधान कीजिए।'

नारद जी कहने लगे कि कृष्ण के संबंध में रुक्मिणी के प्रश्न उचित और न्यायपूर्ण हैं। जिसके साथ अपना जीवन बिताना है, जिसको अपना जीवन सौंपना है, उसके विषय में इस प्रकार की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। रुक्मिणी के प्रश्नों से यह भी स्पष्ट है कि

कन्याएँ क्या चाहती हैं और किन बातों से वे अपने को सुखी मानती हैं। मैं रुक्मिणी के प्रत्येक प्रश्न का विस्तार सहित उत्तर देता हूँ।

नारद जी कहने लगे कि सबसे पहले रुक्मिणी ने कृष्ण के देश और नगर का विवरण पूछा है। जीवन के सुख-दु:ख पर नगर और देश का भी प्रभाव पड़ता है। यदि आर्यदेश की लड़की अनार्य देश में दी जाए तो उसे दु:ख होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार देश के कारण होने वाले जलवायु, खानपान और रहन-सहन में सीमातीत तथा अरुचिकर परिवर्तन भी कन्या के लिए दु:खदायी हो जाता है। रुक्मिणी ने यह प्रश्न उचित ही किया है, लेकिन आश्चर्य तो यह है कि रुक्मिणी कृष्ण के नगर, देश से अब तक अपरिचित कैसे है? सौराष्ट्र देश तो बहुत प्रसिद्ध देश है। उत्तम देश माना है। सजल और कृषि प्रधान देश है। वहाँ का जल, पवन भी श्रेष्ठ है। ऐसे सौराष्ट्र देश की द्वारिका नगरी को कौन नहीं जानता? आज द्वारिका जैसी दूसरी नगरी पृथ्वी पर है ही नहीं। द्वारिका पृथ्वी पर साक्षात् इन्द्रपुरी सदृश है। सारी नगरी रत्नमयी है। कृष्ण उसी द्वारिका नगरी के राजा हैं।

रुक्मिणी का **दूसरा प्रश्न** यह है कि कृष्ण किस वंश के हैं? रुक्मिणी का यह प्रश्न भी योग्य ही है। वंश का प्रभाव प्रत्येक बात पर पड़ता है। उच्च वंश का पुरुष दीनहीन अवस्था में भी वंश-मर्यादा की रक्षा करता है और अनुचित कार्य नहीं करता, परन्तु हीन वंश का व्यक्ति अच्छी दशा में भी अनावश्यक ही अनुचित कार्य करता रहता है। जिसकी पत्नी बनना है, उसके वंश के विषय में पत्नी को जान ही लेना चाहिए। कृष्ण यदुवंशी हैं, यदुवंश श्रेष्ठ वंश माना जाता है। यदुवंशियों का आचरण वैसा ही है जैसा श्रेष्ठ क्षत्रियों का होना चाहिए।

रुक्मिणी ने **तीसरा प्रश्न** कृष्ण की आयु के विषय में किया है। कन्याओं के लिए इस प्रश्न का उत्तर पाना और उचित समाधान होना आवश्यक है। कन्याएँ अपने लिए ऐसा पति कदापि नहीं चाहतीं, जो बालक या ढली हुई अवस्था का हो। वे तो युवक पति ही चाहती हैं और यह चाहना है भी स्वाभाविक। कृष्ण न तो वृद्ध हैं, न बालक। वे युवतियों के योग्य युवक हैं अर्थात् कन्याएँ जैसी अवस्था का पति चाहती हैं, कृष्ण उसी अवस्था के हैं।

रुक्मिणी का **चौथा प्रश्न** कृष्ण के रूप-सौन्दर्य के विषय में है। कुरूप पति मिलने पर स्त्रियाँ अपने आपको सुखी नहीं मानतीं, किन्तु दु:खी मानती हैं और ऐसी दशा में पति-पत्नी में प्रेम नहीं रहना स्वाभाविक है। इसलिए रुक्मिणी का यह प्रश्न भी उचित ही है। इस प्रश्न का उत्तर देने के लिए मैं कृष्ण के रूप-सौन्दर्य की प्रशंसा किन शब्दों में करूँ? संक्षेप में यही कहता हूँ कि कृष्ण सौन्दर्य की प्रतिमा ही हैं। उनके शरीर का रंग भी अनुपम है। उनके रूप-सौन्दर्य के कारण लोग उन्हें 'मोहन' कहते हैं। शत्रु भी उनके सौन्दर्य से मोहित हो जाता है।

रुक्मिणी अपने **पाँचवें प्रश्न** द्वारा कृष्ण की ऋद्धि जानना चाहती है। कन्या के लिए इस प्रश्न का समाधान होना भी आवश्यक है। ऋद्धिहीन दरिद्र पति पाने पर कन्या अपने आपको सुखी नहीं मान सकती। यह बात दूसरी है कि आगे किसी दूसरे कारण से ऋद्धिसम्पन्न पति को भी दरिद्र हो जाना पड़े तो उस दशा के लिए पति-पत्नी दोनों की समान जिम्मेदारी है, परन्तु पति रूप स्वीकार करने से पहले तो भावी पति की ऋद्धि के विषय में जान लेना आवश्यक है। रुक्मिणी के इस प्रश्न का उत्तर क्या दूँ? मैं पहले ही कह चुका हूँ कि वे जिस नगरी के राजा हैं, वह नगरी रत्नमयी है। इतना ही नहीं, वे तीन खण्ड पृथ्वी के भावी स्वामी हैं। उनके यहाँ अक्षय कोष भरे हुए हैं। यदि गुण ऋद्धि का पूछती हो तो संसार में कृष्ण के समान राजनीति का ज्ञाता दूसरा है ही नहीं। वे छोटे-बड़े सभी कार्यों में कुशल हैं।

रुक्मिणी का **छठा प्रश्न** यह है कि कृष्ण का परिवार कैसा है? सांसारिक जीवन के लिए परिवार का होना भी आवश्यक है। परिवार नहीं होने से मनुष्य को समय-असमय असहाय अवस्था का अनुभव करना

पड़ता है। रुक्मिणी का यह प्रश्न भी उचित ही है। कृष्ण का परिवार जैसा बढ़ा हुआ है, वैसा बढ़ा हुआ परिवार संसार में किसी और का है ही नहीं। उनके परिवार में 56 कोटि यादव माने जाते हैं।

सातवाँ प्रश्न कृष्ण के माता-पिता के विषय में है। कन्या को अपने सास-ससुर के विषय में भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। सास-ससुर के होने पर कन्या और उसका पति गृहभार से बहुत कुछ बचे रहते हैं और सुखपूर्वक जीवन बिताने का सुयोग मिलता है। रुक्मिणी के भावी सास-ससुर और कृष्ण के माता-पिता के विषय में तो कहना ही क्या है! संसार में वसुदेव जैसा पिता और देवकी जैसी माता दूसरी है ही नहीं। सत्य का पालन वसुदेव ने जिस प्रकार किया है और पतिव्रत धर्म को देवकी ने जैसा पाला है, वैसा कोई दूसरा नहीं पाल सकता। पति के वचन को पूरा करने हेतु एक छोटा-सा आभूषण देने के लिए भी बहुत-सी स्त्रियाँ तैयार नहीं होंगी, परन्तु देवकी ने अपनी सन्तानें भी कंस द्वारा मारे जाने के लिए दे दी। इसी प्रकार कई पुरुष थोड़ी-सी हानि से बचने के लिए या थोड़े-से क्षणिक सुख की आशा से भी वचन भंग कर डालते हैं, परन्तु वसुदेव ने सन्तान की हानि से बचने के लिए भी वचन भंग नहीं किया। ऐसे श्रेष्ठ माता-पिता कृष्ण के सिवाय और किसके हैं? रुक्मिणी ऐसे ही सास-ससुर की पुत्रवधू होगी।

रुक्मिणी ने अपने **आठवें प्रश्न** में कृष्ण के भाई का विवरण पूछा है। संसार में भाई के समान सहायक दूसरा कोई नहीं होता। यद्यपि कभी-कभी भाई भी घोर शत्रु बन जाता है, फिर भी संकट के समय भाई से जो सहायता मिल सकती है, वह सहायता दूसरे से नहीं मिल सकती। कृष्ण के भाई के विषय में तो कहना ही क्या है? उनके भाई बलदेव जी और भगवान अरिष्टनेमि हैं। ऐसे श्रेष्ठ भाई संसार में और किसी के हैं ही नहीं।

रुक्मिणी ने **नवें प्रश्न** द्वारा यह जानना चाहा है कि कृष्ण की बहिन कौन है? पति की बहिन यानी ननंद अपनी भौजाई के लिए सुखदायी भी होती है और दुखदात्री भी। ननंद यदि चाहती है तो भाई-भौजाई और सास-बहू में प्रेम करा देती है और वह चाहती है तो घोर क्लेश भी उत्पन्न कर देती है। साथ ही जिस प्रकार पति के सहायक पति के भाई होते हैं, उसी प्रकार पत्नी की सहायिका ननंद होती है। इसलिए ननंद के विषय में कन्या को जानकारी प्राप्त करना उचित है। कृष्ण की बहिन सुभद्रा है, जो संसार प्रसिद्ध वीर अर्जुन की पत्नी है। ऐसी ननंद पाकर कौन भौजाई अपने भाग्य की सराहना नहीं करेगी?

रुक्मिणी का **अन्तिम प्रश्न** कृष्ण के बल विक्रम के विषय में है। कोई भी कन्या बल विक्रमहीन पति की पत्नी नहीं बनना चाहती। बलवान और विक्रमवान पति पाकर कन्याएँ अपने को बहुत सुखी मानती हैं। उन्हें पति का बल-विक्रम सुनकर प्रसन्नता होती है। कृष्ण के बल-विक्रम के बारे में मैं क्या कहूँ? संसार के समस्त लोगों का बल एक ओर हो, तब भी उनके बल की समता नहीं कर सकता। उन्होंने बचपन में ही कंस जैसे बलवान को मार डाला तो उनके अभी के बल पराक्रम का तो कहना ही क्या? इस प्रकार नारद जी ने रुक्मिणी के समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया।

रुक्मिणी ने अपने प्रश्नों से यह बताया है कि हम कन्याएँ पति के संबंध में क्या-क्या चाहती हैं और नारद जी ने यह व्याख्या कर दी कि रुक्मिणी ने ये प्रश्न किस अभिप्राय से किए?

नारद जी के उत्तर सुनकर रुक्मिणी अपने हृदय में प्रसन्न होती जा रही थी। उसके हृदय का कृष्ण प्रेमांकुर वृद्धि पाता जा रहा था। वह विचार कर रही थी कि कहाँ तो कृष्ण की यह प्रशंसा और कहाँ भाई द्वारा की गई निन्दा। नारद जी के उत्तरों से ज्ञात हुआ कि कृष्ण के विषय में पिता जी ने जो कुछ कहा है, वह बिल्कुल सत्य है।

नारद जी के उत्तर समाप्त होने पर रुक्मिणी की

बुआ रुक्मिणी से कहने लगी- 'कृष्ण के विषय में तेरे प्रश्नों के उत्तर नारद जी ने दिए वे तूने सुने ही हैं। नारद जी कृष्ण की झूठी प्रशंसा कदापि नहीं करेंगे, न किसी कन्या को भुलावे में डालेंगे। भविष्य विषयक इनकी कोई बात मिथ्या नहीं होती। इन्होंने तुझे 'कृष्णवल्लभा' कहा है तो तू अवश्य ही कृष्णवल्लभा होगी। जब तू छोटी थी, तब अतिमुक्तक ऋषि ने भी तेरे विषय में यही कहा था कि यह कृष्ण की पत्नी होगी।'

बुआ की बात सुनकर रुक्मिणी अपनी प्रसन्नता को रोककर बुआ से कहने लगी- 'बुआ! नारद जी तो ऐसा कहते हैं और आप भी यही कहती हो, परन्तु क्या आपको पता नहीं है कि मेरा विवाह दूसरे के साथ तय कर दिया गया है?'

बुआ- हाँ, मुझे मालूम है कि भाई भीम के कथन के विरुद्ध रुक्म ने तेरा विवाह शिशुपाल के साथ ठहराया है और तेरी माता भी रुक्म के कहने में आ गई है। फिर भी तेरी इच्छा के विरुद्ध तेरा विवाह शिशुपाल के साथ कदापि नहीं हो सकता। यदि कन्या अपने निश्चय पर दृढ़ रहे तो संसार की प्रबल से प्रबल शक्ति भी उसका निश्चय भंग नहीं कर सकती। जब तक स्वयं तेरी इच्छा न हो, तब तक न तो शिशुपाल तेरे साथ विवाह कर सकता है, न रुक्म या तेरी माता शिशुपाल के साथ तेरा विवाह करने की इच्छा पूरी कर सकते हैं। यदि तू दृढ़ इच्छाशक्ति को अपनाए तो शिशुपाल को यहाँ से अपमानित होकर ही लौटना पड़ेगा और इस प्रकार किसी कन्या को उसकी इच्छा के विरुद्ध या उसकी इच्छा जाने बिना किसी के भी साथ विवाह करने के लिए मजबूर करने का दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा।

नारद जी- रुक्मिणी! तू घबरा मत, धैर्य रख। अभी तू नारदलीला और कृष्णलीला से अपरिचित है। कृष्ण को देवों का बल प्राप्त है। वे सब कुछ करने में समर्थ हैं।

नारद और बुआ की बातों से रुक्मिणी के हृदय में कृष्ण के प्रति प्रेम दृढ़ हो गया। वह उस कृष्ण-प्रेम को हृदय में ही नहीं रोक सकीं और कहने लगीं कि जिस प्रकार कल्पवृक्ष छोड़कर करील का वृक्ष, चिन्तामणि त्यागकर कंकर, हाथी छोड़कर गधा और कामधेनु छोड़कर भेड़ को कोई नहीं चाहता, उसी प्रकार मैं भी श्रीकृष्ण को छोड़कर किसी दूसरे पुरुष की पत्नी नहीं बन सकती। जिस प्रकार चावल त्यागकर भूसी लेने की, शीतल मीठा जल त्यागकर खारा पानी पीने की, आम छोड़कर इमली खाने की और हर्ष त्यागकर शोक लेने की मूर्खता कोई नहीं करता, उसी प्रकार में भी कृष्ण को नहीं अपनाकर दूसरे पुरुष को अपनाने की मूर्खता नहीं कर सकती। मेरी दृष्टि में कृष्ण यदि केसरी सिंह के समान हैं, तो शिशुपाल गीदड़ के समान हैं। इसलिए हे सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी और अग्नि! मैं तुम सबको साक्षी करके महर्षि नारद के सम्मुख यह प्रतिज्ञा करती हूँ कि मेरे लिए केवल कृष्ण ही पति हैं। कृष्ण के सिवाय संसार के समस्त पुरुष मेरे पिता और भ्राता के समान हैं। मैं यावज्जीवन अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहूँगी। मैं सारे संसार को, यहाँ तक कि अपने प्राणों को भी त्याग सकती हूँ, परन्तु अपनी इस प्रतिज्ञा को कदापि नहीं त्याग सकती। मुझ पर चाहे विपत्तियों का पहाड़ भी टूट पड़े, संसार में मेरा जीवन भार रूप हो जाए और मुझे अपनी समस्त आयु अविवाहित रहकर ही बितानी पड़े, तब भी मैं कृष्ण के सिवाय दूसरे पुरुष की पत्नी नहीं बन सकती।

इस प्रकार की प्रतिज्ञा करती हुई रुक्मिणी का हृदय कृष्ण-प्रेम से उमड़ पड़ा। उसकी आँखों से अश्रुधारा बह चली। नारद जी रुक्मिणी के हृदय का अगाध कृष्ण-प्रेम देखकर अपना उद्देश्य पूरा हुआ समझकर वहाँ से विदा हो गए और विचारने लगे कि रुक्मिणी के हृदय में तो कृष्ण के प्रति प्रेम उत्पन्न किया, परन्तु अब कृष्ण के हृदय में रुक्मिणी के प्रति प्रेम उत्पन्न करना चाहिए, तभी कार्य सिद्ध हो सकता है।

साभार- श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

-क्रमशः श्रमणोपासक

'मेरा' से 'मैं' में आ जाना ही स्वाध्याय

-सुरेश बोरदिया, मुंबई

स्वाध्याय यानी स्व का अध्ययन, अपने आपका अध्ययन। स्व को जानने का सम्यक् पुरुषार्थ ही स्वाध्याय है। स्वाध्याय का उद्देश्य स्व को जान लेने तक ही सीमित नहीं होता बल्कि स्व को प्राप्त करना होता है। स्व को प्राप्त करने के लिए स्व को जान लेना आवश्यक होगा। आचार्य श्री नानेश की चिन्तनमणियों का हम चिन्तन करते ही हैं- ''**हे चैतन्य! तू चिन्तन कर कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ? किसलिए आया हूँ? और क्या कर रहा हूँ?**''

चिन्तनमणियों में प्रयुक्त '**मैं कौन हूँ?**' वाक्य बड़ा अहम् है। मैं कौन हूँ यह एक ऐसा प्रश्न है जो अपने आप से पूछा गया है। प्रश्न संक्षिप्त है, लेकिन जवाब ढूँढ पाना बड़ा ही जटिल है।

महाकवि गेटे एक बार बड़े विचारमग्न होकर उद्यान में टहल रहे थे। उद्यान के चौकीदार ने असमय किसी को उद्यान में टहलते देखा तो दूर से ही आवाज लगाई कि कौन हो तुम? यहाँ क्या कर रहे हो? चौकीदार की आवाज सुनकर गेटे जैसे गहरी निद्रा से जागे हो, ऐसा प्रतीत हुआ। उनके मस्तिष्क में चल रहा विचारों का प्रवाह थम गया। इतने में चौकीदार भी उनके नजदीक पहुँच गया और पुन: वे ही प्रश्न दोहराए।

गेटे ने बड़ी गंभीरता से कहा- ''भाई! मुझे माफ करना। मैं तुम्हारे सवाल का जवाब देने में समर्थ नहीं हूँ, क्योंकि सारी जिंदगी निकल जाने के बावजूद भी मैं अभी तक नहीं जान पाया कि मैं कौन हूँ? दुनिया को देखने में ही सारी जिन्दगी गुजार दी, लेकिन अभी तक अपने आपको नहीं जान पाया।''

गेटे की तरह हम भी अभी तक स्वयं को नहीं देख पाए हैं। स्व से ही अनजान बने हुए हैं। 'मैं कौन हूँ' यह प्रश्न अभी तक अनुत्तरित ही है।

एक अन्य अर्थ में स्वाध्याय का अर्थ सत्साहित्य का अध्ययन भी होता है। सत्साहित्य का अध्ययन भी स्व के लिए ही होता है। निर्जरा के बारह भेदों में एक स्वाध्याय है। अत: स्वाध्याय निश्चित ही कर्मों की निर्जरा में माध्यम बनकर हमें मोक्ष की ओर आगे बढ़ाने में सक्षम होता है। हम अभी तक 'पर' को देखते आए हैं। 'स्व' को देखने की न तो आवश्यकता महसूस हुई होगी और न ही उसके लिए प्रयास किया होगा। दुनिया को देखते आए हैं, लेकिन स्व को? क्या अभी तक हम स्वयं को देख पाए हैं? नहीं। फिर भी आईने के सामने खड़े होकर अपनी छाया तो ताकते ही हैं।

स्वाध्याय भी एक आईना है। आईने में तो हम अपना मुख नहीं सिर्फ उसकी छाया या चित्र ही देख सकते हैं, लेकिन स्वाध्याय रूपी आईने में हम स्वयं को देख पाने में पूर्णतया सक्षम हो सकते हैं। आईने में हम अपनी शक्ल देखते रहते हैं। **उसमें मेरा रूप, मेरा रंग, मेरी सूरत**, बस यही सब देखते आए हैं। कभी 'मैं' की तरफ लक्ष्य ही नहीं बना।

आईने में अपने आपको देखा था भरत चक्रवर्ती ने। प्रारंभ में तो 'मेरी काया' से चिन्तन शुरू हुआ, लेकिन फिर मेरी-मेरी से दूर हटकर 'मैं', 'स्व' का अध्ययन होता गया। जितना जितना मेरा-मेरी से दूर होते गए, उतना ही 'मैं' के नजदीक पहुँचते गए। स्व को ढूँढते गए और उसी स्व के अध्ययन के परिणामस्वरूप केवल ज्ञान, केवल दर्शन की प्राप्ति हो गई। स्व के अध्ययन से, स्वाध्याय से स्व को प्राप्त कर लिया। अपने आपको मोक्ष के नजदीक पहुँचा दिया।

स्व का अध्ययन किया था प्रसन्नचंद्र राजर्षि ने। राजा होकर भी त्यागवृत्ति से युक्त होने से राजर्षि के रूप में पहचाने जाने थे और उसी त्यागवृत्ति से राज्य का भी त्याग कर मुनि बन गए। मेरा को छोड़ मैं को पाने के लिए साधना में लीन हो गए। राजपथ के निकट ही वृक्ष के नीचे इस तरह ध्यानस्थ थे कि मुखमंडल को देखकर ही नतमस्तक हो जाना हर किसी के लिए सहज था।

श्रेणिक महाराज भगवान महावीर के दर्शन के लिए उसी मार्ग से गुजर रहे थे। उनकी दृष्टि उन ध्यानस्थ मुनि पर पड़ी। बड़ी श्रद्धा से वंदन-नमन किया और उनके त्याग व साधना से बड़े ही प्रभावित होकर मन ही मन अनुमोदना, प्रशंसा करने लगे। श्रेणिक के काफिले में चल रहे दो सेवकों ने भी उन मुनि को देखा तो सहसा उनके पैर ठिठक गए। वे अनवरत देखते ही रहे। एक सेवक के मुँह से प्रशंसा रूप शब्द स्वत: ही उच्चरित हो गए- धन्य हैं ये मुनि और धन्य है इनकी बेजोड़ साधना!

यह सुनकर दूसरे सेवक ने कहा- क्या धरा है इनकी ऐसी साधना में? ये तो यहाँ साधु बनकर खड़े हैं और उधर इनके अवयस्क पुत्र राजा पर पड़ौसी राजा ने आक्रमण कर दिया है। दोनों के बीच घमासान युद्ध हो रहा है। संभव है पड़ौसी आक्रमणकारी राजा इनके पुत्र राजा को मारकर उसके राज्य पर अधिकार कर ले।

दोनों सेवकों के बीच चल रहा वार्तालाप ध्यानस्थ प्रसन्नचंद्र मुनि को अच्छी तरह सुनाई दिया और यह वार्तालाप उनके ध्यान को भंग कर देने के लिए पर्याप्त था और वही हुआ। प्रसन्नचंद्र मुनि 'मैं' से 'मेरा' की तरफ मुड़ गए। मुनि के मन में रणभेरियाँ गूँज उठीं। मन साधना से युद्ध की तरफ बढ़ने लगा। आवेश में विचारमग्न हो ललकारने लगे- कौन है मेरे राज्य पर आक्रमण करने वाला? मेरे पुत्र के प्राण संकट में डालने का दुस्साहस किसने किया? मैं उसे छोड़ूँगा नहीं।

अब प्रसन्नचंद्र मुनि 'स्व' को भूलकर 'पर' में आ चुके थे। यद्यपि काया से तो वे उसी ध्यान मुद्रा में स्थित थे, लेकिन मन अब युद्ध की तैयारियों में था। जिस पुत्र, जिस राज्य का त्याग कर चुके थे, अब उसी पुत्र, उसी राज्य की रक्षा के लिए अपनी साधुता, अपनी साधना को भूल गए और मन ही मन युद्ध छेड़ दिया। दोनों हाथों में तीक्ष्ण धारयुक्त तलवारें अपनी क्षमता का पूर्ण प्रदर्शन करने लगी। शत्रु सेना के सैनिकों के सिर धड़ से अलग होकर धरती पर गिरते जा रहे थे, रक्त की नदियाँ बह रही थी।

इधर प्रसन्नचंद्र मुनि भीषण मानसिक संग्राम में रत थे और उधर **श्रेणिक महाराज** भगवान महावीर की सेवा में पहुँच गए। उन्होंने दर्शन-वंदन कर भगवान से निवेदन किया- ''प्रभो! यहाँ आते हुए मार्ग में घोर साधना में लीन एक मुनि के दर्शन हुए। मेरी आपसे एक जिज्ञासा है कि अगर इसी समय वे मुनि काल करें तो कहाँ जाएँगे?''

भगवान ने फरमाया- ''सातवीं नरक में।'' उत्तर सुनकर **श्रेणिक** आश्चर्य से पुन: पूछने लगे- ''हे प्रभो! ऐसे महान साधक मुनि सातवीं नरक में, ऐसा क्यों?''

भगवान- ''इस समय उन मुनि के मन में घनघोर युद्ध चल रहा है। उनके मन में भीषण क्रोध, वैर, क्रूरता आदि भरे हैं। वे भयंकर हिंसा करते हुए शत्रु सेना को क्षत-विक्षत करने में लगे हैं। इस कारण अभी काल करें तो सातवीं नरक में जाएँगे।''

इधर प्रसन्नचंद्र मुनि का मानसिक युद्ध अब चरम स्थिति पर पहुँचता जा रहा था। बस, अब तो शत्रु राजा को ही मारना शेष रह गया है। सिर के वज्रमय मुकुट के प्रहार से इसका भी अंत कर दूँ। ऐसा सोचकर उनका हाथ सिर पर मुकुट के लिए घूमने लगा। उनकी अंगुलियाँ मुण्डित मस्तक पर मुकुट को तलाश रही थी, लेकिन मुकुट कहाँ? प्रसन्नचंद्र मुनि मन ही मन बोल उठे- ''कहाँ है मेरा मुकुट?''

उधर थोड़ी देर बाद **राजा श्रेणिक** ने पुन: पूछा- ''अब कहाँ जाएँगे?''

भगवान ने फरमाया- ''छठी नरक में।''

इधर राजर्षि को सहसा याद आया- ''मुकुट कहाँ से मिलेगा? उसका तो मैं त्याग कर चुका हूँ। मुकुट, राज्य से मेरा अब क्या लेना-देना?'' और चिन्तनमणियाँ

स्वत: ही उच्चारित होने लगीं– ''**मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? किसलिए आया हूँ? क्या कर रहा हूँ?**'' इनके साथ ही प्रसन्नचंद्र राजर्षि 'मेरा' से 'मैं', 'पर' से 'स्व' में लौटने लगे।

इधर **राजा श्रेणिक** की जिज्ञासा बढ़ती गई तो थोड़ी देर में पुन: पूछा– ''प्रभो! अब?''

भगवान के उत्तर पाँचवीं नरक, चौथी नरक से पहली नरक पर पहुँच गए।

श्रेणिक और भगवान के बीच जिज्ञासा एवं समाधान का क्रम चलता रहा। हर समाधान के साथ ही श्रेणिक की उत्सुकता एवं आश्चर्य बढ़ता गया।

इधर **राजर्षि** को ध्यान आया– ''अरे! मैं तो अब साधु हूँ। राजपाट का त्याग करके आया हूँ। स्व को पाने के लिए आया हूँ, लेकिन यह युद्ध! मैं साधु होकर युद्ध कर रहा हूँ। धिक्कार है मुझे जो अपने साधुत्व की साधना को भूल गया। कहाँ तो राग-द्वेष का विसर्जन करने चला था और कहाँ फिर से फँस गया उसी दलदल में। वीतराग अवस्था को पाने के लिए साधु बना था, लेकिन...!''

किसी विद्वान ने कहा है– पुरुषार्थ कभी व्यर्थ नहीं जाता। एक बार की विफलता सदा की विफलता नहीं बन जाती। हथोड़े से कई प्रहार करने के बाद भी पत्थर नहीं टूटता, लेकिन प्रहार जारी रखने पर किसी न किसी चोट से पत्थर अवश्य टूटेगा। हालाँकि पत्थर को तोड़ने वाली चोट अंतिम चोट साबित होगी, लेकिन उसके पहले की चोटें व्यर्थ नहीं गई। उस अंतिम चोट के पहले की सभी चोटों का योगदान अवश्य रहा है।

इधर प्रसन्नचंद्र मुनि अब पूरी तरह से स्व के अध्ययन में लीन हो गए। विपथगामी से सुपथगामी बनने की दिशा में आगे बढ़ते गए। कई चोटें खाने के पश्चात् जिस तरह अंतिम चोट से पत्थर टूटता ही है और शुरुआती चोटें भी व्यर्थ नहीं जाती, वे अपना काम करती ही हैं, उसी प्रकार बस अब अंतिम चोट का ही काम शेष रह गया था।

इधर **श्रेणिक** की उत्सुकता कहाँ विराम लेने वाली थी। वे भगवान से पूछे जा रहे थे– ''प्रभु! अब?''

भगवान– ''सौधर्म और ग्रैवेयक और उससे भी ऊपर सर्वार्थ सिद्ध तक की भूमिका।''

इतने में आकाश में देव दुंदुभियाँ गूँजने लगीं। देवी-देवता पुष्पवृष्टि करते हुए धरती पर आकर प्रसन्नचंद्र मुनि की जय-जयकार करने लगे।

साश्चर्य **श्रेणिक** ने फिर पूछा– ''प्रभो! ये सब क्या हो रहा है?'' **भगवान** ने फरमाया– ''उन मुनि को केवलज्ञान हो गया है। देवी-देवता उनका कैवल्य महोत्सव मनाने आ रहे हैं।''

''प्रभो! कुछ ही समय पहले जो मुनि सातवीं नरक में पहुँचने का परिणाम कर रहे थे, उन्हें केवलज्ञान हो गया? सातवीं नरक से केवलज्ञान के बीच मात्र इतना-सा अन्तर?'' श्रेणिक का आश्चर्य अब चरम पर था।

भगवान ने पुन: फरमाया– ''इसमें आश्चर्य जैसी कोई बात नहीं है। तुमने जब उन मुनि के दर्शन किए थे तब वे साधना में लीन थे। तुम्हारे यहाँ पहुँचते-पहुँचते वे साधना से पतित होकर मानसिक युद्ध में लीन हो गए और फिर पुन: अशुभता से शुभता में आ गए। उस शुभता से केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई।''

यह था प्रसन्नचंद्र राजर्षि के स्वाध्याय का परिणाम। संयम लेकर कितने समय साधना की थी? लेकिन उस अल्पकालिक साधना में ही स्व का अध्ययन कर लिया और मेरा से मैं, पर से स्व में आ गए और स्व को पा भी लिया।

अत: स्वाध्याय हमारे आत्मकल्याण के लिए आवश्यक है। सामायिक, संवर से पौषध तक जैसी भी धर्मक्रियाएँ हम करते हैं, उनमें हम स्वाध्याय को पूर्ण महत्त्व देकर स्व का अध्ययन करें। स्व का अध्ययन करने से हम स्व को अवश्य ही प्राप्त कर सकते हैं।

श्रमणोपासक

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- पूर्णता की ओर अग्रसर नीमच साधना महोत्सव चातुर्मास में आचार्य भगवन् के मुखारविंद से अब तक 86 मासखमण तप का कीर्तिमान। 1 लड़ी पचरंगी तप चारित्रात्माओं में एवं 6 लड़ी पचरंगी तप श्रावक-श्राविकाओं में पूर्ण हुआ। कायक्लेश तप में 432 लोच हो चुके। गुरुचरणों से पावन हुई नीमच की माटी के दर्शन मात्र से जीवन धन्य।
- परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा., श्री हर्षित मुनि जी म.सा. एवं श्री सुमित मुनि जी म.सा. के तेला तप सम्पन्न। साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा. ने मासखमण तप कर अपूर्व आत्मबल का परिचय दिया। चारित्रात्माओं में मासखमण तप गतिमान।
- देश-विदेश से नीमच पधार रहे श्रावक-श्राविकाएँ एवं युवा जीवन निर्माणकारी आध्यात्मिक प्रवचन शृंखला में अमृतवाणी का श्रवण कर अभिभूत।
- मुमुक्षु बहिन सुश्री तमन्ना जी जैन का वरघोड़ा एवं अभिनंदन कार्यक्रम में हर तरफ त्याग एवं समर्पण की चर्चा। वरघोड़ा कार्यक्रम में नीमच शहरवासियों ने मार्ग के दोनों ओर खड़े रहकर मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों का किया भावाभिनंदन। केन्द्रीय एवं स्थानीय संघ की तीनों शाखाओं सहित अनेक संस्थाओं ने मुमुक्षु बहिन का शॉल, माला व अभिनंदन-पत्र से किया बहुमान।
- आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से वीर बाला तमन्ना जी जैन की जैन भागवती दीक्षा 05 नवम्बर 2023 को सम्पन्न। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. हुआ। यह विराट दीक्षा महोत्सव नीमच के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित।
- उपाध्याय प्रवर के आह्वान ''वर्ष 2025 तक गुरुचरणों में 100 दीक्षाएँ सम्पन्न हों'' की पूर्णता हेतु प्रभावना का दौर जारी।
- भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर देशभर में तेला तप की धूम। इस अवसर पर चारित्रात्माओं के सान्निध्य में श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ। वर्ष में कम से कम 5 शास्त्र पढ़ने का शुभ-संकल्प ग्रहण कर अनेक भाई-बहिनों ने जीवन धन्य बनाया। अन्य अनेक त्याग-प्रत्याख्यान हुए।
- दिल्ली हाईकोर्ट के एडवोकेट हनुमान जी डागा एवं म.प्र. शासन के पूर्व गृहमंत्री हिम्मत भाई कोठारी, रतलाम सहित हजारों गुरुभक्तों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस पर 170 आयंबिल एवं 50 तेले पचरंगी आदि तपाराधना से नीमच का कण-कण पावन।

श्रमणोपासक

धम्म सद्धा चालीसा

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

1. गौतम वीर चरण में आये।
वंदन कर यों अर्ज सुनाये।।
2. धम्म सुसद्धा फल फरमावें।
प्रभुवर श्रद्धा फल दर्शावे।।
3. साया-सोक्खेसु रज्जमाणा।
विरज्जइ फल खूब सुहाणा।।
4. गृही-वास ना उसे सुहाता।
महाव्रती बन मन मुस्काता।।
5. तन-मन के दु:खों का छेदन।
निराबाध सुख का संवेदन।।
6. उल्टी नौका सीधी होती।
अन्तर ज्योति विकसित होती।।
7. अटकन टूटी भटकन छूटी।
धर्म-देव से पी ली घूंटी।।
8. शूरों में जो शूर सयाना।
मोह भूप किससे अनजाना।।
9. एक धर्म से वह भय खाता।
दूर भागता पास न आता।।
10. ऐसा धर्म सदा सुखदाई।
नित्य बजे जय की शहनाई।।
11. धर्मी मात कभी ना खाता।
जब भी पाता वह जय पाता।।
12. धर्म रंग से मन हो रंगा।
देख कठौती दिखती गंगा।।
13. धर्म भक्ति है लक्ष्मण रेखा।
करना नहीं कभी अनदेखा।।
14. धर्म भक्ति दुर्गति को टारे।
धर्म-भक्ति भव पार उतारे।।
15. सदा धर्म की करना रक्षा।
उससे होगी निज अभिरक्षा।।
16. धर्म-भक्ति मन सदा सुहावे।
धर्म-भक्ति मन आदर पावे।।
17. सदा धर्म की जय-जय बोलें।
अन्तर का सब कल्मष धो लें।।
18. अन्तर का अघ रूप हटाएं।
धर्म-भक्ति अन्तर प्रकटाएं।।
19. आओ श्रद्धा गीत गुँजाएं।
अन्तर तम को दूर भगाएं।।
20. श्रद्धा से निज को पहचाना।
सत्य धर्म को तब ही जाना।।
21. ज्ञान गंग निर्मल मन बहती।
बहती मन को चंगा रखती।।
22. श्रद्धा से मन सदा बढ़ेगा।
श्रद्धा से मन शिखर चढ़ेगा।।

23. धर्म पताका फहरे फर-फर।
धर्म नगाड़ा बजता दर-दर।।

24. रोग-शोक सब भग-भग जाता।
एक धर्म ही जग जस पाता।।

25. राम-भरत की गौरव गाथा।
गाता मानव नहीं अघाता।।

26. राजमती मन धर्म सुहाया।
रथनेमि मन दृढ़ हो पाया।।

27. जय-जय भद्दा जय-जय नंदा।
सदा अखंड रहे मन श्रद्धा।।

28. श्रद्धा उसकी दिन-दिन विकसे।
धर्म करे जो अन्तर्मन से।।

29. करे धर्म रक्षा जो मानव।
धर्म जीतता हारे दानव।।

30. कामदेव ना डिगता बंदा।
कलुषदेव का छूटा फंदा।।

31. अग्नि शीतल शूल सिंहासन।
सीता सेठ सुदर्शन पावन।।

32. जय जय जय होती है रण में।
मिले सफलता हर क्षण-क्षण में।।

33. महाभयंकर नाग उठाया।
श्रीमती मन भय नहीं आया।।

34. विषधर पुष्पहार बन जाता।
अन्तर मन संगीत गुँजाता।।

35. मदनरया पर संकट आया।
किसने उसको पार लगाया।।

36. सती अंजना धीरज धारे।
रूठे पवन नहीं मन हारे।।

37. आपद में ना शीष झुकाना।
यह हमने अरणक से जाना।।

38. मन चंचल न चपल हो पाए।
श्रद्धा हम मजबूत बनाएं।।

39. वीर प्रभु की जय-जय बोलें।
जय-जय अन्तर भाव संजोलें।।

40. जय हो, जय हो, जय हो, जय हो।
''राम!'' भक्त की सदा विजय हो।।

6 7 0 2

ऋतु-नय-अम्बर-दृग (2076) बरस, आश्विन बद की दूज।
सूर्यनगर शशि शोभता, श्रद्धा हृदय अबूझ।।

श्रद्धा को शुभ भाव से, जो धारे नर-नार।
'राम' सदा प्रसन्न रहे, दुःख जायेगा हार।।
मोह जायेगा हार।।

युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. का साधना महोत्सव चातुर्मास अनेक कीर्तिमानों के साथ पूर्णता की ओर अग्रसर

मुमुक्षु तमन्ना जी जैन चली संयम पथ पर

चातुर्मास में अब तक 86 मासखमण पूर्ण
पचरंगी तप सम्पन्न
अध्यात्म ज्योति पर्व प्रवचन माला की धूम

अपने आपको समर्पित करना बहुत बड़ा चैलेंज है।
-आचार्य श्री रामेश
गुरु के बताए मार्ग पर चलने की लालसा हो।
-उपाध्याय प्रवर

जैन स्थानक, राठौर परिसर, नीमच।

बहुत उपकार गुरुवर का, कभी ना भूल पाएँगे।
शिक्षा उनकी हम जीवन को, सदा उन्नत बनाएँगे।।
गुरु आज्ञा में हर पल, जीवन को आगे बढ़ाएँगे।
ऐसे पूज्य राम गुरुवर के, चरणों में शीश झुकाएँगे।।

जिनके दर्शन को तरसते हैं लाखों नयन ऐसे युगनिर्माता, युगपुरुष, साधना के शिखर, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील सम्प्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-9 का साधना महोत्सव चातुर्मास अनेकानेक कीर्तिमानों, उपलब्धियों एवं ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप की आराधना के साथ पूर्णता की ओर गतिमान है। महापुरुषों के पावन दर्शन एवं जीवन निर्माणकारी प्रवचन श्रृंखला में अमृतवाणी का रसपान करने हेतु नीमच, मालवा, मेवाड़ सहित देश-विदेश अनेक भागों से श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ रही है। अनुपम दीक्षा प्रदाता आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन, उखलाना (टोंक) की जैन भागवती दीक्षा अपूर्व धर्मोल्लास के साथ सम्पन्न हुई।

दीक्षा के एक सप्ताह पश्चात् आपश्री जी की बड़ी दीक्षा (छेदोपस्थापनीय चारित्र) भी सम्पन्न हुई। आध्यात्मिक ज्योति पर्व के अन्तर्गत प्रेरक प्रवचन माला से जन-जन आत्मविभोर हो नतमस्तक हो रहे हैं। 6 लड़ी पचरंगी तप श्रावक-श्राविकाओं ने एवं एक लड़ी पचरंगी तप चारित्रात्माओं ने सम्पन्न कर कर्मनिर्जरा की। आगामी विभिन्न प्रसंगों एवं चातुर्मास की विनतियों का दौर जारी है। अभी तक कायक्लेश तप के अन्तर्गत 432 लोच हो चुके हैं। आचार्य भगवन् के मुखारविन्द से 86 मासखमण के प्रत्याख्यान हो चुके हैं। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, महिला मंडल, बहू मंडल एवं समता युवा संघ, नीमच अहर्निश सेवारत है।

जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने में शक्ति लगे

01 नवम्बर 2023। प्रात:कालीन देव, गुरु, धर्म से ओत-प्रोत प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र, श्रुत आरोहक आदि का ज्ञानार्जन कक्षा में करवाया।

साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने प्रवचन सभा में उपस्थित गुरुभक्तों को अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**धर्म श्रद्धा से मन कोमल हो जाता है और पापभीरूता का भाव जग जाता है। वीतरागी के अलावा कोई सुखी नहीं है। धर्म भाव जागृत हो गया तो कल का इंतजार नहीं करो। उठो, प्रमाद मत करो। कर्मों को ताकत हमने दी है। इसी कारण हम कहते हैं कि याद नहीं होता, समझ नहीं आता आदि। पुरुषार्थ करो और हटाओ उस अंधकार को अर्थात् उस ज्ञान पर आए आवरण को। आत्मा की ताकत जगा लें तो कर्मों को काटने में देर नहीं लगेगी। जन्म-मरण को खत्म करने में हमारी शक्ति लगनी चाहिए।**'' आपश्री जी ने सुनंदा चारित्र का सुंदर विवेचन फरमाया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गृहस्थ जीवन में धर्म करना बहुत कठिन एवं महादुष्कर है। कई साधु-साध्वियों का योग बनता है तब कहीं हमारे नियम पल पाते हैं। हमारे धार्मिक जीवन में साधु-साध्वियों की बहुत बड़ी भूमिका है। जीवन में सत्संग बहुत मुश्किल है। इसलिए जो प्राप्त है उसका पूर्ण उपयोग करें ताकि भविष्य में पुन: उसका योग मिले।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा., साध्वी श्री कुसुमकांता जी म.सा., साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., साध्वी श्री ज्योतिप्रभा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सूर्यमणि श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'आगम रा भण्डार, गुरु राम प्यारा'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

धर्म में पुरुषार्थ करें

02 नवम्बर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना के पश्चात् दशवैकालिक सूत्र, प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक आदि की जानकारी श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दी। धर्मसभा में जनसैलाब की उपस्थिति के मध्य विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''**जिसकी मति श्रेष्ठ होती है उसे सुमति कहते हैं। अस्थिर मति से मन में भय, ऊहापोह, हलचल होती है। मन, वचन, काया का स्थिर रूप सामायिक है। भगवान की आज्ञा पर चलना बहुत टेढ़ी खीर है। भगवान की वाणी तीखी धार है, उस पर चलना सबके बस की बात नहीं है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन करना भगवान की आज्ञा है। हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन, परिग्रह का निषेध किया गया है। हमें सांसारिक कार्यों में नहीं अपितु धर्म में पुरुषार्थ करना है।**'' आचार्य प्रवर ने अपने श्रीमुख से सुनन्दा चारित्र का सारगर्भित वर्णन फरमाते हुए कर्मों की विचित्र दशा का वर्णन फरमाया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आराधना बढ़ाने से पहले हम जो आराधना कर रहे हैं उसे उपयोग में लाएँ। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों ने *'नाता जोड़ लिया गुरु से, नाता जोड़ लिया'* भक्ति गीत प्रस्तुत किया। *'जयवंता जयवंता, आज हमारा मन जयवंता'* की ध्वनि से प्रवचन स्थल गूँज उठा। 94 वर्षीय परम गुरुभक्त धरमचंद जी देरासरिया-देवगढ़ ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशाला शिविर में आशुतोष जी शुक्ल ने शुद्ध हिन्दी उच्चारण व लेखन की विधि बताई।

आप भला तो जग भला

03 नवम्बर 2023। मंगलमय प्रार्थना पश्चात् दशवैकालिक सूत्र, जैन धर्म परिचय, प्रतिक्रमण, श्रुत आरोहक का ज्ञानार्जन श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने कराया। राठौर परिसर में आयोजित प्रवचन सभा में शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतमय वाणी में *'धम्म सद्धा चालीसा'* की पंक्तियों के उच्चारण

धम्म सद्धा हृदय धरूँ, धर्म बने मुझ प्राण।
धर्माराधन नित्य करूँ, धर्म सदा सुख त्राण।।

के साथ फरमाया कि **''धर्म के दो भेद हैं- श्रुत धर्म, जो सिद्धान्त रूप है और चारित्र धर्म, जो क्रिया रूप है। चारित्र धर्म के दो भेद हैं- आगार धर्म और अणगार धर्म। सिद्धान्त के अनुसार हमारा चलना नहीं होगा तो मंजिल नहीं मिलेगी। एक होता है जानना और दूसरा होता है आचरण करना। पहले सदाचार को समझना चाहिए, फिर उसका सम्यक् आचरण करना चाहिए। किसी का बुरा नहीं करना सदाचार का एक बिंदु है। सबका भला करना चाहिए। सबका भला कैसे कर पाएँगे? इसके लिए पूर्वजों ने कहा है कि आप भला जो जग भला। किसी भी जीव की हिंसा नहीं करूँगा। किसी भी जीव को कष्ट नहीं दूँगा। यह एक नियम, संकल्प सारे जीवों को सुरक्षा देने वाला है। सृष्टि के समस्त जीवों का इसमें समावेश हो गया। अच्छा बनने के लिए हमारा मन स्वस्थ बनना चाहिए। ज्ञान आने पर अहंकार नम जाना चाहिए। जिस ज्ञान से विनय बढ़ने के बजाय अहंकार बढ़े तो सचमुच में वह ज्ञान आत्मा के कल्याण वाला नहीं होता है। कभी भी दूसरों को हीन न समझें।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रभु द्वारा बताए गए साधना मार्ग पर चलकर अनेक आत्माओं ने अपना कल्याण किया है। हम भी इस मार्ग पर चलकर आत्मकल्याण करें। साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

आत्मबोध दुर्लभ है

04 नवम्बर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में प्रभु एवं गुरु वंदन हुआ। तत्पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक सूत्र, श्रुत आरोहक आदि का ज्ञानार्जन कराया।

प्रवचन सभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की अमृतवाणी का रसपान कराते हुए तरुण तपस्वी आचार्यदेव ने अपनी दिव्यदेशना में *'धम्म सद्धा चालीसा'* की पंक्तियों के साथ फरमाया कि **''अपने आपको समर्पित करना बहुत बड़ा चैलेंज है। हम अपने अहंकार का सर्वस्व त्याग नहीं कर पाते हैं। धन, परिवार, जमीन-जायदाद का त्याग आसान है किन्तु अपने गर्व, गौरव, अभिमान का त्याग करना कठिन काम है। दुर्लभ क्या है? आत्मबोध सबसे दुर्लभ है। ज्ञान-विज्ञान बहुत सीख सकते हैं, किन्तु आत्मबोध बहुत कठिन है। समर्पण करने का काम दुष्कर ही नहीं अपितु महादुष्कर है। गौतम गणधर जैसे व्यक्ति ही समर्पण कर सकते हैं। भरत जैसा भाई ही अपने आपको समर्पित कर सकता है। मन के भटकाव को दूर**

करना समर्पणा है। जो अपने आपको मिटाने को तैयार है वह समर्पित कहलाने योग्य है। आत्मसमर्पण वाली कसौटी में हम खरे उतर गए तो जीवन धन्य हो जाएगा।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अस्थिर चित्त को स्थिर करने के लिए निरंतर हमारा प्रयास होना चाहिए। मनोवृत्ति ही दु:ख उत्पन्न करती है। साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'गुरु राम पधारे, भगवान पधारे'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन, उखलाना ने अपने भावोद्‌गार में कहा कि नाना गुरु को तो नहीं देखा, पर गुरु राम में उनकी झलक देखी है। वर्तमान में भूतकाल की अभिव्यक्ति को देखा है। गुरु राम के चरणों में भगवान का अहसास हुआ है। साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. ने मुझे ऐसे महान गुरु के समीप पहुँचाया है। माता-पिता के उपकार को भी वंदन करती हूँ। सभी से अविनय आशातना के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

मुमुक्षु बहिन सुश्री तमन्ना जी जैन का ऐतिहासिक वरघोड़ा एवं शानदार अभिनंदन समारोह

पुण्यशाली ने छोड़ा संसार, संयम इन्हें प्यारा लगे।
इन्हें जाना है भव से पार, संयम इन्हें प्यारा लगे।।

युगनिर्माता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार करने जा रही 19 वर्षीय वीरबाला मुमुक्षु सुश्री तमन्ना जी जैन सुपुत्री शुभकरण जी-मनभर जी जैन, उखलाना (टोंक) का श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, बहू मंडल एवं समता युवा संघ, नीमच द्वारा ऐतिहासिक वरघोड़ा व शानदार अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। मार्ग में अनेक स्थानों पर मुमुक्षु बहिन एवं परिजनों का जैन-जैनेतर समाज द्वारा बहुमान किया गया। 'महावीर का दिव्य संदेश, जीओ और जीने दो', 'राम गुरु विराट हैं, दीक्षाओं का ठाठ है', 'हर माँ की बेटी कैसी हो, तमन्ना बहिन जैसी हो' एवं 'जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार' आदि गगनभेदी जयकारों से संपूर्ण मार्ग धर्ममय बना रहा। भाग्येश्वर मंदिर भोजनशाला से प्रारंभ हुआ वरघोड़ा विभिन्न मार्गों से होते हुए राठौर परिसर पहुँचा। जैन-जैनेतर जनों ने भारी संख्या में उपस्थित होकर मुमुक्षु बहिन के आदर्श त्याग की सराहना की।

वरघोड़ा पश्चात् आयोजित अभिनंदन समारोह में मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन एवं वीर माता-पिता व परिजनों का श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ, श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ, समता महिला मंडल, बहू मंडल, समता युवा संघ-नीमच सहित आरुग्गबोहिलाभं एवं अन्य अनेक संस्थाओं ने बहुमान किया।

स्थानीय संघ अध्यक्ष जी ने स्वागत भाषण में कहा कि उभय महापुरुषों की महती कृपा से चातुर्मास के दौरान दीक्षा का यह पावन प्रसंग उपस्थित हुआ है, ये नीमच संघ का अहोभाग्य है। भगवन् की कृपा इसी प्रकार बरसती रहे और दीक्षाओं के ठाठ लगे रहें। संघ मंत्री ने अभिनंदन-पत्र का पठन किया।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति में कहा कि वीरों के मार्ग पर वीर ही आगे बढ़ते हैं। तमन्ना जी जैन रामेश शासन को दैदीप्यमान करें, यही कामना है। उपाध्याय प्रवर के आह्वान पर वर्ष 2025 के अंत तक गुरुचरणों में 100 दीक्षाएँ सम्पन्न हों, इसके लिए हम सभी पुरुषार्थ करते हुए अपनी संतानों को गुरुचरणों में समर्पित करें।

निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी ने कहा कि तमन्ना जी जैन मोहमाया से दूर होकर सभी के लिए वंदनीय,

पूजनीय बनने जा रही है। दीक्षा अंगीकार कर ये वीरबाला आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन चरणों में रहकर जिनशासन-हुक्मशासन को रोशन करेंगी। वीर परिवार एवं नीमच संघ को बहुत-बहुत साधुवाद ज्ञापित करता हूँ।

मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन ने अपने भावों में कहा कि श्रद्धा को हम मजबूत बनाएँ एवं आगे बढ़ाएँ। जब श्रद्धा मजबूत बनेगी तो हम और आगे बढ़ सकेंगे। कहते हैं, संयम मार्ग बहुत ही कठिन है किन्तु कठिनता कायरों के लिए होती है, वीरों के लिए नहीं। यह स्वागत, बहुमान मेरा नहीं अपितु संयम, त्याग, वैराग्य, भगवान महावीर, आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर का है। मैं इसे उन्हीं के पावन चरणों में समर्पित कर रही हूँ। नीमच संघ को संयम सहकार के लिए साधुवाद देती हूँ। आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर के चरणों में संयम पथ पर आगे बढ़ रही हूँ। कषायों एवं विषयों का शमन कर अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करने का आशीर्वाद आप सभी से चाहती हूँ।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने मुमुक्षु बहिन का परिचय प्रस्तुत किया। अनेक वक्ताओं ने दीक्षा के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए मुमुक्षु बहिन के निर्मल संयमी जीवन हेतु मंगलकामनाएँ दीं।

साहित्य समिति के राष्ट्रीय संयोजक ने कहा कि ढूँढार-हाड़ौती क्षेत्र में पूर्वाचार्यों एवं वर्तमान आचार्य भगवन् की सदैव कृपादृष्टि रही है। **इस क्षेत्र का जैनेतर समाज 230 वर्षों से जैन धर्म का पालन कर सात्विक जैन जीवनशैली अपनाकर आदर्श उपस्थित कर रहा है।** मुमुक्षु तमन्ना जी बचपन से ही धर्म के प्रति गहरी रुचि रखती हैं। आप नियमित पाठशाला जाकर ज्ञान प्राप्त कर रही थीं। रात्रि में भाग्येश्वर मंदिर में '**एक शाम प्रभु एवं गुरु भक्ति के नाम**' कार्यक्रम आयोजित किया गया।

प्रशांतमना आचार्य श्री रामेश के मुखारविन्द से मुमुक्षु वीर बाला कु. तमन्ना जी जैन की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न : नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा.

समर्पण करना कठिन कार्य - आचार्य श्री रामेश

05 नवम्बर 2023। अवकाश का दिवस होने से रविवारीय समता शाखा में आचार्य श्री रामेश द्वारा प्रदत्त आयाम से अपना जीवन धन्य बनाने हेतु समता आराधना में श्रद्धालुओं की अपार भीड़ उमड़ पड़ी। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया।

परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में मुमुक्षु वीरबाला कु. तमन्ना जी जैन की जैन भागवती दीक्षा हजारों जनमेदिनी की उपस्थिति में राठौर परिसर में उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई।

विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि "**भगवान के चरणों में अपने आपको समर्पित कर दो। समर्पण करना बहुत कठिन कार्य होता है। समर्पण करने के लिए अपने मन को समर्पित करना होता है। मन के साथ जब मान का संबंध जुड़ जाता है तो मन निरीह हो जाता है। अपने मन को दर्पण के समान विकार रहित बनाना चाहिए तब ही मन भगवान के चरणों में अर्पित हो पाएगा। हमारे मन में राग-द्वेष की आकृतियाँ बनी हुई हैं। जन्मों-जन्मों से बनी ये आकृतियाँ दूर होनी चाहिए। ये आकृतियाँ आत्महित नहीं सोच पातीं। इनके लिए परिवार हित मुख्य बन जाता है। परिवार शमशान तक साथ चलने वाला है। कोई किसी का साथ निभाने वाला नहीं है। सभी शरीर का साथ निभाएँगे, आत्मा का नहीं। आज इनसान, इनसान को नहीं**

समझता। जिसको इनसान की पहचान नहीं, वह भगवान की पहचान क्या करेगा? 230 वर्षों पहले उखलाना क्षेत्र में श्री दौलतराम जी म.सा. के पधारने से परिवर्तन आया था। आज उसी उखलाना गाँव से मुमुक्षु तमन्ना जी दीक्षा के लिए तैयार है। साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. के चातुर्मास में तमन्ना जी के भाव बने। वीर बाला तमन्ना ने ज्ञान-ध्यान सीखा और तमन्ना की तमन्ना बन गई कि मुझे साधु जीवन स्वीकार करना है। आज के प्रसंग से हम प्रेरणा लें कि हमारे भी मन में भी कहीं न कहीं संयम का दीपक जले।''

प्रात: 10:22 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर मुमुक्षु बहिन को नवकार महामंत्र के पंचम पद 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. के नाम की घोषणा आचार्यदेव के श्रीमुख से होते ही संपूर्ण सभा आचार्य भगवन् एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री जी के जय-जयकारों व जयवंता-जयवंता गीत से गूँज उठी।

तमन्ना अब जैन साध्वी • उखलाना की बेटी ने नीमच में आचार्य रामलाल महाराज से दीक्षा ली

तमन्ना का केशलोंच हुआ, आचार्यश्री ने मांगलिक सुनाई, फिर तन्मय श्रीजी के नाम से गूंज उठा पांडाल

भास्कर न्यूज | अलीगढ़

भौतिक सुख-सुविधाएं त्यागकर एक सन्यासी का जीवन बिताने के लिए खुद को समर्पित करने वाली उखलाना गांव की तमन्ना जैन ने रविवार को नीमच (मध्य प्रदेश) में आचार्य रामलाल महाराज के मुखारविन्द से करेमि भन्ते के पाठ के साथ जैन दीक्षा ली। इसके बाद उन्हें नया नाम दिया गया। उन्हें अब महासती श्री तन्मय श्रीजी महाराज के नाम से जाना जाएगा।

दीक्षा समारोह में उखलना गांव, अलीगढ़ कस्बे सहित कई जगहों से जैन समाजबंधु व सर्व समाजबंधुओं ने भी नीमच पहुंचकर कार्यक्रम में भाग लिया। नीमच में दीक्षार्थी तमन्ना का भागेश्वर मंदिर से शोभा यात्रा (वरघोड़ा) रवाना हुआ। दोपहर 2 बजे प्रवचन स्थल (राठौर परिसर) पर पहुंचा, जहां दीक्षार्थी तमन्ना व वीर परिवार का स्वगात एवं अभिनन्दन किया। आचार्य रामलाल महाराज ने मांगलिक सुनाई। ओघा बंधाई एवं केसर छटाई का कार्यक्रम हुआ। शाम को भक्ति संध्या (गुरु भक्ति) कार्यक्रम हुआ।

वागेश्वर मन्दिर में रविवार सुबह हजारों की संख्या में नीमच के राठौर परिसर में लोगों की मौजूदगी में दीक्षार्थी तमन्ना का केश लोचन व वस्त्र परिवर्तन हुआ। सुबह 10 बजे वागेश्वर मन्दिर से महानिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ हुई जो मुख्य बाजार होती हुई प्रवचन स्थल राठौर परिसर पहुंची। जहां आचार्य श्री रामलाल महाराज के मुखारविन्द से करेमि भन्ते के पाठ से दीक्षा दी गई। दीक्षार्थि बहिन तमन्ना का नवीन नामकरण महासती श्री तन्मय श्रीजी महाराज रखा गया। उसके बाद प्रवचन सभा में तन्मय श्रीजी महासती के जयकारे लगाए। इस दीक्षा महोत्सव मे समता संघ के राष्टीय अध्यक्ष नरेन्द्र गान्धी , पूर्व राष्टय अध्यक्ष गोतम राकां, राष्टीय उपाध्यक्ष सुनील बम्ब , नीमच सघं अध्यक्ष शोकीन मुणोत, नीमच सघं मन्त्री अशोक मोगरा , आशिष छाजेड़, महेश नाहटा,उखलाना सघं अध्यक्ष रतन लाल, सघं मन्त्री देशराज मीना, अलीगढ मन्त्री महावीर प्रसाद जैन सहित महाराष्ट्र, बैंगलौर, छतीसगढ, राजस्थान के सभी जिलों से जैन सामाज के लगभग 4500 लोग इस दीक्षा महोत्सव के साक्षी बने।

केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. के करकमलों से सम्पन्न

बीएससी सैकंड ईयर की पढ़ाई छोड़कर वैराग्य का दामन थामा

तमन्ना जैन बीएससी सैकंड ईयर की स्टूडेंट है। उनियारा के कॉलेज में उन्होंने इसी साल सैकंड ईयर में प्रवेश तो लिया, लेकिन पढ़ने नहीं गईं। तमन्ना के चचेरे भाई विनोद ने बताया कि दो-तीन साल पहले गांव में चातुर्मास करने संत आए थे, तब से ही तमन्ना को वैराग्य जाग गया। उसने दीक्षा लेने का संकल्प ले लिया। शुरुआत में पिता शुभकरण, मां मनभरदेवी और परिवार वालों ने काफी समझाया, लेकिन वह नहीं मानी। एक साल पहले परिवार वाले उसकी दीक्षा पर राजी हो गए। तमन्ना की बड़ी बहन गायत्री भी जयपुर में संत-साध्वियों की सेवा में रहती हैं। वे शादीशुदा हैं, लेकिन पति और बेटे के हादसे में निधन के बाद गायत्री अपनी बेटी मुस्कान के साथ साध्वियों की सेवा में चली गईं। गायत्री की दस वर्षीय बेटी मुस्कान को भी जैन धर्म की दीक्षा दिलवाना चाहती हैं।

'वो दिन धन्य होसी, जब बणसूं मैं अणगार' संपूर्ण सभा इन स्वरों से गूँजने लगी। कइयों के मन में वैराग्य की हिलोरें उठने लगीं।

आचार्य भगवन् ने प्रात: 10:15 बजे दीक्षा विधि प्रारंभ की। ममुक्षु बहिन तमन्ना जी जैन ने जाने-अनजाने में हुई भूलों के लिए सभी से क्षमायाचना की। आचार्यदेव ने मुमुक्षु बहिन से दीक्षा की तैयारी के बारे पूछा तो मुमुक्षु बहिन ने शीघ्र ही दीक्षा प्रदान कर जीवन कृतार्थ करने के भाव गुरुचरणों में रखे। आचार्य भगवन् ने संपूर्ण सभा से जैसे ही दीक्षा की अनुमति के लिए पूछा तो तुरन्त ही सभी ने अपने दोनों हाथ उठाकर दीक्षा हेतु अनुमोदना प्रदान कर कर्मनिर्जरा का लाभ लिया। प्रात: 10:22 बजे आचार्य भगवन् ने तीन बार करेमि भंते के पाठ से संपूर्ण सावद्य पापकारी क्रियाओं का त्याग करवाकर मुमुक्षु बहिन को नवकार महामंत्र के पंचम पद 'नमो लोए सव्वसाहूणं' पर आरूढ़ किया। नवीन नामकरण नवदीक्षिता साध्वी श्री तन्मय श्री जी म.सा. के नाम की घोषणा आचार्यदेव के श्रीमुख से होते ही संपूर्ण सभा आचार्य भगवन् एवं नवदीक्षिता साध्वी श्री जी के जय-जयकारों व जयवंता-जयवंता गीत से गूँज उठी। केशलुंचन का कार्य शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. के करकमलों से सम्पन्न हुआ।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा. ने *'संयम फूलों का ताज नहीं, काँटों भरी डगर है'* भाव गीत फरमाया। मुमुक्षु बहिन तमन्ना जी के साहस की जितनी सराहना की जाए कम है।

साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि वैराग्य तीन प्रकार का होता है- 1. शरीर से, 2. मन से और 3. आत्मा से। संसार बढ़ाने की मूल जड़ कषाय हैं। उभय महापुरुषों की कृपा से साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. का सान्निध्य पाकर मुमुक्षु तमन्ना जी की वैराग्य चेतना जागृत हुई और वे निरंतर आगे बढ़ती गईं।

श्री गगन मुनि जी म.सा. ने भाव गीत *'अपने जीवन के जौहरी स्वयं बनें, क्या पता ये मौका मिले न मिले'* प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संसार मेले के समान है। इसमें मन आकर्षित होता है। संयम से ही मुक्ति मिलेगी।

साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सम्पदा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने *'संयम जीवन का कोई मोल नहीं'* गीत प्रस्तुत कर सभी को भावविभोर कर दिया। सभा में उपस्थित भाई-बहिनों ने दीक्षा में अंतराय नहीं देने का संकल्प लिया। आरुग्गबोहिलाभं की बहिनों एवं समता बालिका मंडल, नीमच ने संयम व गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

संघ मंत्री व महेश नाहटा ने उभय महापुरुषों के अतिशय का विवेचन किया। व्यसनमुक्ति व पटाखा त्याग के संकल्प भी हुए। सभा में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, विधायक दिलीप सिंह जी परिहार, वीर दादा नाहरसिंह जी राठौर, स्थानीय संघ अध्यक्ष जी सहित नीमच, सवाई माधोपुर, अलीगढ़, रामपुरा, उखलाना, मेवाड़, मालवा, मारवाड़, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, दक्षिण, पूर्वांचल, दिल्ली आदि अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु धर्मप्रेमी भाई-बहिन हजारों की संख्या में उपस्थित थे। यह विराट दीक्षा महोत्सव नीमच-मालवा के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित हो गया है।

शालिभद्र की रिद्धि

06 नवम्बर 2023। भोर की मंगल बेला में प्रार्थना की मधुर स्वर लहरी से संपूर्ण वातावरण धर्ममय बन गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया। अध्यात्म ज्योति पर्व के अंतर्गत कृपानिधि आचार्य भगवन् ने राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में गुरुभक्तों को अपने अमृतवचनों में '**शालिभद्र पुण्यवान, बड़े गुणवान, सुनी जिनवाणी, जिनकी है अमर कहानी**'

आगम वचन प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि **''शालिभद्र की रिद्धि' खाताबही में लिखते हैं। अन्य सभी को धन चाहिए किन्तु मुनिजनों के गुणों का वर्णन आप से नहीं हो रहा है। गुणीजनों का कीर्तन करने से पुण्य का प्रसाद मिलता है। इससे आत्मा तृप्त होती है। मन शांति को प्राप्त करता है। हमें जिनेश्वर देवों की वाणी सुनने को मिल रही है, यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। शालिभद्र को अपार वैभव, प्रशान्त मन प्राप्त हुआ। संगम के भव में मासखमण के तपस्वी को शुभ भावों से सुपात्रदान दिया। पुण्यबंध भावों से प्राप्त होता है, न कि बढ़िया से बढ़िया वस्तु बहराने से। शालिभद्र की पुण्यवानी अमर कहानी बन गई। शालिभद्र के लिए एक समस्या खड़ी हुई, मेरे ऊपर नाथ, अब तक नाथ-नाथ पुकारते थे। भगवान महावीर ने इस गुत्थी को सुलझाया। जिसको अपने पर भरोसा है, जिसका मन उसके कंट्रोल में है, वह नाथ है। जिसे अपने पर भरोसा नहीं है, वह नाथ नहीं हो सकता। यहाँ राजा और प्रजा का भेद है। स्वामी-सेवक का भेद है। मैं अपने नाथ से मिलना चाहता हूँ। मैं साधु जीवन स्वीकार करना चाहता हूँ, ऐसा मंथन करते-करते वे सबके लिए आदर्श बन गए। महापुरुषों से जितना सत्संग करो उतना ही कम है। शालिभद्र का समय आया तो वे सब कुछ त्यागकर दीक्षित हो गए।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि संसार के आकर्षणों में हम न उलझें। ये जीवन को पतन की ओर ले जाने वाले हैं।

धन्ना जी की सिद्धि

07 नवम्बर 2023। प्रभात की पावन बेला में प्रभु एवं गुरुभक्ति से परिपूर्ण प्रार्थना के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने दशवैकालिक, श्रुत आरोहक, तत्त्वज्ञान का बोध प्रदान किया।

राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में गुरुवचनों के श्रवण की प्यास लिए उपस्थित हजारों गुरुभक्तों के समक्ष परमागम रहस्यज्ञाता आचार्यदेव ने फरमाया कि **''शालिभद्र जैसी रिद्धि और धन्ना जैसी सिद्धि' की चर्चा चल रही है। धन्ना जी की सिद्धि बड़ा महत्त्व रखती है। उनके पूरे जीवन वृत्तांत को देखेंगे, सुनेंगे, जानेंगे, समझेंगे तो एक बात सामने आएगी कि उत्कर्ष एवं उन्नति की ओर आगे बढ़ना है। दूसरी बात त्याग और उदारता रखते हुए किसी भी बात की पकड़ नहीं रखनी। जीवन में किसी से कोई लगाव नहीं। बिना उदारता के चीजें छूट नहीं सकती। जो छोड़ता है वह पाता है। जो पकड़ता है वह अटक जाता है। 'धन्ना की सिद्धि सवाई है, नहीं अहंकार मन लाई है'। ईर्ष्या और द्वेष उत्कर्ष सिद्धि के लिए घातक हैं। गुणग्राह्य दृष्टि बन जाती है तो आत्म-उत्कर्ष सिद्ध हो जाता है। धन्ना जी पुण्यवान जीव थे और पूर्वजन्म में उन्होंने सुपात्रदान का योग बनाकर महान पुण्य का उपार्जन किया। जन्म के साथ धन निकला तो नाम धन्ना रख दिया। इनके तीन भाई थे किन्तु वे ईर्ष्या से ग्रस्त थे। उनमें शत्रुता का भाव पैदा हो गया, लेकिन धन्ना जी ने कभी भी अपने भाइयों के प्रति रोष, द्वेष पैदा होने नहीं दिया। धन्ना जी घर से निकलकर जहाँ भी गए, वहाँ अनन्त पुण्यवानी का जोर रहा। अंत में वे भगवान महावीर के चरणों में दीक्षा ग्रहण करते हैं और आत्मकल्याण को सिद्ध करते हैं।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने गीत *'कष्टों का करेंगे वेल्कम तो कर्मों की होगी भीड़ कम'* प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संयम और संसार में से हमें किसमें अधिक रुचि है, आत्मचिंतन करें। साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा.,

साध्वी श्री अनुमिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीमंडल ने *'राम गुरुवर इस दुनिया में सबसे निराले संत हैं'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। मंगलवाड़ संघ ने क्षेत्र स्पर्शने की विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की।

अभय कुमार जैसी बुद्धि

08 नवम्बर 2023। मंगलमय प्रार्थना के सामूहिक आयोजन के पश्चात् तत्त्वज्ञान कक्षा में श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने ज्ञानार्जन करवाया। अध्यात्म ज्योति पर्व प्रवचन माला के अंतर्गत विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना से जन-जन का जीवन पावन करते हुए फरमाया कि **''अभय कुमार जैसी बुद्धि प्राप्त हो। *'बुद्धि अभय अपार भविक जन बुद्धि अभय अपार'* जो बुद्धि भय से रहित है वह जीवन का आधार होती है। जैसा बुद्धि का प्रभाव होगा वैसा ही जीवन बनेगा। बुद्धि पवित्र है तो विचार भी पवित्र बनेंगे, विचार पवित्र बनेंगे तो जीवन में पवित्रता आएगी। बुद्धि आत्मविश्वास को प्रबल बनाने वाली है। बुद्धि सम्यक् है तो उसमें निर्णायक क्षमता रहेगी। बुद्धि तत्काल सोचती रहेगी। जिस बुद्धि में परिणाम नहीं छलकता उसमें डाँवाडोल की स्थिति रहेगी। धन बल, भुज बल, जन बल और बुद्धि बल में बुद्धि बल को महत्त्व दिया गया है। व्यक्ति व समुदाय का नेतृत्व भी बुद्ध के बल पर ही होता है। राजा श्रेणिक की कई समस्याओं का समाधान अभय कुमार ने अपनी बुद्धि से किया। बुद्धि को तनाव में रखेंगे तो बुद्धि सही नहीं रहेगी। बुद्धि को फ्रेश रखना बहुत जरूरी है। भय से मुक्त होंगे तो बुद्धि फ्री मिलेगी। कोई भय नहीं तो कोई समस्या नहीं। ऐसी कई घटनाएँ घटी हैं, जिनका समाधान लोगों को नहीं मिल रहा था और रात्रि में नींद में उस समस्या का समाधान मिल गया। क्योंकि उस समय बुद्धि तनाव रहित थी।''**

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि गृहवास बंधन है। संयम मोक्ष है। राग-द्वेष एवं गृहस्थ जीवन का बंधन हमें जड़ बना देता है। कोई भी धार्मिक कार्य करने के लिए 100 बार सोचना पड़ता है, यह बंधन है।

इस अवसर पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

गौतम स्वामी जैसी लब्धि प्राप्त हो

09 नवम्बर 2023। प्रात: मंगलमय प्रार्थना एवं तत्त्वज्ञान कक्षा के पश्चात् प्रवचन स्थल राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में अध्यात्म ज्योति पर्व प्रवचन माला के अन्तर्गत दयानिधि आगमज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि **''गौतम स्वामी जैसी लब्धियाँ हमें भी प्राप्त हों। लब्धि का अर्थ है प्राप्त गुण। चिंतामणि रत्न से मन में जो भी सोच होगी वह पूरी होगी। गौतम गणधर के बारे में बताया जाता है कि उनके पास ऐसी लब्धियाँ थी कि *'अंगुष्टे अमृत बसे लब्धि तणा भण्डार'* अर्थात् जिस पदार्थ को अंगुठा छुआ देते तो कितने ही साधु आ जाएँ, उस पदार्थ से सबको पारणा करा सकते थे। सबका पेट भर जाता। उनको लब्धियाँ कैसे प्राप्त हुई? *'मन मोद मनाएँ गणधर गौतम की जय-जय बोलिए'*। वीर प्रभु के पहले गणधर इंद्रभूति शुभ नाम। मोद मनाने का अर्थ है मन में प्रसन्न होना, प्रमोद भाव होना। बहुत सारी लब्धियाँ उनको प्राप्त थी, परन्तु कोई दिखावा नहीं, प्रदर्शन नहीं। हमें थोड़ी-सी शक्ति प्राप्त हो जाए तो हमारा मन चाहेगा कि दुनिया को यदि मालूम नहीं पड़े तो फिर हमारे पास शक्ति का क्या मतलब? हमारी लब्धि का क्या मतलब? हम सोचते हैं कि लोगों में कुछ प्रदर्शन दिखाएँगे तो हमारा मान-सम्मान बढ़ेगा। किन्तु भगवान महावीर कहते हैं कि अपनी शक्तियों का गोपन करके चलो। गौतम स्वामी अपनी शक्ति और लब्धियों का गोपन करके चलते थे। उन्हें लब्धियों पर मान नहीं था।**

वे विनयवान थे। स्वयं को प्रभु से मिला दिया, अब मेरा कोई विचार नहीं है। विनय अर्थात् जिनके विचार लुप्त हो गए। प्रभु की आज्ञा ही मेरा सर्वस्व है। गौतम नाम में कामधेनु, कल्पवृक्ष और चिंतामणि रत्न तीनों का वरदान है।''

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम दूसरों को कष्ट देंगे तो हमें भी कष्ट मिलेगा। पापकारी कार्यों को जितना त्यागेंगे हमें उतनी ही सुख-शांति प्राप्त होगी।

सुपात्रदान की महिमा तीनों लोकों में

10 नवम्बर 2023। सूर्योदय के साथ ही प्रात:कालीन बेला में पंच परमेष्ठी को समर्पित प्रार्थना की गई एवं श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान का बोध कराया। धर्मसभा में उमड़ा जनसैलाब आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन वचनों से अपना जीवन धन्य बनाने को आतुर नजर आ रहा था। परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य भगवन् ने अपनी अमृतवाणी में फरमाया कि ''**सुपात्रदान की महिमा तीनों लोकों में गाई जाती है। द्रव्य शुद्ध होना चाहिए। द्रव्य रूप में सड़ी-गली वस्तु नहीं होनी चाहिए। रसचलित नहीं हो और भाव से शुद्धि होनी चाहिए। साधु के निमित्त से आहार नहीं बनाना चाहिए। आधाकर्मी आहार, औद्देशिक आहार, पूतिकर्म आहार और मिश्रजात आहार, ये चार प्रकार का आहार साधु के पातरे में आए तो वह परठने लायक होता है। भगवान महावीर ने ऐसे आहार को परठने की आज्ञा दी है। साधु के निमित्त से जल्दी व ज्यादा पकाया गया आहार आधाकर्मी आहार है। मुनि के लिए शुद्ध आहार होना चाहिए। गवेषणा साधुता की रक्षा के लिए की जाती है। देने वाले की भावना शुद्ध होनी चाहिए। जीरण सेठ भगवान महावीर की भावना भाते रहे। एक मुहूर्त्त तक और भावना भाते तो उनको केवलज्ञान हो जाता। किन्तु उनके सौभाग्य नहीं बैठा। पूरण सेठ दान को महत्त्व नहीं देता था किन्तु भगवान महावीर को देखा तो उनकी सौम्यता, भव्यता से मन हो गया कि इनको कुछ दे दिया जाए। तीन दिन के पुराने उड़द के बाकुले सेठ के कहने पर दासियों ने बहराए। इतने में ही अहोदानम्! अहोदानम्! की देव धुन गूँज उठी। भावना से बड़ा लाभ होता है।**'' कयवन्ना चारित्र का सुंदर विवेचन आचार्य भगवन् ने फरमाया। सुपात्रदान देकर अपनी आत्मा को भावित किया।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि बच्चों को कार नहीं, संस्कार दें। बच्चों को संस्कार देने से पहले आप स्वयं संस्कार पालक बनें। साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति भजन फरमाया।

धर्म का मार्ग समर्पण का मार्ग है

11 नवम्बर 2023। प्रात: प्रार्थना की धार्मिक स्वरलहरी के पश्चात् श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वज्ञान कक्षा में दिशाबोध प्रदान किया। अध्यात्म ज्योति पर्व प्रवचन माला के अन्तर्गत आयोजित धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में ज्ञान व क्रिया के बेजोड़ संगम आचार्य भगवन् ने ज्ञानपिपासु भक्तों का जीवन कृतार्थ करते हुए फरमाया कि ''**धर्म का मार्ग समर्पण का मार्ग है, वीरता का मार्ग है। समर्पण दिल से होता है। बिना वीरता के समर्पण हो ही नहीं सकता। जिसने अपने आप पर विजय प्राप्त कर ली, अपने आपको नियंत्रित कर लिया, वही व्यक्ति समर्पित हो सकता है। विषयों व इन्द्रियों के गुलाम बने रहोगे तो धर्म के प्रति समर्पण सध नहीं पाएगा। समर्पण मुँह का कथन हो सकता है। मुँह से कथन किया जा सकता है कि मैं समर्पित हूँ, किन्तु समर्पणा का भाव नहीं हो सकता। समर्पणा भाव में अहंकार की कुर्बानी देनी होती है। बिना कुर्बानी के जीव समर्पित**

नहीं हो सकता। 'इदं न मम' यह मेरा नहीं है। स्व-समर्पण अहंकार पर अपना अधिकार जमाने पर ही हो सकता है। यदि मन में शिकवा-शिकायत पैदा होती है तो वहाँ समर्पण टिक नहीं सकता। सुधर्मा स्वामी को भगवान महावीर से कभी कोई शिकायत नहीं हुई। हमें कहीं बाहर से तृप्ति मिलने वाली नहीं है। तृप्ति तो भीतर में ही होती है। तृप्ति समर्पणा में है।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में राजा हस्तिपाल के स्वप्नों और उन स्वप्नों के भगवान महावीर द्वारा फरमाए गए समाधानों का विवेचन प्रस्तुत किया। साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुहर्षा श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति से ओत-प्रोत भजन प्रस्तुत किया।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि हम अपने जीवन में रोज परिवर्तन देख रहे हैं। आदमी विचारों को बदल रहा है। भाई-भाई में लालच व धन के कारण झगड़े आमबात हो गई है।

हमारे भीतर कायरता नहीं, वीरता प्रकट हो

12 नवम्बर 2023। चारित्रात्माओं के सान्निध्य में प्रात: मंगल प्रार्थना में रविवारीय समता शाखा में समता आराधना हेतु जलसैलाब उमड़ पड़ा। समता शाखा में नयनाभिराम उपस्थिति हर्षित करने वाली थी। धर्मतत्त्व का बोध श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने करवाया।

जिनकी कथनी-करनी में लेशमात्र भी अंतर नहीं ऐसी दिव्यविभूति परम पूज्य आचार्यदेव ने उपस्थित अपार जनमेदिनी को आत्मतृप्त करते हुए अपनी सिंहगर्जना में फरमाया कि ''**संसार के कीचड़ से, मोहमाया से निकलने के लिए वीरता की आवश्यकता है। कायर व्यक्ति मोहमाया में उलझा रहता है। हस्तिपाल राजा के स्वप्नों का अर्थ बताते हुए भगवान महावीर ने फरमाया कि ये स्वप्न भविष्य की भयावहता दर्शाते हैं। आज शरीर सशक्त है, सोचने की शक्ति है। यह शरीर छूटने के बाद क्या होने वाला है। यदि मरकर तिर्यंच में चला गया और उस समय दूसरे जीवों की घात करेगा तब क्या होगा? भव परम्परा बढ़ेगी। यदि शुद्ध साधुत्व या श्रावकत्व का पालन नहीं किया तो चतुर्गति संसार में परिभ्रमण रुकने वाला नहीं है। मेरी आत्मा कितनी संक्लेषित होगी! जिंदगी की दीवाली कैसी मना रहे हैं? सामायिक, स्वाध्याय, जाप, लोगस्स, पुच्छिंसु णं कर लेंगे। हमारे भीतर आत्मबोध प्रकट होना चाहिए। आत्मा के प्रति संवदेना होनी चाहिए। मेरे भीतर कायरता है तो हमें वीरता प्राप्त करनी है। हमारे ज्ञान का दीप जलेगा तभी शांति-समाधि व तृप्ति मिलेगी।**''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने फरमाया कि ''**गुरु के द्वारा बताए मार्ग पर चलने की लालसा होनी चाहिए।**'' हस्तिपाल राजा के स्वप्नों का वर्णन करते हुए फरमाया कि ''**सिंह के शरीर में कीड़े बुलबुला रहे थे। सिंह जिनशासन का प्रतीक है। जिनशासन सभी धर्मों में श्रेष्ठ है। जिनशासन अपने ही लोगों से पीड़ित होगा। छठे स्वप्न में कमल कीचड़ में सना हुआ देखा, जिसका अर्थ है कि उत्तम कुल में उत्पन्न होने वाले अधर्म की प्रवृत्ति करेंगे। सातवें स्वप्न में किसान अच्छा बीज ऊसर भूमि में बो रहा है। भविष्य में सुपात्रदान देने वाले लोग कम होंगे और शिथिलाचार को बढ़ावा दिया जाएगा।**'' आपश्री जी ने अन्य स्वप्नों का भी प्रभावी विवेचन फरमाया।

साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने *'समता दीप जले, हुक्म शिखर में'* भाव गीत प्रस्तुत किया। विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

दान अहंकार का विसर्जन है

13 नवम्बर 2023। प्रात:कालीन मंगलमय प्रार्थना एवं तत्त्वज्ञान कक्षा में ज्ञानार्जन पश्चात् राठौर परिसर में आयोजित धर्मसभा में जिनशासन की शान आचार्य भगवन् ने उपस्थित अपार जनमेदिनी को अपनी पावन वाणी में फरमाया कि **''वीरों का संपर्क मिलने से हमारे में भी वीरता का प्रादुर्भाव होगा। वीरता प्रकट होने से मिथ्या, मोह, तिमिर भाग जाएँगे। महावीर कैसे महावीर बने? उपसर्गों को सहन करते हुए आप प्रकंपित नहीं हुए। मिथ्या भय, मोह आदि दूर हो जाएँगे। महावीर की यात्रा नयसार के भव से हुई। एक लक्ष्य बनाकर जो गति होती है, वह यात्रा होती है। कभी यात्रा करते हुए यात्री भटक जाता है। नयसार का नियम था कि किसी को दान दिए बिना भोजन नहीं करना। संत-महात्मा नहीं मिले तो सम्यक्दृष्टि श्रावक को दान करने का लक्ष्य रखता था। दान अहंकार का विसर्जन है। अज्ञानी लोग दान देकर गर्वित हो जाते हैं। नीतिकार ने बताया कि एक हाथ से दिया दान दूसरे हाथ को भी मालूम नहीं पड़ना चाहिए। नयसार ने साधु को प्रतिलाभित किया और अपने आपको धन्य किया। जन्म-मरण की शृंखला को पुरुषार्थ से तोड़ा जा सकता है। कषायों के कारण चार गति में भ्रमण कर रहे हैं। कषायों को हटाएँगे तो हमारा मूल स्वरूप प्रकट होगा। गौतम स्वामी, भगवान महावीर के मोक्ष पधारने का जानकर भगवान के गुणकीर्तन करने लगे और उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हो गया।''**

भगवान महावीर निर्वाण दिवस

14 नवम्बर 2023। भगवान महावीर निर्वाण दिवस के पावन अवसर पर गौरवशाली परम्परा के अनुसार परम पूज्य आराध्यदेव आचार्य भगवन् के सान्निध्य में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर द्वारा प्रात: 7:15 बजे भगवान महावीर की अंतिम देशना श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 35 अध्ययनों का सुंदर वाचन किया गया। आचार्य भगवन् ने अपूर्व कृपा कर खड़े होकर श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के 36वें अध्ययन का वाचन किया। नीमच सहित देशभर के अनेक स्थानों के श्रद्धालुओं ने खड़े होकर इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाया।

वाचन सम्पन्न होने के पश्चात् भगवान महावीर के 82वें पट्टधर परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धन्य है हमारा पुण्य कि हमें भगवान महावीर का शासन प्राप्त हुआ है। शासन के उपकारों से उऋण होने के लिए जिनशासन की प्रभावना करें। पात्रता सही होगी तो गुणवत्ता बढ़ेगी। हमारे भीतर पात्रता बढ़ाएँ। मोह भँवर में चेतन फँसा हुआ रहता है। आध्यात्मिक जीवन की सुबह प्रकट नहीं हो पाती है। संसार के अधिकांश प्राणी संसार को ही महत्त्व देते हैं।**

जन्म लेना, पढ़ना-लिखना, शादी, व्यापार, संतान की परवरिश, उनको व्यापार आदि में लगाना और उनको भौतिक सुख प्रदान करना आदि में अपना कर्त्तव्य पूर्ण मान लेते हैं। पर मैंने अपनी आत्मा के लिए क्या किया? हमारी आत्मा का शुद्धिकरण सामायिक, संवर, पौषध से होगा। गृहस्थ में रहते हुए धर्माराधना कैसे की जाए? अपनी अपेक्षाओं, आवश्यकताओं को सीमित किया जाए और समय को धर्म कार्यों में नियोजित किया जाए। हम समय को सार्थक करें। कुछ और नहीं हो तो नवकार महामंत्र का जाप करें। लोगस्स में 24 तीर्थंकरों की स्तुति होती है। जो भी जाप करें, उसमें लीन होकर करें। भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गौतम स्वामी को केवलज्ञान हुआ। नववर्ष में कुछ नए उमंग, विचार

पैदा हो, आत्मकल्याण की दिशा में आगे बढ़ें, ऐसा लक्ष्य होना चाहिए।'' वर्ष में कम से कम 5 शास्त्र- 1. दशवैकालिक सूत्र, 2. उत्तराध्ययन सूत्र, 3. आचारांग सूत्र, 4. उपासकदशांग सूत्र, 5. प्रश्नव्याकरण सूत्र पढ़ने की प्रेरणा आचार्य भगवन् ने दी। कई भाई-बहिनों ने शुभ संकल्प लिए। अन्य विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए।

आराध्यदेव आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में बालक-बालिकाओं के पाँच दिवसीय समता संस्कार शिविर का सफल आयोजन किया गया।

शिविर में बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से समय मात्र का प्रमाद नहीं करने की प्रेरणा दी।

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने धर्मतत्त्व का बोध कराया। साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा. ने छह काय जीवों की यतना, साध्वी श्री जयती श्री जी म.सा. ने सुन्दर संस्कार निर्माण के बोल, साध्वी श्री स्तुति श्री जी म.सा. ने नर्क का वर्णन फरमाया। अन्य अनेक ज्ञानवर्द्धक कार्यक्रम हुए। श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच की ओर से शिविरार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

मन को जीतने वाला ही असली विजेता

15 नवम्बर 2023। प्रात: प्रार्थना के स्वरों के प्रस्फुटन से संपूर्ण माहौल आध्यात्मिक बन गया। श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने तत्त्वबोध प्रदान किया। सिरीवाल प्रतिबोधक, व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**जो मन को जीत लेता है वो जगत् विजेता बन जाता है। युद्ध में हजारों को जीत लेना बहुत आसान है, लेकिन मन को जीतना बहुत ही मुश्किल है। एक अहंकार को मना लिया तो सब मान गए समझो। मन क्या बोलता है? मन कहता है कि तू मेरी मान, मैं किसी की नहीं मानता। मैं जो कहूँ वो सुन। मन की सुनवाई नहीं होती तो क्रोध खड़ा हो जाता है। क्रोध से बात नहीं बनती तो दाँव-पेच खेले जाते हैं। क्रोध, मान, माया, लोभ से भी ज्यादा घातक अहंकार है। अहंकार यानी मान को नमा लिया तो बाकी नमते देर नहीं लगेगी। परिवार में अहंकार से टूटन होती है।**''

श्री निर्वाण मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आदमी ने झुकना नहीं सीखा है। छोटा-सा शब्द है क्षमा उसे भी जीवन में उतारने से घबराता है। अगर वह क्षमा करना सीख जाता है तो किसी से वैर रखेगा ही नहीं।

शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुषमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री विजेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा. आदि ने *'प्राणों से प्यारे हैं गुरुवर'* गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

दिल्ली हाईकोर्ट के वकील हनुमान जी डागा एवं म.प्र. शासन के पूर्व गृहमंत्री हिम्मत भाई कोठारी, रतलाम ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। परम गुरुभक्त धर्मचंद जी बोहरा-देशनोक एवं परम गुरुभक्त प्रदीप जी बरड़िया-सरदारशहर/रायपुर के निधन पर उनके परिजनों ने गुरुचरणों में उपस्थित होकर आध्यात्मिक शांति व संदेश प्राप्त किया।

श्राविक-श्राविका वर्ग में 6 पचरंगी तप एवं साध्वीवर्याओं में 1 पचरंगी तप सम्पन्न हुआ। 50 तेले पचरंगी के अलावा आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस पर 170 आयंबिल हुए।

प्रतिदिन द्वय महापुरुषों के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, ज्ञानचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा समाधान आदि कार्यक्रमों के आयोजन में हजारों जिज्ञासुओं ने उपस्थित होकर अपनी जिज्ञासाओं का आगमसम्मत तार्किक समाधान प्राप्त किया।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग

तेला तप परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा.
श्री हर्षित मुनि जी म.सा., श्री सुमित मुनि जी म.सा.

मासखमण	साध्वी श्री जयंकरा श्री जी म.सा.	**5 उपवास**	साध्वी श्री समीक्षा श्री जी म.सा. (गतिमान)
सिद्धि तप	साध्वी श्री सुभग श्री जी म.सा.	**3 उपवास**	शा.दी. साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.
28 उपवास	साध्वी श्री प्रणाम श्री जी म.सा. (गतिमान)	**आयंबिल**	साध्वी श्री विराट श्री जी म.सा. (लगातार 65)
27 उपवास	साध्वी श्री स्वागत श्री जी म.सा. (गतिमान)		साध्वी श्री दीप्ति श्री जी म.सा. (लगातार 55)
10 उपवास	साध्वी श्री सुरुचि श्री जी म.सा. (गतिमान)		
8 उपवास	साध्वी श्री रश्मि श्री जी म.सा. (गतिमान)		

श्रावक-श्राविका वर्ग

आजीवन शीलव्रत	विनीत जी जैन-करजू, हेमलता जी जैन-बरार, धीरज कुमार जी जैन-अजमेर, चुन्नीलाल जी लोढ़ा-रूण्डेडा, कंचनबाई गांधी-सिकन्दराबाद, लक्ष्मीनारायण जी जैन-उखलाना, रामनिवास जी जैन-पाटोली, नेमीचंद जी जैन-उखलाना, जगदीश जी मीणा-पचाला, कजोड़मल जी जांगिड़-उखलाना, जयराम जी मीणा-बलरिया, रामविलास जी मीणा-बलरिया, हरफूल जी मीणा-खोरलिया, शंकरलाल जी मीणा-बोरदा, लादूलाल जी पिस्तादेवी मेहता-भीम, रामचंद जी जैन-गुराड़िया, गोपाल जी जाट-सूली, लालचंद जी खींचा-नंदुरबार, संतोष जी पींचा-सूरत, बिंदु जी बरड़िया-सरदारशहर
उपवास	**मासखमण-** इंदरराज जी बोथरा-सूरत, **21-** लोकेश जी सियाल (गतिमान), **19-** वीर पिता इंदरराज जी बोथरा-सूरत (31 के प्रत्याख्यान), **10-** रम्भाबाई नलवाया (गतिमान), **9-** भूपालसिंह मांडावत, अभिषेक जी कांठेड़, सिद्धि जी कांठेड़, **अठाई-** बापूलाल जी खिंदावत, विजय कुमार जी खिंदावत (गतिमान), रानी जी पगारिया (गतिमान)
वर्षीतप	संध्या जी बाफना-बालोद, अभय जी बोहरा-चित्तौड़गढ़

-महेश नाहटा श्रमणोपासक

नवकार महामंत्र पर आधारित प्रतियोगिता के विजेता

श्रमणोपासक अंक 15-16 अक्टूबर 2023 में 'बालमन में उपजे ज्ञान' शीर्षक के अन्तर्गत 15 वर्ष तक की आयु के बच्चों हेतु सुंदर व शुद्ध नवकार महामंत्र लेखन प्रतियोगिता रखी गई थी, जिसमें बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं-

1. चार्वी सुराणा, उदयपुर (राज.)

2. मौली जैन, डौण्डी, बालोद (छ.ग.)

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

भीलवाड़ा। मुमुक्षु बहिन सुश्री आर्ची जी नाहर, बेगूँ का 30 अक्टूबर को शंकर समता भवन में विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री विमलाकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-7 के दर्शनार्थ पधारना हुआ। प्रवचन पश्चात् साधना भवन में श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल एवं समता युवा संघ सदस्यों द्वारा मुमुक्षु बहिन का बहुत ही सादगीपूर्ण भावाभिनंदन किया गया। इस दौरान संपूर्ण सभा जयवंता जयवंता के उद्घोष से गूँज उठी। वीर पिता राजेश जी नाहर ने सभी से दीक्षा के अवसर पर उपस्थित होने का निवेदन किया।

तपस्याओं के क्रम में साध्वी श्री सुमित्रा श्री जी म.सा. 8 उपवास, साध्वी श्री लक्षिता श्री जी म.सा. 6 उपवास, साध्वी श्री विशाखा श्री जी म.सा. 8 उपवास, साध्वी श्री प्रगति श्री जी म.सा. 6 उपवास, साध्वी श्री प्रीति श्री जी म.सा. 8 उपवास, साध्वी श्री मंजरी श्री जी म.सा. 8 उपवास की तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं।

साध्वीवर्याओं की प्रेरणा से 31- शांता जी संखलेचा, मंजू जी भड़कत्या, 30- स्नेहलता जी मुरड़िया, 17 (गतिमान)- वीर भ्राता आधार जी भड़कत्या, 16- शोभा जी संखलेचा, 11- मोतीलाल जी गोलछा, सुरेन्द्र जी संखलेचा, मीनाक्षी जी मूलावत, 9- कविता जी बाफना, संतोष देवी भूरा, अनुरेखा जी कुदाल, सोनम जी बुच्चा, शौर्य जी सुराणा, अठाई- सरोजदेवी गोलछा, ललिता जी लसोड़, पुष्पा जी पारख, श्रुति जी रुगलेचा, उषा जी बरलोटा, निधि जी सांड, लता जी चोपड़ा, रुचि जी चोपड़ा, परी जी भड़कत्या, प्रिया जी भूरा, अशोक जी सांखला, गणपत जी चोपड़ा, सुमेर जी बरमेचा, स्वाति जी गुलगुलिया, निकिता जी गुलगुलिया, वीर पिता वर्धमान जी कटारिया सहित सात, छः, पाँच आदि अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। **-दीपक बेताला**

मंगलवाड़ चौराहा। शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 के पावन सान्निध्य एवं श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में 29 अक्टूबर को एक दिवसीय क्षेत्रीय मेवाड़ अंचल महिला शिविर **'संस्कारों के दर्पण में'** का आयोजन किया गया। मेवाड़ अंचल के 34 संघों से 534 महिलाओं की उपस्थिति में रविवारीय समता शाखा की आराधना के साथ शिविर का शुभारंभ हुआ। शिविरार्थी बहिनों के रजिस्ट्रेशन के पश्चात् प्रवचन सभा में साध्वीवर्याओं ने मन की एकाग्रता कैसे बने, शब्दों की ताकत, परिवार को खुशहाल कैसे बनाएँ, अहो जिनशासन सेवक आदि विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। संपूर्ण दिवस समयबद्धता एवं अनुशासन के साथ अनेक गतिविधियाँ करवाई गईं। शिविर को सफल बनाने में संघ एवं समता युवा संघ का विशेष सहयोग रहा। शिविर समापन के पश्चात् व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन किया गया। धन्यवाद एवं आभार ज्ञापन संघ अध्यक्ष जी ने किया। सभी शिविरार्थी बहिनों को प्रभावना वितरित की गई। **-मनीष कुमार पोखरना**

चिकारड़ा। आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश चादर प्रदान दिवस पर अत्र विराजित शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6 के सान्निध्य में प्रातः 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक श्रावक-श्राविकाओं में अलग-अलग नवकार महामंत्र जाप के साथ 21 आयंबिल, 2 उपवास एवं रात्रि संवर आदि की तपस्याएँ सम्पन्न हुई। **-सुंदरलाल लोढ़ा**

लसड़ावन। शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारंभ से ही तपस्याओं का ठाठ लगा हुआ है। उपवास एवं एकासन की लड़ी गतिमान है। 11 की दो, 9 की दो, 5 की एक एवं सामूहिक एकासन के साथ नीवी व आयम्बिल की तपाराधना हुई।

प्रवचन में सती ऋषिदत्ता का चारित्र एवं नींवी तपाराधना में श्रीपाल चारित्र वाचन हुआ। प्रतिदिन एक घण्टा नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप चला। कक्षा एवं शिविर में चारित्रात्माओं ने भक्तामर स्तोत्र, पुच्छिंसु णं, जैन सिद्धान्त बत्तीसी, शुद्ध भिक्षा विधि एवं बत्तीय सूत्रीय नियमावली आदि का गहन अध्ययन कराया।

-बाबुलाल रातड़िया

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

गंगाशहर-भीनासर। श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संस्थान के तत्वावधान में पाँच स्थानों पर चारित्रात्माओं के चातुर्मास धर्म-ध्यान, त्याग-तप पूर्वक सम्पन्नता की ओर अग्रसर है। चारित्रात्माओं की प्रेरणा से जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा में 225 भाई-बहिनों ने भाग लिया। संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि वृद्धावस्था में दीक्षा लेने वाले पुन: जवान हो जाते हैं। श्री प्रशम मुनि जी म.सा. ने उनका जीवन विवेचन फरमाया। साध्वी श्री नूतन श्री जी म.सा. ने फरमाया कि आपने दीक्षा लेकर कई शास्त्र कंठस्थ किए एवं तीनों मनोरथ पूर्ण कर अपना जीवन और मरण दोनों धन्य बना लिए।

आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस पर भाई-बहिनों ने '**विघ्न हरण मंगल करण ऋषभादिक महावीर, हु शि उ चौ श्री ज ग नाना राम हरे भव पीर**' का 12 घंटे जाप किया। इस अवसर पर संवर, प्रतिक्रमण व 125 से अधिक आयंबिल तपाराधना हुई।

शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा., श्री प्रशम मुनि जी म.सा., श्री हेमगिरी जी म.सा. ने आचार्यश्री का जीवन वृत्तांत फरमाया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भावाभिव्यक्ति में श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पाँच दिवसीय बालक-बालिका शिविर में लगभग 180 बच्चों ने भाग लिया। लगभग 80 बच्चों ने पटाखा त्याग ग्रहण किया।

मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफना का चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ पधारना हुआ। स्थानीय संघ द्वारा 22 अक्टूबर को आपका बहुमान किया गया। भगवान महावीर निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में लगभग 35 तेला तप हुए। सभी स्थानीय चातुर्मास स्थलों पर सामूहिक जाप किया गया।

श्री साधुमार्गी जैन महिला समिति द्वारा गंगाशहर राजकीय सैटेलाइट चिकित्सालय में दो टन की ए.सी. भेंट की गई तथा भ्रूणहत्या नहीं करने व 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' आदि के पोस्ट लगवाए गए। साथ ही स्लोगन पट्टियों से बाहरी दीवारों पर पैंटिंग करवाई गई। इसका लोकार्पण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें हॉस्पिटल के अधीक्षक, संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, स्थानीय संघ अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, महिला मंडल अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष सहित गंगाशहर-भीनासर के गणमान्यजन उपस्थित थे।

-विमल कुमार सेठिया, प्रमिला बोथरा

नोखागाँव। शासन दीपक श्री विनय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के पावन सान्निध्य में चातुर्मास अपूर्व धर्मोल्लास के साथ पूर्णता की ओर गतिमान है। प्रार्थना के पश्चात् युवाओं की कक्षा में आपश्री जी द्वारा ज्ञानार्जन करवाया जाता है। प्रवचन में 21 गुणों का विवरण श्रवण कर श्रद्धालु समर्पण भावों से भर गए। संघ स्थापना दिवस, आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस पर 5-5 सामायिक एवं तप-त्याग हुए।

श्री मधुर मुनि जी म.सा. सुबाहु कुमार का जीवन चारित्र फरमा रहे हैं। दोपहर में महिलाओं की कक्षा में

अच्छी उपस्थिति रहती है। आपश्री जी गोचरी संबंधी एवं सुझता-असुझता का ज्ञानार्जन करवा रहे हैं। साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के देवलोकगमन पर चार-चार लोगस्स का ध्यान का श्रद्धांजलि अर्पित की गई। द्वय संतों ने उनका जीवन वृत्तांत फरमाया।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश का पुण्यस्मृति दिवस एवं वर्तमान आचार्य श्री रामेश का आचार्य पदारोहण दिवस त्याग-तप के साथ मनाया गया। श्रावक-श्राविकाओं में 45 आयंबिल एवं 5 उपवास की तपस्याएँ हुईं। म.सा. श्री जी ने द्वय महापुरुषों के गुणों का दिग्दर्शन कराते हुए प्रेरणा लेने का आह्वान किया। भगवान महावीर निर्वाण दिवस पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया गया।

विजय कुमार जी सांड एवं मनीष जी डागा ने मासखमण, घनश्याम जी साध 17, सुनीता जी लुणावत 13, ममता जी सुराणा, कुसुम जी सुराणा, हेमलता जी नलवाया 11 उपवास के प्रत्याख्यान हुए। सुरेश जी प्रेमाबाई डागा एवं लालचंद जी शारदादेवी सुराणा ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। तप की अनुमोदना में 45 उपवास, आयंबिल, तेला 1, बेला 1 आदि तप हुए। **-गंगाराम लुणावत**

देशनोक। शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के चातुर्मास में एकासन, आयंबिल, उपवास की लड़ी निरंतर चल रही है। साध्वीवर्याओं के सान्निध्य में आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं वर्तमान शासनेश आचार्य श्री रामेश का आचार्य पदारोहण दिवस त्याग-तप, ज्ञान-ध्यान के साथ मनाया गया। इस अवसर पर 17 आयंबिल के प्रत्याख्यान हुए।

चारित्रात्माओं ने गुणानुवाद में द्वय आचार्यों के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि हमें गुरु के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। आचार्य श्री नानेश का जीवन विशिष्ट गुणों का गुलदस्ता था तो आचार्य श्री रामेश का जीवन आगम वाक्यों से शोभित है। **-सौरभ जैन**

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

अजमेर। श्री साधुमार्गी महिला समिति के आगामी सत्र हेतु 5 नवम्बर को नवीन कार्यकारिणी का सर्वानुमति से मनोनयन किया गया, जिसमें संरक्षिका शिल्पा जी लोढ़ा, अध्यक्ष सीमा जी सुराना, उपाध्यक्ष सीमा जी भंसाली, मंत्री पूर्णिमा जी लोढ़ा, सहमंत्री वनिता जी मोदी, कोषाध्यक्ष राजकुमारी जी चौरड़िया सहित कार्यकारिणी सदस्याओं का मनोनयन किया गया।

-हितेश लोढ़ा

ब्यावर। शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने जवाहर भवन में नवपद ओली पर प्रवचन में फरमाया कि कर्मों के खेल निराले होते हैं। इनसे ऋषि-मुनि भी हार जाते हैं।

इस अवसर पर उपस्थित मुमुक्षु बहिन अंकिता जी बाफणा ने अपने भावों में कहा कि गुरु राम ने मुझे राग से वीतरागता की ओर बढ़ने की प्रेरणा दी, जिस पर चलकर मैं 22 जनवरी को दीक्षा ग्रहण कर रही हूँ। आपने क्षमा भाव प्रकट किए।

प्रवचन पश्चात् एक अलग कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिन अंकिता जी एवं वीर पिता अनिल जी बाफणा का बहुमान किया गया। कार्यक्रम में अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, महिला मंडल की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सहित स्थानीय एवं आगत अनेक गणमान्यजन उपस्थित थे।

समता विभूति आचार्य श्री नानेश का 24वां पुण्यस्मृति दिवस व आचार्य श्री रामेश का आचार्य पदारोहण दिवस श्री नरेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशनकँवर जी म.सा. आदि ठाणा-9 के तत्वावधान में जवाहर भवन में मनाया गया। प्रात: दो-दो सामायिक की आराधना के साथ नानेश चालीसा, रामेश चालीसा एवं आचार्य श्री नानेश की चिंतनमणियों सहित गुणानुवाद किया गया।

शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा., श्री हिमांशु मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री

लाघव मुनि जी म.सा., साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुखदा श्री जी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश का गुणानुवाद करते हुए गद्य-पद्य में भाव व्यक्त किए। अनेक स्थानीय वक्ताओं ने भी भावाभिव्यक्ति दी। लगभग 125 आयंबिल हुए।

शिविर समापन :- इस अवसर पर पाँच दिवसीय व्यक्तित्व निर्माण शिविर का आयोजन समता भवन में किया गया, जिसमें 7 से 20 वर्ष के 210 बच्चों ने भाग लिया। शिविरार्थियों को श्री हिमांशु मुनि जी म.सा. एवं श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने व्यक्तित्व निर्माण कैसे हो, बड़ों के प्रति मान-सम्मान के भाव रखने आदि विषयों पर मार्गदर्शन प्रदान किया। शिविर समापन पर अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। महामंत्री ने आभार प्रकट किया।

चारित्रात्माओं के सान्निध्य में लीलाबाई कोठारी के 101 उपवास की तपस्या पर जवाहर भवन में अनुमोदना दिवस एकासन तप के साथ मनाया गया।

शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान ने कर्मों को धोने के बहुत उपाय बताए हैं। इनमें से अनुमोदना करना भी एक उपाय है। 101 की तपस्या की अनुमोदना हेतु एक साल में 101 एकासन, नवकारसी, गाथाओं का स्वाध्याय करने की प्रेरणा दी। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने इस हेतु प्रत्याख्यान ग्रहण किए। लीलाबाई कोठारी ने 108 की तपस्या का प्रत्याख्यान ग्रहण किया।

श्री हिमांशु मुनि जी म.सा., श्री धीरज मुनि जी म.सा., श्री लाघव मुनि जी म.सा., साध्वी श्री प्रेक्षा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि लीलाबाई ने इस दीर्घ तपस्या से संघ, समाज, परिवार का मान बढ़ाया है। प्रत्याख्यान में बहुत शक्ति होती है और अनुमोदना से कर्मनिर्जरा का प्रसंग उपस्थित होता है।

संघ अध्यक्ष, उपाध्यक्ष एवं महामंत्री सहित अनेक वक्ताओं ने तप अनुमोदना के भाव व्यक्त किए। इस दिवस सामूहिक 1008 एकासन नानेश रत्नम् में हुए।

भगवान महावीर निर्वाण दिवस :-

चतुर्विध संघ की उपस्थिति में भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव जवाहर भवन में तप-त्याग व तेले तप के साथ मनाया। उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन समता भवन एवं जवाहर भवन में हुआ।

शासन दीपक श्री हेमंत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर स्वामी ने क्रोध, मान, माया, लोभ को जीत लिया था। अहंकार वैराग्य में बाधक है। अहंकार केवलज्ञान को रोक देता है। श्री धीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर के निर्वाण दिवस पर हमें सहनशीलता, धैर्य व विनय का गुण बढ़ाना है। श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र के अध्ययनों की 36 गाथाओं का सार समझाया। साध्वी श्री ह्रींकार श्री जी म.सा. ने पुच्छिंसु णं का महत्त्व बताया। लगभग 26 जनों ने तेला तप किया। **-नोरतमल बाबेल**

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

इंदौर। आचार्य श्री नानेश पुण्यस्मृति दिवस एवं आचार्य श्री रामेश आचार्य पदारोहण दिवस शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री श्रीकांता श्री जी म.सा. के सान्निध्य में तप-त्याग सहित मनाया गया। इस दौरान गुणानुवाद सभा में नानेश-रामेश चालीसा, नवकार महामंत्र जाप सहित द्वय आचार्यों का गुणानुवाद किया गया। लगभग 140 सामूहिक आयंबिल सम्पन्न हुए। उन्मुक्त आश्रम में असहाय बच्चों को राशन प्रदान किया गया।

पर्यायजेष्ठा साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के संथारापूर्वक समाधिमरण पर श्रद्धांजलि सभा में श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। लगभग 100 बच्चों ने पटाखे नहीं फोड़ने के प्रत्याख्यान लिए, जिन्हें पुरस्कृत किया गया। **-आभा डुंगरवाल**

✧✧✧ छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल ✧✧✧

गीदम। शासन दीपक श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 के सान्निध्य में ओसवाल भवन में

धर्माराधना एवं त्याग-तप का ठाठ लगा हुआ है। चातुर्मास प्रारंभ से ही एकासन, बियासन, उपवास एवं तेले की लड़ी चल रही है। मूलचन्द जी बरड़िया के मासखमण, प्रेरणा जी बुरड़ के 11, मोतीलाल जी सालेचा के 9, किरण जी सुराना, कविता जी बुरड़, पिंकी जी बुरड़ के अठाई की तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक पर 108 तेले हुए। रविवारीय पाठशाला में प्रत्येक रविवार को परीक्षा ली जाती है। महिलाओं के लिए दोपहर 2 से 3 बजे कक्षा का आयोजन हो रहा है। कर्मबन्धन विषय पर साप्ताहिक शिविर में 68 महिलाओं ने एवं 6 से 13 अक्टूबर को आयोजित नारीशक्ति शिविर में 80 महिलाओं ने ज्ञानार्जन किया। चातुर्मास का अपूर्व लाभ लेते हुए बाल, युवा, श्रावक एवं श्राविकाएँ धर्म की ओर उन्मुख हो रहे हैं। **-धनराज बोथरा**

गंभीरा। मुमुक्षु बहिन सुश्री तमन्ना जी जैन का सार्वजनिक अभिनंदन कार्यक्रम शोभायात्रा सहित सम्पन्न हुआ। इस दौरान गाँव के जैनेतर जाति के जैन धर्मावलंबी भाई-बहिनों ने अपूर्व उत्साह प्रदर्शित किया। शोभायात्रा में गाँव के अनेक परिवारों द्वारा माला, तिलक सहित मुमुक्षु बहिन एवं वीर परिजनों का स्वागत किया। समग्र जैन चातुर्मास सूची के संपादक ने मुमुक्षु बहिन को अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

मुमुक्षु बहिन ने अपने भावों में संयम जीवन का सार प्रकट किया एवं कार्यक्रम के अन्त में उपस्थित जनों को वर्षीदान प्रदान किया। **-बाबूलाल जैन**

✧ महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल ✧

निफाड। शासन दीपिका साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5 का चातुर्मास अपूर्व उत्साह एवं धर्माराधना के साथ गतिशील है। साध्वीवर्याओं की प्रेरणा से आचार्य श्री नानेश चादर प्रदान दिवस दो-दो सामायिक एवं सामूहिक 50 एकासन, संवर, पौषध, उपवास के साथ मनाया गया। अनेक वक्ताओं ने गुणानुवाद किया।

साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. ने आचार्य श्री नानेश के जीवन पर प्रकाश डाला। साध्वी श्री सुदक्षा श्री जी म.सा. ने गुरु का महत्त्व बताते हुए कोई न कोई प्रत्याख्यान लेने का आह्वान किया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने प्रत्याख्यान ग्रहण किए। आयंबिल ओली पर श्रीपाल चारित्र का वाचन हुआ। षट्रस तप की आराधना हुई।

संथारा साधिका साध्वी श्री राजुल श्री जी म.सा. के पंडितमरण पर गुणानुवाद सभा में गुणानुवाद करते हुए 4-4 लोगस्स का ध्यान कर श्रद्धासुमन अर्पित किए गए।

आचार्य श्री रामेश आचार्य पद दिवस पर तीन दिवसीय धार्मिक आयोजन किए गए, जिसमें प्रथम दिवस गुरुदेव के जीवन पर आधारित भजन, स्तवन, रामेश चालीसा आदि का वाचन किया गया। द्वितीय दिवस पक्खी दिवस साधना दिवस के रूप में मनाया गया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने संवर-पौषध किए। इस दौरान भाइयों हेतु आयोजित श्रुत आराधना शिविर में अस्वाध्याय काल की जानकारी दी गई। दोपहर में बहिनों हेतु विभिन्न विषयों पर शिविर हुए। लगभग 20 आयंबिल एवं 2 तेले सम्पन्न हुए।

चारित्रात्माओं ने आचार्य भगवन् के जीवन पर प्रकाश डालते हुए गुणानुवाद किया एवं आचार्य प्रवर द्वारा प्रदत्त विभिन्न आयामों का विवेचन फरमाया। कई श्रावक-श्राविकाओं ने प्रतिक्रमण, जैन सिद्धान्त बत्तीसी कंठस्थ किए हैं। पुच्छिंसु णं का जाप चल रहा है।

साध्वी श्री सुवास श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुपद्म श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री सुदक्षा श्री जी म.सा. श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन और भावार्थ फरमा रहे हैं। साध्वी श्री सुयशा श्री जी म.सा. ने भगवान महावीर स्वामी का चारित्र रोचक ढंग से फरमाया। 8 नवम्बर से बच्चों का तीन दिवसीय शिविर प्रारंभ हुआ, जिसमें लगभग 40 बच्चों ने भाग लिया। **-अशोक कर्नावट**

बंगाल, बिहार, नेपाल एवं ✧✧✧✧✧✧✧ भूटान अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

रामपुरहाट। समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का पुण्यस्मृति दिवस एवं व्यसनमुक्ति प्रणेता आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस पर सामूहिक सामायिक, नवकार महामंत्र जाप, आचार्य श्री नानेश-रामेश चालीसा एवं आचार्य श्री नानेश की चिंतनमणियों सहित गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने दोनों आचार्य भगवन् का गुणानुवाद किया। सामूहिक पच्चक्खान के साथ आयंबिल तप हुआ। **-सुशील बाँठिया**

सैंथिया। शासन दीपिका साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का पुण्यस्मृति दिवस एवं वर्तमान शासनेश आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस अपूर्व धर्माराधना के साथ मनाया गया। साध्वी श्री सुरीली श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री चिरंतन श्री जी म.सा. ने प्रवचन में द्वय आचार्यों के गुणों पर प्रकाश डाला। प्रात: प्रार्थना में श्री रोहिता श्री जी म.सा. ने भजन प्रस्तुत किया। चारित्रात्माओं की प्रेरणा से दो सामायिक एवं गुणानुवाद सभा में नानेश चालीसा, रामेश चालीसा, आचार्य श्री नानेश की चिन्तनमणियों आदि का आराधन एवं नवकार महामंत्र का अखण्ड जाप किया गया। इस विशेष दिवस पर 100 सामायिक एवं 24 आयंबिल तप हुए। **-कुसुम देवी पारख**

खरियार रोड। शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 सुख-सातापूर्वक चातुर्मास में धर्म-ध्यान की अलख जगा रहे हैं। आपश्री जी के पावन सान्निध्य में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत 21 से 23 अक्टूबर तक आवासीय शिविर आयोजित किया गया। प्रात: 6 से सायं प्रतिक्रमण पश्चात् तक चले इस शिविर में 42 बच्चों की उपस्थिति रही।

श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने बच्चों को प्रार्थना व ध्यान कराया। ममता जी साँखला, सज्जन जी बरड़िया, तारा जी बरड़िया, आरती जी धोलकिया, रीनू जी चौरड़िया, मीना जी जैन आदि ने आध्यात्मिक आरोग्यम्, स्वाध्याय, सामान्य तत्त्वज्ञान, चारित्रात्माओं से वार्तालाप एवं अन्य विविध गतिविधियाँ कराते हुए अध्यापन सेवाएँ दी। शिविर के अंतिम दिवस तीन आयु वर्ग में मौखिक परीक्षा ली गई। प्रथम वर्ग में कार्वी बरड़िया, डॉली जैन, क्रिसा सोनी, द्वितीय वर्ग में आस्था साँखला, विज्ञा मालू, अर्थ जैन एवं तृतीय वर्ग में हर्षवर्धन साँखला, मौली बैद, लब्धि बरड़िया ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। समापन कार्यक्रम 24 अक्टूबर को आयोजित हुआ, जिसमें स्थानीय गणमान्य पदाधिकारियों एवं रायपुर से विशेष आमंत्रित जनों की उपस्थिति रही। श्री छ.ग. उड़ीसा महाकौशल शिविर ट्रस्ट द्वारा बच्चों को व शिक्षिकाओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। **-विकास जैन**

✧✧✧✧✧✧✧ पूर्वोत्तर अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

सिलचर। महत्तम महोत्सव एवं समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. के स्मृति दिवस व आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस पर श्री साधुमार्गी जैन संघ के तत्वावधान में प्रार्थना सभा में नवकार महामंत्र जाप, आचार्य श्री नानेश-रामेश चालीसा, आचार्य श्री नानेश की चिन्तनमणियों का स्वाध्याय किया गया। अनेक वक्ताओं ने गुणानुवाद करते हुए द्वय आचार्यों के जीवन प्रसंग सभा में रखे। आचार्य प्रवर के जयघोष व मंगलपाठ के साथ सभा सम्पन्न हुई। **-विजय कुमार सांड**

✧✧ दिल्ली-पंजाब-हरियाणा अंचल ✧✧

पंचकुला। समता विभूति आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. का पुण्यस्मरण दिवस एवं वर्तमान आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. का आचार्य पदारोहण दिवस नवरत्न जी बोथरा के निवास पर धर्म-ध्यान के साथ मनाया गया। इस दौरान सामायिक, नवकार महामंत्र जाप, भजन, प्रश्नोत्तरी आदि का आयोजन हुआ। **-ललिता बोथरा**

समता मनीषी शशिकला जी सेठिया 'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार' से सम्मानित

कोलकाता, 18 नवम्बर 2023। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की ओर से समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में प्रदान किया जाने वाला संघ का सर्वोच्च सम्मान '**आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार**' समता मनीषी शशिकला जी सेठिया, कोलकाता को प्रदान करने हेतु नयनाभिराम कार्यक्रम एस.वी. सोशियल हॉल, कोलकाता में आयोजित किया गया।

श्री साधुमार्गी जैन संघ कोलकाता के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में संघ गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी सहित केन्द्रीय व स्थानीय तीनों संघों के वर्तमान व पूर्व पदाधिकारियों एवं सदस्यों सहित पुरस्कार सौजन्यदाता सेठ श्री शेरमल फतेचन्द डागा ट्रस्ट की प्रतिनिधि की गरिमामय उपस्थिति रही। श्रीमती शशिकला जी सेठिया धर्मपत्नी अबीरचंद जी सेठिया, कोलकाता को समता मनीषी अलंकरण अभिनन्दन-पत्र, रू. दो लाख का चैक, शॉल एवं माला से अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम के साक्षी बने गुरुभक्तों के दिलो-दिमाग में बरबस ही आचार्य श्री नानेश का समतामय जीवन उभर आया।

वक्ताओं ने अपने उद्बोधन में आचार्य श्री नानेश के समतामय जीवन के तथ्यों को उजागर करते हुए कहा कि श्रीमती शशिकला जी सेठिया का जीवन समता से परिपूर्ण है और संपूर्ण संघ आपको यह पुरस्कार प्रदान करते हुए स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा है। प्रथम बार किसी महिला शक्ति का सम्मान इस पुरस्कार से हुआ है। इस अवसर पर श्रीमती शशिकला जी सेठिया के पारिवारिकजनों ने भी उपस्थित रहकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

यह पुरस्कार आचार्य श्री नानेश के विचारों-चिंतनों को अपनाने एवं उनके प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित भाव रखने वाले विशिष्ट व्यक्तित्व को प्रदान किया जाता है। संघ के राष्ट्रीय महामंत्री ने कोलकाता संघ का आभार व्यक्त किया।

-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

समता मनीषी श्रीमती शशिकला जी सेठिया, कोलकाता

नाम	:	श्रीमती शशिकला जी सेठिया
जन्मतिथि	:	कार्तिक बदी 5, 11 नवम्बर 1953
पति	:	श्री अबीरचंद जी सेठिया
सास-ससुर	:	स्व. श्रीमती रतनदेवी-स्व. श्री भंवरलाल जी सेठिया
सुपुत्र	:	रितेष जी, रिषु जी सेठिया
सुपुत्री	:	श्रीमती हीना चौरड़िया
माता-पिता	:	स्व. श्रीमती दुर्गादेवी-स्व. श्री शिखरचंद जी सावनसुखा
भाई	:	सुशील जी, अनिल जी सावनसुखा
परिवार से दीक्षित	:	बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्री राजेश मुनि जी म.सा. (संसारपक्षीय सुपुत्र), श्री गौतम मुनि जी म.सा., साध्वी श्री विरल श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुश्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री शशांक श्री जी म.सा.

श्रमणोपासक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
संघ पदाधिकारियों का प्रवास सम्पन्न

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय महामंत्री एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष का पंजाब-हरियाणा अंचल के अलाय, रावतसर, जैतोमंडी एवं सिरसा क्षेत्र का प्रवास 6 से 9 नवम्बर तक हुआ। प्रवास के प्रथम पड़ाव में अलाय में संघ की तीनों शाखाओं एवं महत्तम महोत्सव की टीम के साथ चर्चा हुई। इस दौरान संघ प्रवृत्तियों के सुचारू संचालन एवं समता संस्कार पाठशाला आदि पर विचार-विमर्श किया गया। यहाँ से प्रवासी दल ने 8 नवम्बर को रावतसर में संघ प्रभावना करते हुए स्थानीय पदाधिकारियों एवं गणमान्यजनों से संघ उन्नयन हेतु विचार मंथन किया। प्रवास के अगले क्रम में जैतोमंडी एवं सी-ब्लॉक, सिरसा में पधारना हुआ। सिरसा में रात्रि विश्राम के पश्चात् अगले दिन 9 नवम्बर को जैन महावीर ट्रस्ट के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं को संघ प्रवृत्तियों एवं संघ द्वारा संचालित सेवा कार्यों की जानकारी प्रदान की गई। रोड़ी बाजार, सुभाष चौक स्थित एस.एस. जैन सभा के पदाधिकारियों के साथ भी अनौपचारिक बैठक हुई, जिसमें दोनों संघों द्वारा की जा रही गतिविधियों की जानकारी का आदान-प्रदान हुआ।

प्रवास के दौरान अलाय में शासन दीपिका साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा, रावतसर में शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा, जैतोमंडी में शासन दीपिका साध्वी श्री प्रशांत श्री जी म.सा. आदि ठाणा एवं सिरसा में शासन दीपक श्री आदर्श मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन का लाभ लेकर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान अंचल प्रवास में संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना

श्री अ.भा.सा. जैन संघ के गौरवशाली राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, राष्ट्रीय महामंत्री जी के नेतृत्व में कोलकाता-हावड़ा संघ के क्षेत्रों का 17 नवम्बर 2023 को प्रवास आयोजित किया गया। प्रवास में निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण, शिखर सदस्य, निवर्तमान राष्ट्रीय महामंत्री जी आदि की गरिमामय उपस्थिति रही। हावड़ा संघ के निवेदन पर प्रवासी दल उत्तरी हावड़ा पहुँचा, जहाँ इस अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, निवर्तमान राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, हावड़ा संघ अध्यक्ष, मंत्री, कोलकाता संघ अध्यक्ष, मंत्री तथा दोनों संघों के समता युवा संघ व महिला समिति के पदाधिकारी एवं गणमान्य श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

प्रवासी दल ने समता भवन हेतु हावड़ा संघ द्वारा क्रय की गई भूमि का अवलोकन किया। इस अवसर पर नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप किया गया। नवकार महामंत्र के जाप से आस-पास का वातावरण गुंजायमान हो गया। स्थानीय संघ से शीघ्रातिशीघ्र निर्माण कार्य प्रारम्भ करने हेतु निवेदन किया गया।

होटल हिन्दुस्तान क्लब, कोलकाता में रात्रि 8 बजे एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया। प्रवासी दल में शामिल महानुभावों की उपस्थिति में स्थानीय जनों की जिज्ञासाओं का समाधान किया गया। राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए संघ प्रवृत्तियों के विस्तार में सहयोग प्रदान करने का आह्वान किया। जय-जयकारों के साथ सभा सम्पन्न हुई।

-राष्ट्रीय उपाध्यक्ष

भक्ति रस

स्वाध्याय से आत्मिक लाभ

-लता बोथरा, बेल्लारी

अ - अज्ञानता के अंधकार को दूर करता है स्वाध्याय।

आ - आग्रह हटाकर आगम की गहराई में उतारने वाला है स्वाध्याय।

इ - इस मानव भव में ही स्वाध्याय सीखने का सुनहरा अवसर मिलता है।

ई - ईख से अधिक मीठा गुणकारी स्वाध्याय रस है।

उ - उफनते दूध को पानी की कुछ बूँदें शांत करती हैं, वैसे ही स्वाध्याय कषायों को शांत करता है।

ऊ - ऊहापोह, संशय, शंका आदि का निवारण एक मात्र स्वाध्याय है।

ऋ - ऋषभदेव प्रभु की वाणी से लेकर प्रभु महावीर की वाणी का सार स्वाध्याय में है।

ए - एनर्जी सहित आलस्य रहित स्वाध्याय करना चाहिए।

ऐ - ऐनक उतार कर मिथ्यात्व की, आचरण में शुद्धता लाना स्वाध्याय है।

ओ - ओवर ऑल स्वाध्याय के बिना दुर्लभ मानव भव अधूरा है।

औ - औदारिक शरीर के द्वारा स्वाध्याय कर सकते हैं। औदारिकादि शरीर से मुक्त भी स्वाध्याय कर सकते हैं।

अं - अंत रहित शुद्ध सम्यक् ज्ञान का झरना बहता है स्वाध्याय से।

अः - अः नहीं अरिहंत बनने का मार्ग है स्वाध्याय यानी स्व का अध्याय।

श्रमणोपासक

समीक्षण ध्यान शिविर आयोजित

आचार्य श्री नानेश के विशेष अवदान समीक्षण ध्यान योग शिविर डॉ. सत्यनारायण जी शर्मा के मार्गदर्शन में विभिन्न स्थानों पर आयोजित किए गए। इस दौरान 8 से 10 सितम्बर को चिकारड़ा में, 1 से 3 अक्टूबर को नाई में, 21 से 23 अक्टूबर को भदेसर में, समता भवन नौलाईपुरा, रतलाम में, 27 से 29 अक्टूबर को देशनोक में तथा 17 से 19 नवम्बर को भींडर में आयोजित हुए शिविरों में मानसिक शांति, स्वास्थ्य समीक्षण, चेतना शक्ति जागरण, क्रोध नियंत्रण हेतु विभिन्न योगों एवं आसनों का अभ्यास कराया गया। सभी कार्यक्रमों में स्थानीय गणमान्यजनों ने भाग लेकर अपने जीवन में उल्लास भरा। डॉ. शर्मा ने एक्यूप्रेशर पद्धति द्वारा विभिन्न बीमारियों का उपचार किया। शिविर के दौरान रतलाम में शासन दीपक श्री आदित्य मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-5, चिकारड़ा में शासन दीपिका साध्वी श्री सुदर्शना श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6, भदेसर में शासन दीपिका साध्वी श्री मनीषा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 एवं नाई में शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का मार्गदर्शन भी प्राप्त हुआ।

-सत्यनारायण शर्मा

श्रमणोपासक

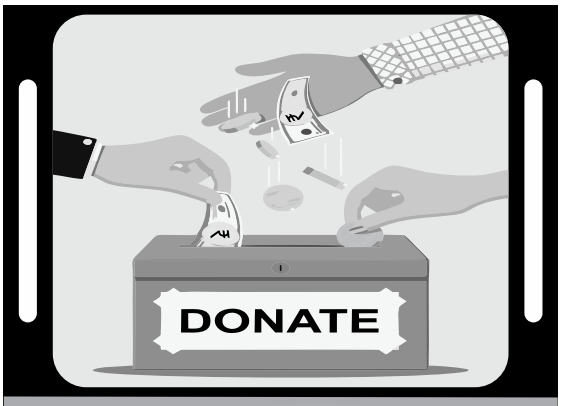

विविध भेंट मार्फत

01 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2023

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है-

संघ शिखर सदस्यता अभियान (सौजन्य से प्राप्त)

1,00,00,000/- सुरेश कुमार जी दक, मैसूर

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

4,40,000/- सोहनलाल जी रांका, ब्यावर

1,00,000/- राजेश जी बच्छावत, बीरगंज

20,000/- निहालचंद जी कोठारी, ब्यावर

समता भवन प्रवृत्ति

समता भवन, कांकरोली

2,00,000/- चंपालाल जी डागा अशोक जी अरुण जी अनिल जी डागा, गंगाशहर/चेन्नई

समता भवन, रावतसर

1,00,000/- चंपालाल जी डागा अशोक जी अरुण जी अनिल जी डागा, गंगाशहर/चेन्नई

समता भवन, संगरिया

51,000/- दौलतराम जी वरुण कुमार जी जैन, संगरिया

समता भवन, रायपुर

50,000/- उत्तमचंद जी देशलहरा, रायपुर

50,000/- शोभना बेन रमणिक भाई ढोलकिया, रायपुर

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

30,00,000/- जेठीदेवी कुमुददेवी श्रद्धा जी सिपानी, बेंगलुरु/उदयरामसर (समता समग्र आरोग्यम् फिजियोथेरेपी सेंटर) (श्री सोहनलाल जी सिपानी की पुण्यस्मृति में)

10,00,000/- विमल जी सिपानी, बेंगलुरु

3,50,000/- निश्चल जी कांकरिया, कोलकाता

5,000/- मदनलाल जी हरीश जी पिछोलिया, आमेट

श्रमणोपासक भेंट

2,100/- प्रवीण कुमार जी बैद, बीकानेर/हावड़ा (श्रीमती पानादेवी सेठिया की पुण्यस्मृति में)

1,100/- प्रियांश जी शांतिलाल जी कदमालिया, उदयपुर

1,100/- सागरमल जी रातड़िया, चित्तौड़गढ़ (श्रीमती चन्द्रकला जी रातड़िया की पुण्यस्मृति में)

500/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

500/- रमेशचंद जी अरुण कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर (श्रीमती मनभरदेवी जैन की पुण्यस्मृति में)

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

9,55,179/- गुप्तदान

3,03,175/- समता युवा संघ, बीकानेर

2,93,000/- कंचन कुमारी जी कांकरिया, कोलकाता

1,000/- उम्मेद सिंह जी सिंघवी, जयपुर

संघ सहयोग (सौजन्य से प्राप्त)

1,11,000/- कन्हैयालाल जी सुशील जी बैद, बीकानेर (पौत्र सम्यक्राज के जन्मोत्सव के उपलक्ष में)

11,000/- हर्षित जी दिव्यम् जी अरिष्ठ जी गोलछा, बीकानेर

इदं न मम (सौजन्य से प्राप्त)

21,00,000/- विमल जी सिपानी, बेंगलुरु

5,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
1,53,000/- अरविंद जी मूथा, ब्यावर
1,01,111/- बाबुलाल जी पोखरना (मधु एजेंसी), जावरा
1,00,008/- प्रेमचंद जी मांगीलाल जी बाफना, बदनावर
88,000/- घेवरलाल जी तुकलिया, भीलवाड़ा
25,500/- सुरेंद्र कुमार जी डागा, इस्लामपुर
21,000/- विपिन जी धम्मानी, रतलाम
21,000/- लाभचंद जी कावड़िया, मुंबई
21,000/- कमलेश जी कोठारी, चेन्नई
12,600/- सुरेश जी चंडालिया, सूरत
11,000/- सुरेश कुमार जी बच्छावत, बीकानेर
11,000/- रतनलाल जी मुकेश कुमार जी राजकुमार जी सुराणा, बेंगलुरु
11,000/- प्रदीप जी सोनावत, दिल्ली
11,000/- मोतीलाल जी महेश कुमार जी सांखला, ईरोड
10,200/- सुबुद्धि जी बरड़िया, सरदारशहर
10,000/- विजयचंद जी बरड़िया, गंगाशहर
8,400/- राजेश कुमार जी मुदित कुमार जी बच्छावत, बीरगंज
5,100/- राहुल जी जैन, फारबीसगंज
5,100/- गुप्तदान, गंगाशहर
5,100/- मदनलाल जी दिलीप कुमार जी पारख, बेंगलुरु
5,100/- अशोक कुमार जी लुणावत, विशाखापट्टनम्
5,000/- बाबुलाल जी देरासरिया, रानासन
5,000/- राजेंद्र जी बैद (जैन), रांची/भीनासर
5,000/- मदनलाल जी पिछोलिया, आमेट
5,000/- सुशील कुमार जी बम्ब, देवली
5,000/- अनिल जी बाफना, शिरपुर
4,200/- कीर्तिकुमार जी धनराज जी गांधी, यवतमाल
4,200/- भैरुदान जी गोलछा, जनकपुरधाम
4,200/- गौतम जी बच्छावत, जनकपुर
4,200/- मनीष जी बच्छावत, जनकपुर
4,200/- राजकुमार जी बच्छावत, भीनासर/जनकपुर
3,120/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नीमच
3,100/- फतेहलाल चांदमल जी हिंगड़, वलसाड़
3,000/- सुंदरलाल जी सिंघवी, गंगापुर
3,000/- अशोककुमार जी गुणधर, दल्लीराजहरा
2,222/- पदम जी सेठिया, बीकानेर
2,200/- सोमेंद्र कुमार जी बम्ब, देवली

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- वीरचंद जी अमोलकचंद जी संचेती, पांसेमल, गुप्तदान, बिबेक जी सेठिया, रायगंज, जयंतलाल जी सौभागमल जी सोनी, बिरमावल, मांगीलाल जी बांठिया, कानवन, हुलासमल जी सेठिया, पंचकुला, चंचल जी गोलेछा, जयपुर
1,500/- प्रकाशचंद जी आंचलिया, पनवेल
1,111/- सोहनलाल जी चोरड़िया, कटिहार

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- रसीलादेवी कांकरिया, रायगंज, लोकेश कुमार जी प्रकाशचंद जी काकरेचा, मनावर, विमलादेवी किशोर जी राठौड़, नागदा, मनीष जी मेड़तवाल, मुंबई, महेंद्र जी चोपड़ा, सेलम्बा, डॉ. सतीश जी फतेहलाल जी राखेचा, सेलम्बा, रावलमल जी भंवरलाल जी चोपड़ा, सेलम्बा, ताराचंद जी आसकरण जी कोटड़िया, सेलम्बा, पंकज कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, आदिश जी जैन, मेरठ, शांतिप्रसाद जी जैन, मेरठ, ऋषभ जी जैन, सवाईमाधोपुर, प्रदीप जी गोलछा, सूरत, अशोक कुमार जी सुराणा, सूरत, राजश्री जी सुराणा, सूरत, प्रकाशचंद जी बम्ब, टोंक, घेवरचंद जी भूरा, मुंबई, गुलाबचंद जी जारोली, बम्बोरा, दिनेश जी चन्द्रा जी बोथरा, फारबीसगंज, कमलेश कुमार जी जैन, सवाईमाधोपुर, गुप्तदान, चेन्नई, कमल जी श्रीश्रीमाल, गंगाशहर
1000/- राजमल जी भंडारी, बड़ीसादड़ी
1000/- लाडुलाल जी चंडालिया, कपासन
1000/- प्रकाशचंद जी डांगी, भीलवाड़ा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- मधु जी शीतल कुमार जी भानावत, उदयपुर, ललित जी भंवरलाल जी मुणत, रतलाम, लाडुलाल जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, शोभा जी विमलचंद जी जैन, कुस्थला, राजेंद्र जी सेठिया, ब्यावर

दानपेटी योजना

1,35,000/- विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु
50,000/- कविता जी यशवंत जी बोथरा, बेंगलुरु
40,000/- जेठीदेवी कुमुद जी सिपानी, बेंगलुरु
8,500/- सीमा जी सिपाणी, बेंगलुरु
6,100/- नीलमचंद जी बैद, राजनांदगाँव
5,100/- आनंद जी नरेंद्र जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
5,100/- श्रवणकुमार जी मनीष जी कोठारी, छोटीसादड़ी
3,500/- इंद्रचंद जी पंकज जी सेठिया, हावड़ा
3,260/- विमलचंद जी सुराणा, गीदम
3,200/- लालचंद जी गुणधर, राजनांदगाँव
3,100/- अतुल जी श्रीश्रीमाल, राजनांदगाँव
3,000/- नीलमचंद जी महेंद्र जी बैद, राजनांदगाँव
3,000/- विमल जी सिपानी, बेंगलुरु
2,800/- आनंद जी नरेश जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
2,200/- अजय जी पारख, राजनांदगाँव
2,200/- अनूपचंद जी मनीष जी पारख, राजनांदगाँव
2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- अनिल कुमार जी मुणोत, आमेट, सुभाषचंद जी सिंघवी, बेंगलुरु **गीदम से-** सुंदरदेवी सुराणा, अशोक कुमार जी बुरड़, आशाबाई झंवरचंद जी बरड़िया, पारसमल जी रमेश कुमार जी सुराणा, **राजनांदगाँव से-** मदनलाल जी पारख, टीकमचंद जी गणेश जी ओस्तवाल, अशोक जी संतोष जी पारख, वीरेंद्र कुमार जी नाहटा, नरेश जी बैद, नरेंद्र जी सुशील जी शाह, राजेंद्र जी बाफना, नथमल जी गिड़िया, किशोर जी बैद, मदनलाल जी महावीर जी पारख, **छोटीसादड़ी से-** सुशील कुमार जी डूंगरवाल, नेमीचंद जी डूंगरवाल, पीयूष कुमार जी तेजीवत, लक्ष्मीलाल जी कोठारी, अनिल कुमार जी प्रतीक जी नागौरी, राकेश कुमार जी मुरड़िया
2,000/- गेंदमल जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
1,600/- शिवराज जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव
1,600/- तनुजा जी पोखरना, बेंगलुरु
1,551/- ओमप्रकाश जी कांकरिया, राजनांदगाँव
1,500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- राजा जी ओस्तवाल, राजनांदगाँव, उत्तमचंद जी बाफना, राजनांदगाँव, अशोक कुमार जी बैद, राजनांदगाँव, महावीर कुमार जी बैद, हावड़ा, नरेंद्र कुमार जी श्रेणिक जी नाहर, छोटीसादड़ी, नेहा जी जैन, जोधपुर
1,400/- शकुंतला देवी बैद, हावड़ा
1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- संतोषचंद जी अशोक कुमार जी सिपानी, हावड़ा, राजेंद्र कुमार जी अभिषेक जी खींवसरा, बेंगलुरु, नरेंद्रकुमार जी प्रकाश जी बोहरा, बेंगलुरु, **गीदम से-** शांतिलाल जी सुराणा, जवाहरलाल जी शांतिलाल जी सुराणा, तेजमल जी मदनलाल जी छाजेड़, गौतमचंद जी बाफना, मोहनलाल जी किरणबाई बुरड़, महावीर जी बुरड़, विजय कुमार जी जसराज जी सुराणा, मोतीलाल जी दिनेश कुमार जी सालेचा, **राजनांदगाँव से-** आशीष जी ओस्तवाल, तुषार जी कांकरिया, अनिल जी पारख, भावनादेवी पारख, सुगनचंद जी बाफना, रमेशचंद जी चोरड़िया, अशोक जी बाफना, नीलमचंद जी पारख, आशीष जी गुलेच्छा, विनोद जी बाफना, राकेश जी बाफना, मनीष जी बाफना, देवराज जी सुराणा, सुगनचंद जी अंकित जी राजेंद्र जी गोलछा, नथमल जी कोटड़िया, सुरेश जी भंसाली, अक्षय जी अभय जी सांखला, राजेश जी गुलेछा, गंभीरमल जी सेठिया, कानमल जी बालचंद जी पारख, मिश्रीलाल जी पारख, गौतमचंद जी पारख, गुलाबचंद पारख, रमेश जी बाफना, राकेश जी पारख, इंद्रचंद जी बाफना, अमृतलाल जी पारख, प्रकाशचंद जी पारख, मनोज जी ओस्तवाल, मदनलाल जी कवाड़, मोहनलाल बाफना, प्रकाशचंद जी प्रभात जी कांकरिया, सुनील जी ओस्तवाल, प्रकाशचंद जी सिंघी, फूलचंद जी विजय कुमार जी पारख, पूनम जी गिड़िया, नितिन जी ओस्तवाल, लोकेश जी नाहटा, संजय जी सुराणा, अभिषेक जी सुराणा, संतोष जी सुराणा, युगराज जी सुराणा, शांतिलाल जी सुराणा, प्रवीण जी सुनील जी खटोर, सुरेश जी सुराणा, जवरीलाल जी सांखला,

पूनमचंद जी ओस्तवाल, गौतमचंद जी सुराणा, भागचंद जी रोमिल जी पारख, अरुण जी आदित्य जी चोपड़ा, मयंक जी रायसोनी, उत्तमचंद जी लोढ़ा, नेमीचंद जी बनेचंद जी गिड़िया, कन्हैयालाल जी चोरड़िया, राजेश जी बाफना, मांगीलाल जी लोढ़ा, ज्ञानचंद जी पारख, मानकचंद जी बाफना, उत्तमचंद जी सोपान जी बाफना, कुशालचंद जी अमित कुमार जी पारख, टीकमचंद जी ओस्तवाल, उत्तमचंद जी श्रीश्रीमाल, सुगनचंद जी राजेश जी बाफना, प्रकाशचंद जी सांखला, प्रकाशचंद जी विनय जी सिंघी, भोमराज जी ललित जी चोरड़िया, दिनेश जी आशीष जी ओस्तवाल, **छोटीसादड़ी से-** अशोक कुमार जी डूंगरवाल, सुमति कुमार जी चावत, राजमल जी पंकज जी मुरड़िया, सुजानमल जी तेजीवत, कांतिलाल जी मुरड़िया, जसवंतकुमार जी कास्मां, सौभाग्यसिंह जी मेहता

1,027/- महेंद्र जी ऋषभ जी कवाड़, राजनांदगाँव

1,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- शांतिलाल जी नीलमचंद जी बुरड़, गीदम, राजेंद्र जी पारख, राजनांदगाँव, गौतमचंद जी गौरव जी पारख, राजनांदगाँव, पुखराज जी ओमप्रकाश जी कांकरिया, राजनांदगाँव, आशाबाई जी बोथरा संजय कुमार जी बोथरा, हावड़ा, खुशाल जी डूंगरवाल, छोटीसादड़ी, विजय कुमार जी बरड़िया, हावड़ा, कांतादेवी आंचलिया, हावड़ा

900/- गुप्तदान सर्वधर्मी परिवार, छत्तीसगढ़

800/- ललित जी चोरड़िया, राजनांदगाँव

750/- धनराज जी बुरड़, गीदम

700/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- गीदम से- अरुण जी देवेंद्र जी सुराणा, राजेंद्र कुमार जी चिराग जी सुराणा, स्वरूपचंद जी रावतमल जी सुराणा, पारसमल जी आशीष कुमार जी लोढ़ा, **राजनांदगाँव से-** निलेश जी पारख, प्रकाश जी सतीश जी पारख, गुलाब जी विकास जी पारख, रमेश जी चिराग जी बाफना

653/- गंभीरमल जी प्रवीण जी सेठिया, राजनांदगाँव

651/- मोहनलाल जी नाहटा, राजनांदगाँव

610/- संजय जी श्रीश्रीमाल, राजनांदगाँव

501/- राजू कुमार जी सांखला, राजनांदगाँव

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- केवलचंद जी विनोद जी पारख, दुर्ग कोंडल, **गीदम से-** नरेंद्र जी सुराणा, गौतम जी सुराणा, मदनलाल जी सुराणा, रावतमल जी लोढ़ा, रेखचंद जी मुकेश जी गोलछा, मिलापचंद जी जैन, गौतमचंद जी नाहटा, इंद्रचंद जी चिराग जी सालेचा, धनराज जी अशोक जी सुराणा, मदनलाल जी रवि जी, मेघराज जी संतोष जी गोलेछा, पुखराज जी बलाद, नेमीचंद जी विकास जी सुराणा, माणकलाल जी भंसाली, राधा जी सुराणा, खेतमल जी अशोक जी भंसाली, सुभाषचंद गणेश जी लोढ़ा, पारसमल जी गोलछा, **राजनांदगाँव से-** विकास जी टाटिया, अभय जी पारख, संतोष जी ओस्तवाल, युगल किशोर जी बाफना, प्रफुल्ल जी कवाड़, जीवनचंद जी गिड़िया, अशोक कुमार जी गिड़िया, रानुलाल जी गिड़िया, उम्मेद जी गिड़िया, हुकमचंद जी गिड़िया, महेंद्र जी कवाड़, चंदनबाला जी लुणिया, हरीशचंद जी सांखला, ललित जी पारख, अनिल जी ओस्तवाल, उत्तमचंद जी ओस्तवाल, गौतमचंद जी बाफना, लालचंद जी चोरड़िया, आनंद जी कोटड़िया, झूमरलाल जी नाहटा, नितेश जी बाफना, प्रवीण जी चोरड़िया, छगनलाल जी नाहटा, जसराज जी बाफना, सुरेश जी रमेश जी, मनीष जी श्रीश्रीमाल, गौतमचंद जी पारख, शोभा जी चोपड़ा, सुनील जी लोढ़ा, नरेंद्र जी नाहटा, प्रकाश जी सांखला, प्रभात जी बाफना, टीकमचंद जी ज्ञानचंद जी पारख, लक्ष्मीलाल जी सांखला, मनीष जी ललवाणी, रोहित जी पारख, अनूप कुमार जी टाटिया, दीपक जी गिड़िया, संपतलाल जी पारख, दीप्ति जी सुनील जी पारख, रमेश जी सिंघी, सतीश जी पारख, संजय जी पारख, संदीप जी पारख, सुमेरमल जी अमृतलाल जी पारख, दीपक जी बाफना, मोहनलाल जी नाहटा, पारसमल जी मधु जी ओस्तवाल, फूलचंद जी पारख, सुरेश जी रमेश जी ओस्तवाल, विकास जी निलेश जी टाटिया, मनोज कुमार जी अंकित कुमार जी ओस्तवाल,

छोटीसादड़ी से- राजीव कुमार जी सिद्धार्थ जी नलवाया, माणकचंद जी सुराणा, पारसमल जी मुरड़िया, पारसमल जी कालिया, विमल कुमार जी शीतल जी नलवाया, संजय कुमार मुणोत, विमल कुमार जी कोठारी, **हावड़ा से-** अभय कुमार जी लुणिया, हावड़ा, लीलादेवी धारीवाल, लूनकरण जी सुरेश जी भूरा, रीना जी बांठिया, **बेंगलुरु से-** शांतिलाल जी केवलचंद जी डागा, नवरतन जी कोठारी, महावीरचंद जी मुणोत, रोहित कुमार जी गौतमचंद जी गुलगुलिया, आनुराम जी अशोक जी खींवसरा, अशोक कुमार जी प्रतीक कुमार जी बंट, **भदेसर से-** कमलेश जी हर्षित जी सियाल, अभय जी संजय जी मोदी, ज्ञानमल जी मोदी, माणकलाल जी राजू जी खटोड़, सुरेश जी रजत जी सरूपरिया, हीरालाल जी आशीष जी खटोड़, शांतिलाल जी कोमल जी जैन

जीवदया

11,000/- सुशीलादेवी चौधरी (अमृतलाल जी चौधरी की पुण्यस्मृति में)

10,500/- शांतिदेवी स्व. गुलाबचंद जी लोढ़ा परिवार (भविष्य जी लोढ़ा के मासखमण तप के उपलक्ष में)

5,100/- विजयसिंह जी वर्धमान जी पींचा, बिराटनगर

5,100/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, नगरी

5,000/- गुप्तदान

5,000/- श्री साधुमार्गी जैन महिला मंडल, छोटीसादड़ी

4,100/- श्री जैन श्वेताम्बर संघ, चारामा

3,100/- श्री स्थानकवासी जैन संघ श्री संघ, डोंडी

2,500/- हरिसिंह जी नरेंद्र कुमार जी कंठालिया, बड़ीसादड़ी

2,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- अशोक कुमार मुकेश जी बैद, गंगाशहर (श्री चैनरूप जी बैद की पुण्यस्मृति में), कांता देवी गौतमसिंह जी बैद, बीकानेर, विकास जी जवाहरलाल जी भूरा, जलगाँव, अमरचंद जी सांखला, जगदलपुर, तारादेवी जुगराज जी डागा, मुंबई, गुप्तदान, गुप्तदान सर्वधर्मी परिवार, छत्तीसगढ़, पुनमचंद जी कमल कुमार जी पूरण जी बोथरा, गोलकगंज/गंगाशहर (श्री सुंदरलाल जी बोथरा की पुण्यस्मृति में), पुष्पलता जी बारमेचा, भीलवाड़ा

2,000/- मनीष जी मेड़तवाल जैन, मुंबई

1,500/- पीयूष जी मंडोत, पुणे

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रियांश जी शांतिलाल जी कदमालिया, उदयपुर, रोशन सी.ए. चौधरी, बेगूँ, राजकुमार जी पुगलिया, भीनासर (श्री निर्मल जी पुगलिया की द्वितीय पुण्यतिथि पर), लाडुलाल जी जैन, प्रकाश जी मोनिका जी मुकेश जी मेहता, भीम, भंवरलाल जी संदीप कुमार जी बांठिया, हावड़ा, फतेहलाल जी संपतलाल जी कावड़िया, उदयपुर, समता महिला मंडल, मैसूर, प्रकाशचंद्र जी सरूपरिया, उदयपुर, किरण जी जैन, होशियारपुर, श्रीमती प्रभा जी जैन, धुबड़ी (पुत्र संयम की सगाई के उपलक्ष में), गुलाबदेवी बच्छावत (श्री प्रतापचंद जी की पुण्यस्मृति में), मदनलाल जी सत्यनारायण जी जैन, कोटा

1000/- समता महिला मंडल, डोंडी

1000/- प्रवीण कुमार जी पींचा, थांदला

600/- कैलाशचंद जी जैन, सवाईमाधोपुर

555/- मूलचंद जी छाजेड़, साजा

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- कार्तिक जी जैन, डारोली, गुप्तदान, जावरा, महेंद्र कुमार जी जैन, पछाला, गुप्तदान, विजयनगर, गुप्तदान, भीलवाड़ा, केवलचंद जी विनोद जी पारख, दुर्ग कोंडल, गुप्तदान, रतलाम, नाथुलाल जी जारोली, निम्बाहेड़ा, सुगनचंद जी राधाकिशन जी, नोखा, सुरेंद्र कुमार जी कोठारी, बेंगलुरु, राजेंद्र कुमार जी भूरा, गुलाबबाग, मनोज जी भंडारी, इंदौर

समता जनकल्याण प्रन्यास

50,000/- चेतन कुमार जी केतन कुमार जी मेहता (श्री प्रमोदरंजन जी मेहता की पुण्यस्मृति में)

समता मिति योजना

5,100/- गुप्तदान

समता प्रचार संघ

75,730/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु

51,000/- विनोद जी चोरड़िया, मुंबई

25,000/- श्री स्थानकवासी साधुमार्गी जैन संघ, सिलचर

21,000/- सुरेश कुमार जी नरेंद्र कुमार जी पुत्र श्री भक्तराम जी जैन, गुरुग्राम

21,000/- रूपरेखा जी गुलगुलिया, जामनगर

21,000/- अनिल जी मनोज जी नवीन जी देशलहरा, दुर्ग

5,000/- संपतदेवी श्रीश्रीमाल, जयपुर

2,000/- मनीष जी मेड़तवाल, मुंबई

समता संस्कार पाठशाला

2,100/- गुप्तदान

1,100/- प्रकाशचंद्र जी सरुपरिया, उदयपुर

1,100/- राजश्री सुभाषकुमार जी लुणिया, बीकानेर

501/- मोनालिसा जी डागा, रायपुर

500/- गुप्तदान, जावरा

समता सरिता सेवा/विहार सेवा

11,000/- गुप्तदान, बीकानेर

10,500/- शांतिदेवी स्व. गुलाबचंद जी लोढ़ा परिवार (भविष्य जी लोढ़ा के मासखमण तप के उपलक्ष में)

5,100/- सम्पतलाल जी ताराचंद जी धारीवाल, फरीदाबाद

3,100/- मैनादेवी चोरड़िया, काठमांडु

3,100/- पूजा जी जैन, दिल्ली

2,100/- गुप्तदान

2,100/- गुप्तदान सर्वधर्मी परिवार, छत्तीसगढ़

2,100/- गुप्तदान, बेंगलुरु

1,100/- अनिल कुमार जी मुणोत, आमेट (श्री ताराचंद जी मुणोत की पुण्यस्मृति में)

500/- फूलचंद जी किशनलाल जी लोढ़ा, शहादा

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

5,100/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, दिल्ली

5,100/- सूरजदेवी शांतिलाल जी पटवा, हावड़ा

5,100/- शांतिलाल जी सिंघवी, पाली मारवाड़

5,100/- रामविलास जी रूपेश जी जैन, कोटा

5,000/- विजय कुमार जी झमकलाल जी टंच, बदनावर

5,000/- सुशील कुमार जी रवि कुमार जी कांतिलाल जी गोरेचा, रतलाम

3,000/- गुप्तदान, प्रतापगढ़

3,000/- पूजा जी गौरव जी पोरवाल, नीमच

3,000/- ज्योतिदेवी पींचा, चेन्नई

2,500/- दिनेश जी सिपानी, उदयरामसर/दिल्ली

2,100/- कीर्ति कुमार जी आजाद कुमार जी दिनेश कुमार जी नलवाया (श्री गणपतलाल जी की स्मृति में)

2,100/- गुप्तदान, बेंगलुरु

2,000/- गुप्तदान

1,100/- जुगलकिशोर जी पुखराज जी चोपड़ा, सेलम्बा

1,000/- टीकमचंद जी सालेचा स्वरूपचंद जी चोरड़िया, खैरागढ़

1,000/- ललित कुमार जी गांधी, कांकेर

1,000/- अशोक कुमार जी ज्ञानचंद जी श्रीश्रीमाल, पाली मारवाड़

1,000/- इंद्रचंद जी बांठिया, पाली मारवाड़

700/- पदमचंद जी कोटड़िया, नंदुरबार

500/- सुंदरलाल जी शुभम जी जैन, चौमहला

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

6,600/- गुप्तदान, बीकानेर

2,100/- कुसुम जी सेठिया, छिंदवाड़ा

2,000/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से- निर्मला जी कांकरिया, नरेंद्र कुमार जी कांकरिया, संतोष कुमार जी कांकरिया, ऊषा जी कोठारी, रतनबाई नाबेड़ा, सज्जनदेवी बोहरा, संपतबाई श्रीश्रीमाल, शशिकला जी डांगी, दिलीप कुमार जी डांगी, चुकीकंवर जी बोरदिया, प्रेमचंद जी बोरदिया

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रियांश जी शांतिलाल जी कदमालिया, उदयपुर, राजेंद्र कुमार जी भूरा, गुलाबबाग, **ब्यावर से-** पारसकंवर जी बाबेल, शीतल जी कांकरिया, इंद्रा जी खींचा, मुनियादेवी बाबेल, मधुबाला जी श्रीश्रीमाल, मनोरमाबाई डागा, सीमा जी हिंगड़, मानकंवर जी पीपाड़ा, वंशिता जी डांगी, मोनिका जी रांका, विमलादेवी बाबेल

1,000/- समतादेवी ओस्तवाल, ब्यावर

700/- ममता जी श्रीश्रीमाल, ब्यावर

700/- अन्नू जी जैन (गुलेछा), ब्यावर

500/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- ब्यावर से- अनीता जी मुणोत, स्वेता जी बोहरा, अनीता जी श्रीश्रीमाल, कमलादेवी बच्छावत (श्री केवलचंद जी बच्छावत की पुण्यस्मृति में), वनिता जी नाहर, रेखा जी छल्लानी, सरिता जी देरासरिया, सुमनदेवी लोढ़ा (पिंकी), पुष्पा जी डूंगरवाल, ममता जी चोरड़िया, बरखा जी बुरड़, चंद्रकांता जी बाबेल, चांदनी जी गुलेछा, सुशीला जी खींचा, मधु जी खींचा, अर्चना जी रांका

छात्रवृत्ति (महिला समिति)

71,000 /- आनंद जी चोरड़िया, बड़ोदरा (डॉ. यश आनन्द जी चोरड़िया का एम.डी. मेडिसन में एडमिशन पर)

:: **विशेष** ::

संघ साधारण सदस्यता-1, श्रमणोपासक सदस्यता-24, महिला समिति सदस्यता-36, साहित्य सदस्यता-14

:: 01 अप्रैल 2023 से 31 अक्टूबर 2023 तक ::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में अधोलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन कार्यालय को जमाकर्ता के नाम एवं किस मद हेतु राशि जमा की गई इसकी सूचना प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नंबर 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
12.04.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.04.23	1,100/-	UPI सिंपल जैन
08.05.23	3,500/-	UPI राहुल
12.05.23	501/-	UPI विपुल जैन
22.05.23	1,000/-	UPI विनोद बम्ब
06.07.23	3,000/-	नकद
20.07.23	1,000/-	UPI पिंकू
26.07.23	1,000/-	UPI प्रियंका
27.07.23	2,000/-	UPI आशीष
20.08.23	1,001/-	UPI जय प्रकाश
06.09.23	5,500/-	Cheque 403
19.09.23	2,100/-	UPI संजय
23.09.23	5,100/-	UPI गुलाब जैन
04.10.23	3,100/-	UPI मुकुल बोहरा
05.10.23	39,200/-	Ch. No. 732198
11.10.23	2,500/-	UPI ऋषभ
15.10.23	1,100/-	UPI विकास
16.10.23	21,000/-	Ch. No. 732210
27.10.23	7,000/-	UPI सतीश जैन
27.10.23	11,001/-	UPI संकेत
30.10.23	2,100/-	UPI स्तुति
31.10.23	2,100/-	Ch. No. 612857
यूको बैंक		
06.07.23	5,100/-	नकद
11.08.23	26,120/-	नकद
ए.यू. बैंक		
16.08.23	20,600/-	नकद

उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें। -जय जिनेन्द्र!

श्रमणोपासक

।। जय महावीर ।।

स्मृतिशेष

::::: जन्म :::::
10 जून 1944

::::: निधन :::::
17 नवम्बर 2023

सुश्रावक श्री नथमल जी बोथरा, गंगाशहर

सहजता, धर्मनिष्ठ, धुन के धनी, कर्त्तव्यनिष्ठ, सादगी की प्रतिमूर्ति सुश्रावक **श्री नथमल जी बोथरा** गंगाशहर निवासी का जन्म पिता स्व. तोलाराम जी बोथरा एवं मातुश्री स्व. श्रीमती पानादेवी बोथरा के घर-आँगन में हुआ जीवन के प्रारंभ से ही आप संस्कारों की धरोहर को संजोते हुए कर्मठता के ओर अग्रसर हुए और कर्मठता व मेहनत को अपनी जीवन धरोहर बना लिया।

कड़ी मेहनत व उतार-चढ़ाव के बीच आप दृढ़ प्रतिज्ञ होकर अपने दायित्वों का निर्वहन करते रहे। आप धर्मनिष्ठ एवं कर्त्तव्यनिष्ठ सुश्रावक थे। प्रतिदिन सामायिक, रात्रिभोजन त्याग का आपके नियम था। काफी समय से अस्वस्थ होते हुए भी पूर्ण समभाव से धर्म मार्ग पर अग्रसर थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं। आपकी आत्मा शीघ्र ही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बने यही मंगलकामना है।

श्रद्धावनत्

शांतिदेवी (धर्मपत्नी), **विमलादेवी-केशरीचंद सांड** (बहन-बहनोई), **मैनादेवी बैद** (बहन), **शिखरचंद-लीलादेवी, अशोक कुमार-सरलादेवी** (भ्राता-भ्रातावधू), **विनोद कुमार-सरिता, दिलीप-रंजू** (पुत्र-पुत्रवधू), **सुमित-रेखा, अमित-ज्योति, अरिहंत** (भतीजा-वधू), **कुसुमलता-किशोर कुमार भंसाली** (पुत्री-दामाद), **रिंकु-राजकुमार सुराणा, शिल्पा-सुरेश कुमार बुच्चा, अन्नू-जितेश दुगड़, सोनम-नितिन बंसल** (भतीजी-दामाद), **प्रिया, लब्धि, मुदित, दीक्षिता, वान्या, काव्य** (पौत्र, पौत्री), **अंकित-सीमा** (पौत्र-पौत्रवधू), **उदयवीर** (पड़पौत्र), **अमित-नीतू भंसाली** (दोहिता-वधू), **पूजा-प्रशांत छल्लाणी, मोनिका-नितेश** (दोहिती-जंवाई), **आदित्य, हिताक्षी** (पड़दोहिता, पड़दोहिती)

प्रतिष्ठान : **देवभूमि विनिमय प्रा.लि., बीकानेर**

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

स्मृतिशेष

गुण्डरदेही। संथारा साधक **स्व. श्री कंवरलाल जी देशलहरा** का जीवन किसी परिचय का मोहताज नहीं है। आप का भक्तिमय जीवन आचार्य श्री रामेश के चरणों में समर्पित था।

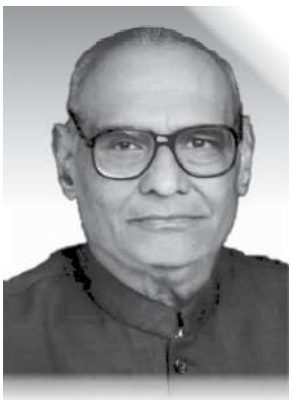

आप गत कुछ माह से अस्वस्थ थे। अस्वस्थता में भी आपने संपूर्ण परिवार को आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. के प्रति श्रद्धावान रहने की शिक्षा दी। आपने 14 अक्टूबर 2023 को नश्वर देह का त्याग कर अनंत की ओर महाप्रयाण कर दिया। आपकी रग-रग में धर्म बसा हुआ था। आपने 17 वर्षों तक निरंतर पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी सेवा दी। गुण्डरदेही में समता भवन का निर्माण में भी आपका विशेष सहयोग था। आप श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के महाप्रभावक सदस्य थे।

आपकी धर्मसहायिका शारदाबाई संस्कारों से परिपूर्ण महिला थी। आपने शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा. के मुखारविंद से तिविहार संथारे का प्रत्याख्यान ग्रहण किया। आपका 22 घण्टे का प्रतिपूर्ण संथारा 10 जून 2023 को सीझ गया।

आपका जीवन प्रेरणादायी था। आप आदर्श मार्गदर्शक थे। आप अपने पीछे तीन पुत्र-पुत्रवधू, तीन पुत्रियाँ-दामाद, पाँच पौत्र, चार पौत्रियाँ, 4 प्रपौत्र, 3 प्रपौत्रियों आदि से भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं। आप द्वय की आत्माएँ सभी कर्मों को नष्ट कर अव्याबाध सुख में लीन हो जाएँ यही प्रार्थना है।

श्रद्धावनत्

गुलाबचंद, सुभाषचंद (भाई)
अशोक, विनोद, प्रमोद (पुत्र)
मनोज, अमित, दर्शन, दीपेश, आलोक, अंकित (पौत्र)
एवं समस्त देशलहरा परिवार
गुण्डरदेही जिला बालोद (छत्तीसगढ़)

विनम्र श्रद्धांजलि

मैसूर। सुश्रावक प्रकाशचंद्र जी सुपुत्र स्व. श्री अंबालाल जी वया का 74 वर्ष की आयु में 05 अगस्त को देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। उपवास, बेला, तेला और पाँच आदि अनेक तपाराधनाएँ आपने की हुई थीं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

इंदौर। सुश्राविका पानबाई धर्मपत्नी स्व. श्री तेजप्रकाश जी चौधरी का 18 अक्टूबर को निधन हो गया। आप देव, गुरु, धर्म के प्रति समर्पित थीं। आपने 30 से अधिक अठाई एवं 20 से अधिक ओलीजी एवं कई तेले व अन्य तपस्याएँ की। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

गंगाशहर। सुश्रावक विमलकुमार जी सुपुत्र स्व. श्री प्रेमचंद जी बोथरा हावड़ा प्रवासी का 24 अक्टूबर को देहावसान हो गया। आपकी देव, गुरु, धर्म के प्रति गहरी आस्था थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

शहादा। सुश्राविका ज्योति जी धर्मपत्नी नरेंद्र जी चोरड़िया का 21 अक्टूबर को 57 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप हँसमुख, सरल, सौम्य व्यक्तित्व की धनी थी। आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट आस्था थी। आप साध्वी श्री रिद्धप्रभा श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय भाभी जी एवं साध्वी श्री निरामगंधा श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय दादी जी थी। आपने कैंसर की बीमारी को समभावों से सहन किया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

देशनोक। सुश्राविका यशोदा देवी धर्मपत्नी स्व. श्री माणकचंद जी लुणिया का 25 अक्टूबर को 75 वर्ष की आयु में निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी महिला थीं। आचार्य श्री नानेश-रामेश के प्रति आपकी पूर्ण आस्था थी। आपने उपवास, बेला, मासखमण, 1 से 15 तक की लड़ी एवं लगभग 40 वर्ष सावण-भादवा एकांतर तप आदि किए हुए थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

देशनोक। सुश्रावक शांतिलाल जी छल्लानी (दिल्ली प्रवासी) का 01 नवंबर को 75 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा थी। आप मृदुभाषी, मिलनसार व्यक्तित्व के धनी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

गुण्डरदेही। संथारा साधिका सुश्राविका शारदाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री कंवरलाल जी देशलहरा का महाप्रयाण हो गया। आपकी आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। आपने लगभग 11 अठाई, नवपद एवं 20 स्थानक जी की ओली, उपवास, बेला, तेला आदि तपस्याएँ की हुई थी। प्रतिदिन 5-6 सामायिक व पोरसी का लक्ष्य रखती थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

चिंतन की कड़ियाँ

पहले हो जीने का ज्ञान

जीवन जीने के कतिपय बिन्दु जीवन को सही दिशा दे सकते हैं। यथा–

1. अपने लाभ में संतुष्ट रहना।
2. दूसरों की बढ़त से आहत नहीं होना।
3. संवादात्मक हो जीवनशैली।
4. अभिनिवेश से दूर रहें।
5. कर्त्तव्यों को तय करें।
6. आदरणीय भावना को विकसित करें।
7. स्पष्टीकरण करने की जरूरत न हो।
8. अन्तर द्वन्द्व की स्थिति पैदा न हो।
9. स्वीकार से भी त्याग को महत्त्व दें।

(ब्रह्माक्षर)

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

केसरिया कार्यशाला

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति की महत्वपूर्ण प्रवृत्ति है '**केसरिया कार्यशाला**' साधुमार्गी श्राविकाओं की विभिन्न रुचियों, क्षमताओं, कलाओं को निखारने के साथ-साथ उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करती है। जैसा कि आप सभी को ज्ञात है कि पूर्व में केसरिया कार्यशाला में वृक्ष के दस भाग, सवणे णाणे का थोकड़ा, अनन्य भूषण, स्त्रियों की 64 कलाएँ आदि विषयों पर कार्यशाला हो चुकी है।

अब आगाज हुआ है केसरिया कार्यशाला के एक और नए सफर का .... '**आचार्य की 8 संपदाएँ**' जो कि श्री दशाश्रुतस्कन्ध के चतुर्थ अध्ययन से उदधृत है।

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब वनराय।
सात समुद्र की मसि करूँ, गुरु गुण लिखा न जाए।।

केसरिया कार्यशाला का यह सफर आचार्य की 8 संपदाओं पर आधारित होगा, जिनसे हमारे आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. सुशोभित हैं। हर कार्यशाला में आचार्य की अलग-अलग संपदा, उनके गुणों को सविस्तार जानने का सुअवसर हमें मिलेगा। विभिन्न क्रियाकलापों, धार्मिक गतिविधियों, प्रतियोगिताओं के माध्यम से हम सभी को इन आठ संपदाओं के विषय में आगमिक जानकारी प्राप्त होगी।

धार्मिक कार्य

विशेष तप-त्याग

आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. के 24वाँ पुण्य स्मृति दिवस एवं
आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष पर

:: मेवाड़ अंचल ::	
भीलवाड़ा	**मासखमण-** स्नेहलता जी मुरड़िया, **एकासन का मासखमण-** इंद्रा जी नागौरी।
बोहेड़ा	**मासखमण-** कंचनबाई भंडारी, **15 की तपस्या-** सरिता जी धींग, **9 की तपस्या-** अनिता जी धींग।
लसड़ावन	**11 की तपस्या-** सीमा जी बम्ब, ललिता जी लसोड़, **9 की तपस्या-** प्रमिला जी कोठारी, रवीना जी बम्ब।
भींडर	**9 की तपस्या-** वंदना जी वया, दीपिका जी खेरोदिया।
प्रतापगढ़	**9 की तपस्या-** सीमा जी मोगरा, मधुबाला जी बोरदिया।
बम्बोरा	**षट्रस तप-** कमलाबाई वया, यामिनिका जी वया, नीलम जी पितलिया।
छोटीसादड़ी	**षट्रस तप-** रंजना जी चावत।
:: बीकानेर-मारवाड़ अंचल ::	
नागौर	**एकांतर की तपस्या-** विनोददेवी संखलेचा (गतिमान)
:: मुंबई-गुजरात अंचल ::	
अहमदाबाद	**एकांतर की तपस्या-** कलाबेन चपलोत, लक्ष्मी जी संचेती।
सूरत	**षट्रस तप-** नीलम जी बुच्चा।
:: पूर्वोत्तर अंचल ::	
गुवाहाटी	**षट्रस तप-** धनलक्ष्मी जी कोठारी, सरोजदेवी भूरा, मंजू जी पारख, रिया जी बैद, पुष्पादेवी पुगलिया, सोमादेवी बैद, चंदादेवी गोलछा, मंजू जी पटवा, किरण जी कांकरिया, लीला जी नवलखा।
:: दिल्ली-पंजाब-हरियाणा अंचल ::	
पंचकुला	**15 एकासन-** इंद्रा जी सेठिया, **षट्रस मासखमण-** संजू जी बैद, अनिता जी सेठिया, ममता जी बोथरा, अंजू जी भूरा, जयश्री जी भूरा, सुमन जी रामपुरिया।

सामाजिक कार्य

क्र.सं.	क्षेत्र	विवरण
1.	छोटीसादड़ी	समता महिला मंडल द्वारा ₹5,000 की धनराशि जीवदया में भेंट की गई।
2.	बड़ीसादड़ी	समता महिला मंडल द्वारा ₹4,000 की धनराशि का अनाज कबूतरों को डाला गया।
3.	लसड़ावन	समता महिला मंडल द्वारा प्रत्येक माह गायों को चारा डाला जाता है।
4.	हुबली	गौशाला में लापसी एवं चारा वितरित किया गया।

क्र.सं.	क्षेत्र	विवरण
5.	सूरत	31 अक्टूबर को समता महिला मंडल एवं बहू मंडल द्वारा वात्सल्यपूरम अनाथालय के बच्चों में भोजन वितरण का कार्यक्रम हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।
6.	अहमदाबाद	85 साधार्मिक भाई-बहनों को कपड़े एवं दैनिक उपयोग के सामान वितरित किए गए।
7.	वलसाड	अनाथ आश्रम के बच्चों को स्टेशनरी दी गई एवं खाना वितरित किया गया।
8.	मुंबई	टाटा कैंसर हॉस्पिटल तथा NAB Blind Hospital में भोजन वितरण एवं सर्वधर्मी सहायता के अंतर्गत अन्नदान किया गया।
9.	कोकराझार	समता महिला मंडल द्वारा जीवदया के अंतर्गत 5100 की धनराशि भेंट की गई।
10.	तेजपुर	आचार्य श्री नानेश के 24वें पुण्यस्मृति दिवस के उपलक्ष में समता महिला मंडल द्वारा घोड़ामारी गौशाला में गायों के लिए एक गाड़ी चारा डाला गया।

धार्मिक शिविर

श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति के तत्वावधान में देश के अनेक क्षेत्रों में चातुर्मासार्थ विराजित चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयान्तर्गत शिविरों के आयोजन किए गए, जिनका विवरण इस प्रकार है-

क्र.सं.	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य	विषय
1.	चित्तौड़गढ़	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.	नौ तत्त्व ज्ञान, बच्चों द्वारा प्रदर्शनी शिविर
2.	प्रतापगढ़	शासन दीपिका साध्वी श्री विनय श्री जी म.सा.	नौ तत्त्व ज्ञान
3.	बोहेड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री सिद्धप्रभा जी म.सा.	चक्रवर्ती की रिद्धि यात्रा
4.	लसड़ावन	शासन दीपिका साध्वी श्री विद्यावती श्री जी म.सा.	निर्दोष भिक्षांजलि शिविर
5.	मंगलवाड़	शासन दीपिका साध्वी श्री समता श्री जी म.सा.	मन की एकाग्रता, शब्दों की ताकत
6.	नोखा	शासन दीपिका साध्वी श्री सुसमृद्धि श्री जी म.सा. साध्वी श्री सुचारू श्री जी म.सा.	यू-टर्न : जिन्दगी का सुहाना मोड़
7.	नगरी	शासन दीपिका साध्वी श्री सौम्यशीला श्री जी म.सा.	आध्यात्मिक आरोग्यम्
8.	डौंडीलोहारा	शासन दीपिका साध्वी श्री मंजुला श्री जी म.सा.	साधना शिविर
9.	खरियार रोड	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.	14 नियम, नौ तत्त्व, जैन जैनत्व का ज्ञान
10.	हैदराबाद	शासन दीपक श्री विदेह मुनि जी म.सा.	समता संस्कार शिविर
11.	बेल्लारी	शासन दीपिका साध्वी श्री सुप्रभा श्री जी म.सा.	कोई बात नहीं
12.	सूरत	शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा श्री जी म.सा.	करें ज्ञान, जानें विज्ञान, पेरेंटिंग शिविर
13.	अहमदाबाद	शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीलाकँवर जी म.सा. (मोड़ी वाले)	छः काय का थोकड़ा
14.	वापी	साध्वी श्री मर्यादा श्री जी म.सा.	अहोदानम्-अहोदानम्

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)

उत्क्रांन्ति एवं प्रतिक्रमण युक्त टीम - 2023-25

क्र.	पद	नाम व स्थान
1.	राष्ट्रीय अध्यक्षा	पुष्पा मनीष जी मेहता (चित्तौड़गढ़)
2.	राष्ट्रीय महामंत्री	स्नेहलता जी कोठारी (कोलकाता)
3.	राष्ट्रीय कोषाध्यक्षा	चंदा जी खुरदिया (मुंबई)
4.	निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्षा	नंदा जी कर्नावट (बेंगलुरु)
	मेवाड़ अंचल	
5.	उपाध्यक्ष	किरण जी मालू (प्रतापगढ़)
6.	मंत्री	ज्योति जी भूरा (भीलवाड़ा)
	बीकानेर-मारवाड़ अंचल	
7.	उपाध्यक्ष	राजश्री जी सुराणा (नोखा)
8.	मंत्री	शालु जी भंडारी (जोधपुर)
	जयपुर-ब्यावर अंचल	
9.	उपाध्यक्ष	ललिता जी चौरड़िया (ब्यावर)
10.	मंत्री	मेघना जी तातेड़ (जयपुर)
	मध्यप्रदेश अंचल	
11.	उपाध्यक्ष	मधु जी गोटा (रतलाम)
12.	मंत्री	दीपा जी रांका (मंदसौर)
	छत्तीसगढ़-उड़ीसा अंचल	
13.	उपाध्यक्ष	मोनाली जी ओस्तवाल (दुर्ग)
14.	मंत्री	ममता जी नाहटा (बालोद)
	कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल	
15.	उपाध्यक्ष	रेखा जी सोनावत (हैदराबाद)
16.	मंत्री	प्रभा जी भंसाली (बेंगलुरु)
	तमिलनाडु अंचल	
17.	उपाध्यक्ष	संगीता जी मालू (चेन्नई)
18.	मंत्री	रीना जी कुकड़ा (चेन्नई)
	मुंबई-गुजरात अंचल	
19.	उपाध्यक्ष	नीलम जी रांका (मुंबई)
20.	मंत्री	दिपाली जी ललवाणी (सूरत)
	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश अंचल	
21.	उपाध्यक्ष	छाया जी जैन (धुलिया)
22.	मंत्री	रश्मि जी जेलमी (औरंगाबाद)
	बंगाल-बिहार-भूटान अंचल	
23.	उपाध्यक्ष	विजयलक्ष्मी जी डागा (कोलकाता)
24.	मंत्री	विनीता जी मुकीम (बेहरामपुर)
	पूर्वोत्तर अंचल	
25.	उपाध्यक्ष	कनक जी डागा (सिलापथार)
26.	मंत्री	नीतू जी सांखला (गुवाहाटी)

क्र.	पद	नाम व स्थान
दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तर प्रदेश अंचल		
27.	उपाध्यक्ष	सोनल जी लुनिया (दिल्ली)
28.	मंत्री	खुशबू जी सेठिया (लुधियाना)
प्रवृत्ति संयोजिका		
1.	केसरिया कार्यशाला	रश्मि जी सुराणा (अहमदाबाद)
2.	संगठन	मीना जी मेहता (बड़ीसादड़ी)
3.	सर्वधर्मी सहयोग	मोनालिसा जी डागा (रायपुर)
4.	युवती शक्ति	अश्विनी जी बैद (नागपुर)
5.	साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम	तनु जी सिंघवी (धुलिया)
6.	परिवारांजलि	स्वाति जी धम्माणी (रतलाम)
7.	समता छात्रवृत्ति	ऊषा जी रांका (मुंबई)
अन्य		
8.	रिपोर्टिंग सिस्टम नेतृत्वकर्ता	नीता जी छिपानी (रतलाम)
9.	श्रमणोपासक नेतृत्वकर्ता (महिला समिति रिपोर्ट)	सीमा जी हीरावत (दिल्ली)
10.	अंतरराष्ट्रीय नेतृत्वकर्ता	सुनीता जी जैन (इंदौर)
11.	प्रतिक्रमण नेतृत्वकर्ता	वंदना जी धारीवाल (रायपुर)

नीमच। श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति के 56वें राष्ट्रीय अधिवेशन पर प्रदत्त पुरस्कारों का विवरण 15-16 नवम्बर 2023 अंक में प्रकाशित कर दिया गया है। उसी क्रम में निम्नलिखित पुरस्कार भी प्रदान किए गए थे-

स्थानीय संयोजिका (युवती शक्ति)

मोनिका जी भंडारी, सूरत

सरिता जी ओस्तवाल, ब्यावर

अंचल संयोजिका
(वुमन्स मोटिवेशनल फोरम)

नीलू जी सेठिया, बीकानेर

दर्शना जी चौरड़िया, चेन्नई

वीणा जी दक, कानोड़

पूजा जी सुखानी, दिल्ली

स्थानीय संयोजिका
(वुमन्स मोटिवेशनल फोरम)

ऋचा जी ओसवाल, राजनांदगाँव

मेघना जी तातेड़, जयपुर

दीपा जी रांका, मंदसौर

नेहा जी बोथरा, अक्कलकुआँ

पूजा जी सहलोत, निम्बाहेड़ा

स्पेशल सपोर्ट
(वुमन्स मोटिवेशनल फोरम)

कीर्ति जी सांखला, रायपुर

श्रेष्ठ श्रमणोपासक आंचलिक रिपोर्टर

अंजना जी कटारिया
(कर्नाटक-आंध्रप्रदेश अंचल)

ज्योति जी नलवाया (मेवाड़ अंचल)

दीप्ति जी ढड्ढा (पूर्वोत्तर अंचल)

श्रमणोपासक

रक्तदानम् व आयंबिल दिवस का सफल आयोजन

29 अक्टूबर 2023। समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. के 24वें पुण्यस्मृति दिवस एवं परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में महत्तम महोत्सव के अंतर्गत सभी स्थानीय संघों से रक्तदान शिविर आयोजित करने का भी आह्वान किया गया, जिसमें 9300 युनिट से अधिक रक्तदान कर गुरुभक्तों ने कीर्तिमान स्थापित किया।

31 अक्टूबर 2023। समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा. के 24वें पुण्यस्मृति दिवस एवं परमागम रहस्यज्ञाता आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष्य में 5000 आयंबिल तप करने का लक्ष्य रखते हुए श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन समता युवा संघ द्वारा देशभर इस हेतु आह्वान किया गया। इस आह्वान सार्थक करते हुए 230 स्थानीय संघों में 6000 से अधिक आयंबिल तप सम्पन्न हुए। गुरुचरणों में समर्पित इस तपाराधना में वृहद् संघ में प्रथम 5 संघों की सूची में रतलाम-625 आयंबिल, सवाई माधोपुर-290 आयंबिल, सूरत-266 आयंबिल, उदयपुर-242 आयंबिल एवं नीमच-207 आयंबिल एवं लघु संघ में मंगलवाड़ चौराहा-117 आयंबिल, पाली-90 आयंबिल, कपासन-74 आयंबिल, अकोला-65 आयंबिल, भदेसर-60 आयंबिल, नागदा जंक्शन-56 आयंबिल, वैजापुर-50 आयंबिल, चिखली-36 आयंबिल का अभूतपूर्व योगदान रहा।

क्र.	अंचल का नाम	क्षेत्र	रक्तदान (युनिट)	क्षेत्र	आयंबिल
1.	मेवाड़	9	811	50	1292
2.	बीकानेर-मारवाड़	7	915	18	534
3.	जयपुर-ब्यावर	3	642	13	525
4.	मध्य प्रदेश	11	867	32	1371
5.	छत्तीसगढ़-उड़ीसा	13	763	38	657
6.	कर्नाटक-आंध्रप्रदेश	5	668	8	194
7.	तमिलनाडु	2	306	7	31
8.	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	9	2547	11	692
9.	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	13	608	27	425
10.	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक उड़ीसा	4	688	11	161
11.	पूर्वोत्तर	6	273	11	90
12.	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तर प्रदेश	3	290	4	48
	कुल	**85**	**9378**	**230**	**6020**

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (अक्टूबर माह)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	01–10	8–10	15–10	22–10	29–10
1.	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1346	1517	1350	1289	1448
		आंचलिक क्षेत्र	94	95	94	92	93
2.	बीकानेर–मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	626	709	653	665	692
		आंचलिक क्षेत्र	44	44	46	46	45
3.	जयपुर–ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	281	244	221	287	197
		आंचलिक क्षेत्र	20	21	20	18	21
4.	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	1151	1251	1196	1042	1139
		आंचलिक क्षेत्र	76	74	73	70	73
5.	छत्तीसगढ़–उड़ीसा	आंचलिक उपस्थिति	1820	2042	1980	2078	1868
		आंचलिक क्षेत्र	156	150	149	155	148
6.	कर्नाटक–आंध्रप्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	407	497	336	369	339
		आंचलिक क्षेत्र	29	27	28	29	29
7.	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	220	249	201	223	201
		आंचलिक क्षेत्र	13	14	14	14	13
8.	मुंबई–गुजरात–यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	517	578	404	409	416
		आंचलिक क्षेत्र	27	30	27	27	30
9.	महाराष्ट्र–विदर्भ–खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	469	441	409	422	468
		आंचलिक क्षेत्र	45	49	43	50	55
10.	बंगाल–बिहार–नेपाल–भूटान–	आंचलिक उपस्थिति	264	327	263	285	268
	झारखंड–आंशिक उड़ीसा	आंचलिक क्षेत्र	32	32	29	31	28
11.	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	253	265	183	182	169
		आंचलिक क्षेत्र	26	25	24	23	21
12.	दिल्ली–पंजाब–हरियाणा–उत्तर प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	80	71	73	70	93
		आंचलिक क्षेत्र	6	5	5	5	6
13.	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	14	11	13	45	7
		आंचलिक क्षेत्र	6	6	6	6	4
	संयुक्त रिपोर्ट						
	कुल उपस्थिति		7448	8202	7282	7366	7305
	कुल क्षेत्र		574	572	558	566	566

समता शाखा में सर्वाधिक उपस्थिति दर्ज करवाने वाले संघों की सूची (मासिक)

क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति	क्रमांक	संघ का नाम	उपस्थिति
1.	नीमच	1950	6.	सूरत	620
2.	राजनांदगाँव	1090	7.	नोखामंडी	541
3.	दुर्ग	790	8.	मैसूर (उत्क्रांति ग्राम)	506
4.	रायपुर	764	9.	गीदम	505
5.	उदयपुर	703	10.	बेंगलुरु	484

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

महत्तम महोत्सव

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महा - महोत्सव

अंतर्गत श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

"महत्तम महोत्सव" प्रारंभ दिवस

दिनांक १३ जुलाई २०२२

आषाढ सुदी १५, वि.सं.२०७९

चातुर्मासिक स्थापना दिवस

"महत्तम महोत्सव" पूर्णता दिवस

फरवरी २०२५

माघ सुदी १२, वि.सं.२०८१

आचार्य श्री रामेश सुवर्ण दीक्षा महामहोत्सव 'महत्तम महोत्सव' का आगाज 17 माह पूर्व जुलाई 2022 में हुआ था, जिसके अंतर्गत उपर्युक्त उल्लेखित 9 बिंदुओं की साधना से जीवन धन्य बनाकर गुरुचरणों में श्रद्धा-भावना अर्पित करने का लक्ष्य रखा गया था। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अब मात्र 15 माह ही शेष रहे हैं। अब भी अपने सकारात्मक कदम इस ओर बढ़ाएँ और ज्ञानवान व क्रियावान बनें।

रचनाएँ आमंत्रित

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के धार्मिक अंक विभिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। आगामी धार्मिक अंक **'विहार विवेक'** पर आधारित रहेगा।

सम्माननीय पाठकगण अपनी रचनाएँ शीघ्रातिशीघ्र भिजवाने का लक्ष्य रखें। यदि आपके पास श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। प्राप्त मौलिक एवं सारगर्भित रचनाओं को समाहित करने का लक्ष्य रहेगा। विषय सन्दर्भित आपकी रचनाएँ- लेख, कविता, भजन, कहानी आदि **मो.: 9314055390, email : news@sadhumargi.com** पर हिन्दी व अंग्रेजी में सादर आमंत्रित हैं। उल्लेखित विषयों के अलावा भी आपकी सारगर्भित रचनाएँ भी आमंत्रित हैं।

– श्रमणोपासक टीम

आपके संस्मरण बने अन्यों के लिए मार्गदर्शक

विगत समय में श्रमणोपासक में विभिन्न नवाचारों को स्थान प्रदान किया गया है ताकि सुधी पाठकों को अलग-अलग विधाओं की विशिष्ट सामग्री उपलब्ध हो सके। इसी कड़ी में एक और नवाचार करते हुए 'संस्मरण' स्तंभ प्रारंभ किया जाना प्रस्तावित है। आप सभी गुरुभक्तों से निवेदन है कि परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के प्रवचन, ज्ञानचर्चा, जिज्ञासा-समाधान, विहार, स्वाध्याय एवं साधना आदि अनेकानेक प्रसंगों से संबंधित यदि आपके कोई संस्मरण हों, जिसने आपके अंतर्मन को प्रभावित किया हो या आप में कोई सकारात्मक परिवर्तन आया हो तो ऐसे संस्मरण शुद्ध एवं स्वच्छ अक्षरों में अंकित कर आपके नाम, पते, मोबाइल नं. एवं M.I.D. सहित हमें वॉट्सएप 9314055390, email : news@sadhumargi.com पर भिजवाने का कष्ट करें। हमारा लक्ष्य रहेगा कि आपकी रचना को इस स्तंभ के अन्तर्गत श्रमणोपासक में प्रकाशित किया जा सके।

–सह-सम्पादिका

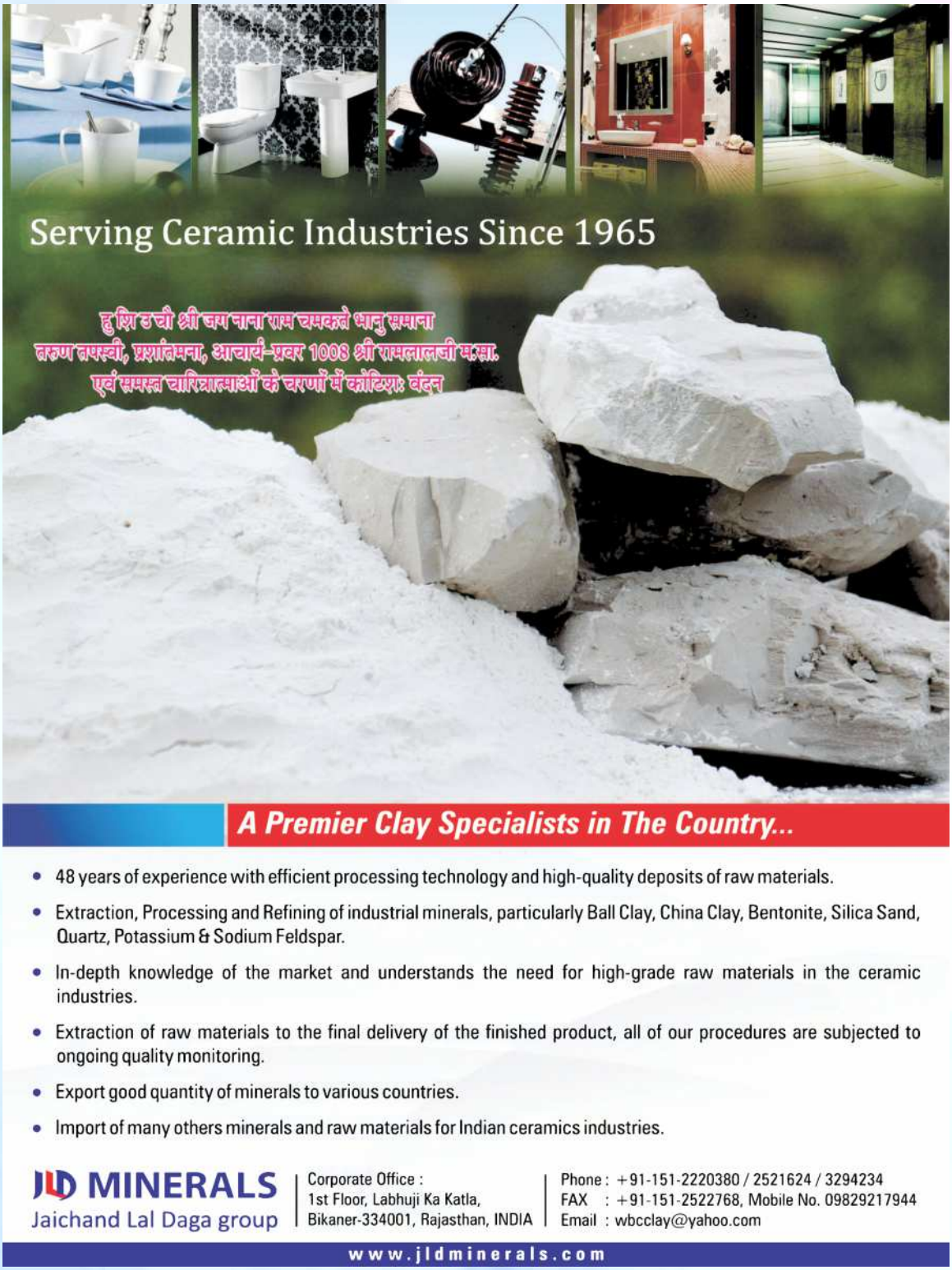
Serving Ceramic Industries Since 1965
हु शि ड चौ श्री जग नाना राम चमकते भानु समाना
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, आचार्य-प्रवर 1008 श्री रामलालजी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिशः वंदन
A Premier Clay Specialists in The Country...
• 48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
• Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
• In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
• Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
• Export good quantity of minerals to various countries.
• Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.
JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group
Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA
Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com
www.jldminerals.com

SIPANI
RITZY. POETIC. URBANE

सामाजिक जिम्मेदारी 'सिपानी' की पहचान

बेंगलोर जैसी महानगरी में वरिष्ठ नागरिकों एवं लाचार व्यक्तियों को सिपानी सदन में नि:शुल्क भोजन, वस्त्र एवं चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवायी जा रही है। यह सौभाग्य है कि 10 वर्ष पूर्व शुरू की गई इस सेवा योजना का लाभ 100 व्यक्तियों से प्रारम्भ होकर आज 10 वर्षों की पूर्णता तक यह संख्या बढ़कर 400 हो गई है।

इस सेवा कार्य में इन नागरिकों को पूर्णत: सज्जित एम्बुलेंस, डॉक्टर एवं नर्सिंग देखभाल की सुविधा चौबीसों घण्टे उपलब्ध करवायी जा रही है।

सेवा के नये आयाम प्रस्तुत करते हुए सिपानी फाउंडेशन ने वहाँ पर 60 कर्मचारियों की नियुक्ति भी की है जो इन सब सुविधाओं के आधार स्तम्भ हैं।

आर के सिपानी फाउंडेशन

439 18वाँ मेइन, 6वाँ ब्लॉक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560 095

संपर्क सूत्र : संतोष 9964105057, 9243667700, सिपानी कार्यालय । ई–मेल : sipanigrand@gmail.com

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.) फोन : 0151-2270261

helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष	(केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No. : 31264126681

IFSC Code : SBIN0003401

Branch : G.S. ROAD, Bikaner

Mob. : 7073311108

E-mail : **accounts@sadhumargi.com**

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

श्रमणोपासक	: 9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	: 8955682153	
साहित्य	: 8209090748	: sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	: 7231033008	: ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	: 7073238777	: yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	: 7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धान्त	: 7976519363	
परिवारांजलि	: 7231033008	: anjali@sadhumargi.com
विहार	: 8505053113	: vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	: 9982990507	: Pathshala@sadhumargi.com
शिविर	: 7231833008	: udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	: 6265311663	: globalcard@sadhumargi.com

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए सम्बंधित विभाग से ही सम्पर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय – प्रात: 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच – दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्री संघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केन्द्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना जरूर देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी। मो.न. 7073311108 पर व्हाट्सएप करें।

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 25100

प्रेषक :श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर - 334401 (राज.), फोन नं. 0151-2270261

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh